



१. पंचामृत	प्रिय स्वजन ०२
२. अवसर आंगणियाे	आनंदमय जीवन ०३-०४
३. अहेवाल	(1) श्री नवरात्रि आराधना नवपद साधना with श्री सिद्धचक्र जाप पूजन अनुष्ठान ०५-०६
	(2) महावीर जन्म कल्याणक उत्सव 2016 ०६
	(3) महावीर जन्म कल्याणक उत्सव 2016 १०-११
	(4) सम्यक् अग्नि महोत्सव - होली 2016 ११
	(5) सम्यक् अग्नि महोत्सव - होली 2016 १२
	(6) आनंदमय जीवन के विकास की अद्भूत शिबीर १२-१४
	(7) आनंदमय जीवन के विकास की अद्भूत शिबीर १४-१६
४. अनुभवनुं अतर	(1) श्री नवरात्रि आराधना - श्री नवपद (ज्ञान) साधना श्री सिद्धचक्र यंत्र पूजन अनुष्ठान (शहापुर-मानस मंदिर, आसो नवरात्रि - चैत्र नवरात्रि) १७-२०
	(2) आनंदमय जीवन के विकास की अद्भूत शिबीर २१
५. आगामी कार्यक्रमो की रुपरेखा	 २२-२३
६. प्रभुवाणी	International Conference of Science and Jain Philosophy २४-२७
७. जिज्ञासा तमारी - जवाण प्रभुना सत्संगीओना प्रश्नोना जवाणो	 २८-२९
८. आहार-विहार	दासम (Pomegranate) ३०-३१
९. सत्संग	स्त्री और पुरुष - एक दूसरे के पूरक ३२
सत्संग	स्त्री अने पुरुष - अेकजीवना पुरक ३३
१०. बालजगत	 ३४
१२. ANNUAL ACTIVITY LIST	 ३५-३६

: आगामी कार्यक्रमो की रुपरेखा :

- 1) अरिहंत टी.वी. चैनल (हररोज सुबह 8.30 और रात को 11.30 बजे) —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 22
- 2) Married Couple Shibir - Dt. 28 & 29 May, 2016 —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 22
- 3) एक दिवसीय श्री सिद्धचक्र यंत्र पूजन अनुष्ठान के साथ श्री नवरात्री आराधना,
श्री नवपद ज्ञान साधना (शहापुर - मानस मंदिर) Dt. 12 June, 2016 —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 22
- 4) नमस्कार महामंत्र योग - SCIENCE OF DIVINE LIVING
(आनंदमय जीवन के विकास की अद्भूत शिबीर) —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 22
- 5) गुरु पूर्णिमा - सद्गुरु के प्रति अहोभाव की अभिव्यक्ति
Dt. 16 July, 2016, Tuesday —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 22
- 6) 15 August, 2016, Monday - स्वतंत्रता दिन
(स्व को स्वतंत्र बनाने का प्रारंभ दिन) —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 23
- 7) जन्माष्टमी - Dt. 25 August, 2016, Thursday —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 23
- 8) DIVINE SCIENTIFIC PRACTICAL सम्यक् पर्युषण अनुभवधारा
(Dt. 29 August, Monday to 6 September, Tuesday) —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 23
- 9) परम सुख HELPLINE 24 x 7 No. 09920202756 —————> विशेष माहिती माटे जुओ पानुं नं. 23



प्रिय स्वजन,

मैं समय का प्रवासी हूँ। मानव स्टेशन पर आया हूँ। अरिहंत परमात्मा और सिद्ध परमात्मा की कृपा से आया हूँ। हर क्षण क्षण के माध्यम से प्रवास करता हूँ लेकिन पत्ता नहीं चलता हर क्षण आके निकल जाती है। मैं आज समय का प्रवासी हूँ। मुझे किसीके बिना नहीं चलेगा। अफडातफडी, मारामारी, अभिप्रायो की लड़ाई... इसीमें हर क्षण जलके खाक हो जाते है। उस जलन मे से बाहर नीकलने का एक ही ध्यान है।

“मैं समय का प्रवासी हूँ।”

जिसे यह याद रहता है वह कभी भी परेशान नहीं होता। मानव भव का इतना बड़ा Seat No. मिला है लेकिन यह याद नहीं है।

इस अज्ञान के कारण हम भटक जाते है। परम लक्ष्य.... मुक्ति पद का लक्ष्य भूल जाते है। अज्ञान के कारण नकारात्मकता आती है और हमे खत्म कर देती है। ऐसी परिस्थिती में से बाहर नीकलने के लिए आज के इस पंचमकाल में जो कोई योग हो तो श्री सिद्धचक्र महायंत्र पूजन अनुष्ठान श्रेष्ठ मार्ग है। जहाँ सिद्धपद प्राप्त करना ध्येय है और यह सिद्धि का चक्र हमारे अंतःस्तर में गतिमान करना हमारे हाथ में है। वह गतिमान होगा ही, वह करना न करना हमारी स्वतंत्रता है। लेकिन वह गतिमान करने में लग जाना यह हमारा मक्सद है। तन, मन, धन से भाव से यंत्र के साथ जुड़ना है।

ऐसे सिद्धचक्र यंत्र जो हमारा भवभ्रमण का साथीदार है। जो हमे मुक्ति की ओर ले जायेगा उस के साथ हमारे भाव को जोडने के लिए अवसर आ रहा है। जून महिने में ‘परम सुख जीवन विकास केन्द्र’ द्वारा आयोजित प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई के सानिध्य में एक दिन का शाहपुर में भुवनभानु मानस मंदिर के प्रांगण में “श्री सिद्धचक्र महायंत्र जाप पूजन अनुष्ठान” का अवसर। दुसरा अवसर है जुलाई माह से “नमस्कार महामंत्र योग शिबीर Science of Divine Living आनंदमय जीवन के विकास की शिबीर” अवश्य जुड़ जाना। श्री सिद्धचक्र महायंत्र अपने दिल में और घर में स्थापित करके अपने जीवन को आनंदमय और दिव्य बनाइये।

शाहपुर : दि. 12 June 2016

आपका प्रिय मित्र
नमो जिणाणं



नम्र निवेदन

‘नमो जिणाणं’ बेगोळीनना आ अंकथी लवाजम लेवागं आवशे. जे शिबिरार्थी / सत्संगी भाई-जुहेनोने आ बेगोळीन रेग्युलर भणे अेवी घरखा होय तो आग्रुवन सदस्यना रु. ६००/- साथे आपना सेन्टर संचालकने तमाहुं नाम, सरनामुं तथा फोन नंबर लभी आपवा विनंती. (Subscription Form to be filled & send with Amount).

98698 62373, 98690 52507, 98331 33266, 98202 12816

परम सुख HELPLINE 24 x 7

09920202756

जीवन की किसी भी समस्या के उपाय के लिए उपर बताए हुअे नंबर पर संपर्क करें। यह सेवा २४ घंटे और सातो दिन उपलब्ध है।

नमो जिणाणं

The Science of Divine Living

(त्रिमासीक -पत्रिका)

अंक : ३२, वर्ष : २०१६

ता. : १०, जून-२०१६

मुल्य : ३०.०० रुपिया

मुद्रक :

गोगरी ओइसेट प्रिंटरस

मालिक अने प्रकाशक :

परम सुख जुवन विकास केन्द्र (मुंभई)



E : namojinanam@gmail.com
Website : www.namojinanam.org

शुभेच्छक :

भेगा थवुं सरण छे परंतु भेगा रडेवुं सरण नथी.



आनंदमय जीवन

समय के प्रवास में अरिहंत परमात्मा की कृपा और सिद्ध भगवंत की कृपा से हम मानव स्टेशन पर करोड़ों सालों की महेनत से बड़ी मुश्किल से आएँ हैं। दुर्लभ ऐसा मानव जन्म मिला है पर यहाँ आकर लड़ाई, झगड़े, अफडातफडी, मारामारी में ही इतने मशगुल हो गएँ कि हमारे अस्तित्व के लक्ष्य को ही भूल गये।

जो जान सकता है, समझ सकता है, अनुभव कर सकता है... ऐसा जो तत्व है उसका नाम है 'आत्मा'। उसका स्वतंत्र अस्तित्व है। देखना, जानना, अनुभव करना यह हमारा मूलभूत गुण है। हमारे अस्तित्व के उपर ऐसा कोई दबाव नहीं है कि ऐसा ही देखना, ऐसा ही जानना, ऐसा ही अनुभव करना। लेकिन हम क्या करते हैं? यह देखा, वह देखा, यह जाना, वह जाना, यह अनुभव किया... लेकिन यह क्यों देखना है? क्यों जानना है? क्यों अनुभव करना है?... उसका कोई उत्तर नहीं है। अब तक कितना कुछ देखा, जाना, अनुभव किया किंतु उसका उपयोग क्या?

ऐसी कितनी असंख्य जानकारी जमा करते करते हमारा स्वभाव बन जाता है और फिर यहाँ से शुरू होती है "हेरानगति"।

मनुष्य हेरान होता है अपने अंदर रही हुई पूर्व जानकारी के संग्रह से। उसीसे वह देखता है, जानता है, समझता है और अनुभव करता है। जो उसने बाहर के जगत से प्राप्त किया है। लेकिन उस जानकारी के बारे में खुद का अनुभव कुछ नहीं है या फिर एकदम थोड़ा है। ऐसे ही जाने अनजाने में वह हेरानगति के चक्र में फँसता चला जाता है। परेशान हो जाता है।

जीव मात्र की ईच्छा होती है कि "मुझे नहीं होना परेशान"। जीव मात्र को हेरान न हो ऐसी परिस्थिती चाहिए। पर हम यही भूल गए हैं। किसी भी जानकारी और अनुभव के चक्र का अंत एक ही है कि "मुझे नहीं होना परेशान"। हमारे अस्तित्व के एक एक क्रिया में है "मुझे नहीं होना परेशान"। यही हमारी खोज है। यही हमारा ध्येय है। यही लक्ष्य है। यही सत्य है और यह हमारे हाथ में है।

हमारे अंदर तीन चीज है। सत्त, चित्त, आनंद। सत्त यांने "मैं" हूँ।

चित्त यांने देखना, जानना और अनुभव करना। आनंद यांने प्राण की ऐसी अवस्था जहाँ अब कोई भी अपेक्षा नहीं है। यही हमारा मूलभूत स्वभाव है।

मैं ढूँढ़ता हूँ आनंद लेकिन वह छिप गया है। प्रगट नहीं है। इसलिए हम परेशान है। आनंद की यह खोज जीवन के पूर्ण अस्तित्व में हर पल अविरत अज्ञान रूप से चालू ही है।

नवकार मंत्र के अंदर साधु पद से सिद्धपद तक की "मुझे नहीं होना परेशान" की अलग अलग अवस्थाएँ है। "साधु" यांने आनंद पाने के लिए लिया गया जीवन का पहला step. और सिद्ध यांने परम आनंद की अवस्था जहाँ अब ओर कुछ नहीं है सिर्फ शाश्वत आनंद... आनंद... आनंद ही है।

अरिहंत और हम देह स्वरूप मनुष्य है किंतु अरिहंतने सीख लिया... जान लिया... आनंदमय बनने का और हम सीख रहे हैं परेशान होने का। साधु का मार्ग है "श्रमण मार्ग"। "मुझे नहीं होना परेशान" इसके लिए चोबिसो घंटे सतत श्रम करता है। महेनत करता है। जागृत रहता है। उसका नाम है 'साधु'। जैसे जैसे जागृतता बढ़ती जाती है वैसे वैसे उसकी अवस्था उपर की ओर बढ़ती जाती है। महेनत श्रमण अवस्था में है।

महेनत के फल स्वरूप जो उपलब्धि मिली है वह है "उपाध्याय"। उसमें जो आगे बढ़कर आनंद को प्राप्त करते हैं वह है "आचार्य"। और फिर जिसकी पूर्ण अवस्था आनंदमय बनी वह है "अरिहंत" और जहाँ पूर्ण आनंद ही आनंद है वह है "सिद्ध"। साधु से शुरू होकर सिद्ध में परिणमन हुआ वह आनंद की उच्चतर... उच्चतम अवस्थाएँ है। हमे यह आनंद की अवस्थाएँ प्राप्त करनी है। इसके लिए हमे शरण लेना है। हमारा शरण है "नमो"। इस एक शब्द में रहस्य है पूरे नवकार मंत्र का। नवकार मंत्र में सबसे पहला शब्द है "नमो"। हमें जिसका शरण लेना है तो उस जैसा बने कैसे? उसके चार steps है। नमन, शरण, समर्पण, आत्मसमर्पण। नमन यांने गुण को नमन करना। गुण का स्विकार करना। गुण का आदर करना। सामनेवाली व्यक्ति में विशेष गुण का दर्शन करके 'अहोभाव' प्रगट करना। शरण यांने जो गुण है वह जानके उसके शरण में जाना। जैसे ही गुण का स्विकार किया यांनी शरण भाव। गुण का स्विकार



करके उसका अमल करना... समर्पण और इस समर्पणभाव मे से १००% “मैं” निकल जाएँ तभी आत्मसमर्पण होता है। बिना शरत का स्विकार भाव ध्येय प्राप्ति में बल देता है। यह ध्येय प्राप्ति का साधन है “नवकार मंत्र”।

नवकार मंत्र की आराधना साधना के लिए दो हस्ति है.... श्री सिद्धचक्र महायंत्र और जीवित तीर्थकर श्री सीमंधर स्वामी।

श्री सिद्धचक्र महायंत्र एक ऐसा यंत्र है जो हमारे भवभ्रमण का साथीदार है। हमें भवभ्रमण के चक्र में से मुक्ति दिलानेवाला हमारा साथीदार है। यह हमे सतत जागृत रखता है। हमारे अज्ञान, भय, चिंता को हटाकर हमें मुक्ति पद की ओर आगे बढ़ाता है। श्री सिद्धचक्र यंत्र के अंदर रही हुई देवीयाँ की आराधना हमारे अंदर से नकारात्मकता को हटाकर हमे शुद्ध बनाता है। हमारे श्री और यश गज गज आनंदवाले बनते है। हमारी सत्ता संपत्ति, साधन, सामग्री सात्विक बनाती है। इसके अंदर रहे हुए मंडलाकार परमाणु हमारी कर्मसत्ता को ललकारके हमे मुक्त कराते है।

ज्ञानपद से लेकर सिद्धपद की यात्रा, "Nine Steps Towards Freedom" मुक्तियात्रा है। केवल आनंद... आनंद... आनंद... ! ऐसे श्री सिद्धचक्र महायंत्र की आराधना साधना हमे अवश्य मुक्तिपद की ओर ले जाती है। इसे हमारे घर में और जीवन में स्थापित करने से हमारा और हमारे परिवार का जीवन आनंदमय... मंगलमय बन जाएँगा। हररोज यह श्री सिद्धचक्र महायंत्र के सामने बैठकर जाप करना, आरती उतारना और मंगल दिपक करना... यांनी हमारे अंदर “श्री सिद्धचक्र” का वास करना है। हमारे पूरे घर का वातावरण मंगलमय बन जाएँगा। ऐसे श्री सिद्धचक्र महायंत्र की हाजरी हमारे जीवन में आवश्यक है।

जीवित तीर्थकर परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी ऐसी हस्ति है जिनके शरण में रहके हमे मुक्ति पानी है।

अरिहंत परमात्मा की कृपा जब भी मांगो तब मिलती है। वे तत्पर है देने के लिये। हमे माँगना आना चाहिए। आज भी हम जब उनके शरण में बैठकर उनकी कृपा मांगते है तब अवश्य कृपा मिलती है। श्री सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में बिराजमान है और हम भरतक्षेत्र में है। फिर भी जब हम उनकी कृपा मांगते है तो हमे अवश्य मिलती है। हमे अरिहंत बनना है तो हमे

उन जैसा बनना होगा। इसीलिए उनके गुणो का दिव्य श्वेत प्रकाश हमे ग्रहण करना है। ताकि उनके गुण हमारे अंदर आए। अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी के गुणो का दिव्य तेज श्वेत प्रकाश हमे हररोज अनुष्ठान पूर्वक ग्रहण करना है। दिव्य श्वेत प्रकाश हमारी अशुद्धि हटाकर हमे संपूर्ण शुद्ध बनाता है। हमारे शरीर को, मन को... शुद्ध बनाता है। हररोज सुबह प्रभु का शरण लेकर अनुष्ठान पूर्वक श्वेत प्रकाश की प्रक्रिया करने से पूरा दिन मंगलमय हो जाता है। हम अरिहंत परमात्मा के साथ जुड़ने लगते है। अरिहंत की ओर एक कदम आगे बढ़ता है ऐसे जीवित तीर्थकर परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी के साथ Connection करने का अवसर यांने नमस्कार महामंत्र में Enter होना।

नवकार मंत्र की आराधना साधना करने का अवसर यांने श्री सिद्धचक्र महायंत्र पूजन अनुष्ठान।

हम जो खोज रहे है “आनंद” और जो हमारा परम लक्ष्य है “मुझे नहीं होना परेशान” उसे पाने के सुवर्ण अवसर आ रहे है। “परम सुख जीवन विकास केन्द्र” ने ‘श्री सिद्धचक्र महायंत्र जाप पूजन अनुष्ठान’ परम पूज्य पंकजभाई के सांनिध्य में शाहपुर – मानस मंदिर तीर्थ में आयोजन किया है

दि. 12 जून 2016

सभी साधको जिनके पास श्री सिद्धचक्र यंत्र है और जिनके पास नहीं है उन्हे प्रेरणा है महायंत्र को अपने घरमें स्थापित करने के लिए... सभी को सादर आमंत्रण है।

आओ... पधारो... और अपना जीवन मंगलमय बनाओ। जुलाई माह से आनंदमय जीवन के विकास की शिबीर मुंबई में चार Center में शुरू हो रही है। सभी को इस शिबीर में जुड़ने के लिए आमंत्रण है।

शाहपुर मानसमंदिर
दि. 12 जून 2016



श्री नवरात्रि आराधना नवपद साधना with श्री सिद्धचक्र जाप पूजन अनुष्ठान

“आओ साधक तुम्हे दिखाये झाँकी नवपद साधना की,
सिद्धचक्र यंत्र पूजन करो, सिद्धचक्र यंत्र है परम मुक्ति का,
वंदे सिद्धाणं.... वंदे सिद्धाणं....”

हमारे मूल अस्तित्व के आसपास घनघोर काले अज्ञान के बादल छाएँ हुए हैं। कर्म के बादल (आवरण) इतने गहरे हैं कि हम बाहर जा नहीं सकते हैं। इसीके कारण हम भवभ्रमण के चक्रव्यूह में फसते जाते हैं। इस भवभ्रमण के चक्रव्यूह में से बाहर निकलने का रास्ता क्या? साल में दो बार नवरात्रि आराधना साधना, पर्युषण, दिपावली, ज्ञान पांचम यह चार जबरदस्त पूर्व कर्म के घनघोर बादल तोड़ने के लिए है। तीन पर्व.... वर्षा की मौसम में जो Best मौसम है साधना के लिये.... वातावरण अनुकूल रहता है, उत्सव का माहोल रहता है... ऐसे पर्व में ये कर्म के घनघोर बादलो से मुक्त होने की तैयारी कर सकते हैं। असंग अवस्था... सिद्ध अवस्था की तैयारी...।

भवभ्रमण के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए “परम सुख जीवन विकास केन्द्र” द्वारा सिद्ध अवस्था प्राप्त करने की आराधना साधना का आयोजन किया गया था। जून मास में शाहपुर में एक दिन की आराधना साधना श्री सिद्धचक्र यंत्र जाप पूजन अनुष्ठान का आयोजन किया गया था। फिर आसो सुद एकम से आसो सुद पूनम पंदरह दिन श्री नवरात्रि आराधना नवपद साधना With श्री सिद्धचक्र महायंत्र जाप पूजन अनुष्ठान पंदरह दिन के लिये October - 2015 में पार्ला Center में आयोजित किया गया था। फिर उसके बाद चैत्र सुद एकम से चैत्र सुद पूनक तक घाटकोपर Center में राष्ट्रीय शाला के प्रांगण में पंदरह दिन का आयोजन श्री नवरात्रि आराधना नवपद साधना श्री सिद्धचक्र महायंत्र जाप पूजन अनुष्ठान किया गया था।

इस आराधना साधना में सभी साधक जिन्होंने श्री सिद्धचक्र महायंत्र को अपना कायमी साथीदार, मित्र बनाया है उसे यहाँ प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई के सान्निध्य में स्थापित किया और पंदरह दिन आराधना साधना करके अपने लक्ष्य की ओर एक कदम आगे बढ़ाया। हररोज ज्ञानपूर्वक आगे बढ़ना, अज्ञान को तोड़ना, नकारात्मकता को दूर करते करते श्री और यश, सता, संपत्ति, साधन, सामग्री को सात्विक बनाया... हररोज एक नया मंत्र का उच्चारण... वासक्षेप पूजन श्री सिद्धचक्र महायंत्र पर... अंत में आरती और मंगल दिपक, मुक्ति पद की ओर आगे बढ़ते गए।

मुक्तिपद की इस आनंदमय, उमंगमय यात्रा का पहला दिन दुर्गा आराधना का दिन है। पहले तीन दिन हमारे अंदर रहे हुए अज्ञान के परमाणु का विसर्जन करके कर्म सत्ता को Challenge करने के दिन है। हमारे अज्ञान को दूर करनेवाली शक्ति महाकाली आराधना के दिन है। नकारात्मकता पर विजय पाने के दिन है।

पहले दिन महाकाली का शरण लेकर अपने आपको स्थिर करके तय किया कि, मैं कौन हूँ? मेरा लक्ष्य क्या है? उस लक्ष्य के लिए मेरी अंदर मुझे शुद्धिकरण करना है और फिर लक्ष्य तय किया “मुझे नहीं होना परेशान”। यह निर्णय सिद्धचक्र महायंत्र के सामने प्रस्तुत करके महाकाली शक्ति स्वरूपा को activate किया। तत्पश्चात् मंत्र, तंत्र, यंत्र का शरण लेते हुए पाँच लक्ष सिद्धचक्र यंत्र के सामने Broadcast किये।

- (1) मुझे नहीं होना परेशान।
- (2) मैं भगवान जरूर बनूँगा।
- (3) मैं स्वतंत्र जरूर बनूँगा।
- (4) मैं परमात्मा जरूर बनूँगा।
- (5) मैं सिद्ध जरूर बनूँगा।

श्री सिद्धचक्र महायंत्र शक्तिपीठ का कार्य करता है। उसका Power हमें Charge करता है। पहले दिन “हमारे अंदर जो आसुरि शक्ति है उस पर विजय पाना है और सुरि शक्ति के साथ मुक्ति की ओर आगे बढ़ना है” यह भाव करते हुए श्री सिद्धचक्र महायंत्र पर वासक्षेप पूजन किया।

“ॐ ह्रीं श्रीं महाकाली दैव्याय नमः”

महाकाली मा, अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी और पंच परमेष्ठी का शरण लेते लेते हमारे अंदर रहे हुए कर्मसत्ता के कारण जो नकारात्मकता के परमाणु है उनको हटाया।

दुसरे दिन प.पू. गुरुदेवने प्रभुकृपा करके “नमो जिणाणं....जिय भयाणं” का जाप करके आराधना की शुरुआत की।

हम सब कर्म नियंत्रित है। चारो ओर से असाता है। उसके उपर विजय पाने का रास्ता ये आराधना साधना है.... यह बताते हुए प.पू. गुरुदेवने नवरात्रि आराधना का महत्व समझाया। नवरात्रि आराधना याने हमारे अंदर के अज्ञान और अज्ञान के कारणो को हटाके फेंक देने का पर्व है। मंत्र, तंत्र, यंत्र की ऐसी प्रक्रिया है जहाँ हमेंशा मुक्ति मिलती है।

शक्ति के माध्यम से ऐसी आराधना होगी कि उसका फल अगले छह महिने तक मिलता रहता है। रोष और दोष के कारण अटक जाते हैं। विचार, वाणी और वर्तन में परिवर्तन आता है।

अशुभ शक्ति, तमस शक्ति, रजस शक्ति, अकल्याणकारी शक्ति मे से मैं मुक्त बनू... इस भाव के साथ महाकाली माता का श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया।

“ॐ ऐं क्लीं दुर्गाय नमः”

तीसरा दिन प्रेम का दिन है। प.पू. गुरुदेवने “आप कैसे भी हो, I Love You...” की प्रेमधून द्वारा अज्ञान, क्रोध, धृणा, नफरत के परमाणु हटाकर प्रेम के परमाणु हमारे अंदर भरे। आसुरि शक्ति क्या है और हमे उस पर कैसे विजय पाना है? यह आज प.पू. गुरुदेवने समझाया। प.पू. गुरुदेवने कहाँ, अरिहंत की कृपा, शक्ति की कृपा, यंत्र की कृपा, मंत्र की



कृपा... साथ में हमारा पुरुषार्थ हमारे अंदर रही हुई नकारात्मकता पर घात करता है ।

महाकाली और दुर्गा मा का अज्ञान के उपर प्रहार करने का स्वरूप प.पू. गुरुदेवने बताया ।

“ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः”

दुर्गामाता का शरण लेते हुए हमारा जीवन अर्हत स्वरूपा, शक्ति स्वरूपा, मंत्र स्वरूपा, तंत्र स्वरूपा में तल्लीन बने और ऐसे सेवा, साधना, सत्संग, स्वाध्याय में लीन रहे ऐसी कृपा मांगते हुए श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया ।

चौथा दिन महालक्ष्मी आराधना.... प.पू. गुरुदेवने मंत्र जाप करवाएँ ।

“श्री गजानंद जय गजानंद जय जय गणेश मोर्या.....”

हमारे जीवन में श्री (संपत्ति) जो आवश्यक है वो कैसे गजगज आनंदवाला बने? उसकी आराधना आज की गई । हमारा जीवन अष्टांग योगवाला बने ऐसी कृपा मांगी । अर्हत कृपा, शक्ति कृपा, सिद्धचक्र यंत्र कृपा और मंत्र कृपा.... यह चार कृपा हमें सिद्ध बनने काम में आयेगी । हमारा जीवन सेवा, साधना, सत्संग और स्वाध्याय स्वरूपा बनाके भगवान के मार्ग पे चलते रहे । हर समय ऐसे श्री को प्राप्त करना है जो दूसरो के उपयोग में आये । संपत्ति, साधन, सामग्री, समृद्धि सुव्यवस्थित मार्ग से आये और गज गज आनंद का विकास हो... उसकी विशेष रूप से समझ मिली ।

मेरा श्री और यश मंगलकारी, शुद्धकारी, हितकारी, आनंददायक बने इस भाव के साथ महालक्ष्मी का आह्वान करके सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया ।

“ॐ श्रीं महालक्ष्मी दैव्याय नमः”

पाँचवा दिन.... “नमो जिणाणं....जिअ भयाणं” जाप के साथ शुरुआत ।

हमारी सत्ता, संपत्ति, साधन, सामग्री सात्विक बनाने का दिन है । अर्हत कृपा, शक्ति कृपा, मंत्र कृपा और यंत्र कृपा लेकर यह जाप किये ।

“ॐ ह्रीं श्रीं नमः”

हमारे जीवन के लिये सत्ता, संपत्ति आवश्यक है, उसे हमें सात्विक बनाना है । हमारे जीवन में जो भी संपत्ति आई है उसका शुद्धिकरण करना जरूरी है । इसकी हमें आलोचना करनी है । वह ऐसी आराधना साधना से होगा । जो सेवा ग्रहण करता है, समर्पण करता है वह अपने आप सात्विक बनने लगता है । सेवा-साधना के माध्यम से filter होके जीवन में शुद्ध बनना है । इसी में ध्यान लगाना है । साधना में स्थिर होना है । कर्म आकर्षण से बाहर निकलना है । उसके लिए यह साधना है ।

मेरी संपत्ति योग्य मार्ग से आये और जीवन उपयोगी बने । मेरे आनंद और स्वतंत्रता का विकास हो ऐसी शक्ति मेरे अंदर आये ऐसी कृपा लेकर मुक्ति की ओर आगे बढ़े इस मंत्र जाप पूजन करके....

“ॐ श्रीं महालक्ष्मी दैव्यायै नमः”

छठे दिन – हमारे जीवन को चलाने के लिये उपयुक्त शक्ति का आकर्षण करने के लिए...

शक्ति आराधना का दिन ।

सब मंत्रों का राजा,

“ॐ नमो भगवते श्री वासुदेवायः”

मंत्र जाप किये ।

शक्ति आराधना के यह छह दिन महत्व के दिन है । श्री सिद्धचक्र यंत्र के सामने बैठके शक्ति आराधना करनी है । साधना करनी है । मंत्र जाप करना है । ये सारे शक्तिमंत्र है । जब आते है तब कोई कर्मसत्ता हमें कुछ नहीं कर सकती । गृहस्थ के लिए यह छह दिन महत्व के है । अगर यह छह दिन की आराधना है तो आगे साधना संभव है ।

आज सभी सकारात्मकता का आह्वान किया गया ।

श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया गया ।

“ॐ नमो भगवते श्री वासुदेवायः”

सातवा दिन – नवपद ज्ञान साधना की शुरुआत । पंच परमेष्ठि की कृपा लेकर पू. गुरुदेवने आत्मरक्षा मंत्र करवाया ।

“मैत्री भावतुं पवित्र झरणु... मुज हैयामां वहा करे....” आज ज्ञान साधना के दिन मेरी अंदर मित्रता का भाव रहे और सबका मंगल हो ऐसी भावना की । मैं सदा संतो के चरण में रहूँ ऐसी कृपा ली । तत्पश्चात् ज्ञानपद अष्टक का गुंजारव करके प.पू. गुरुदेवने ज्ञान के बारे में विशेष समझ दी । सब दुःख का मूल अज्ञान है । उसके कारण क्या है यह समझना जरूरी है । उसको हटाने के लिये Scientific सम्यक् ज्ञान जरूरी है ।

सम्यक् ज्ञान का Filter मंत्र है “मुझे नहीं होना परेशान” । ज्ञानकृपा और प्रभुकृपा जिसके पास होती है उसे कोई डर नहीं होता । ज्ञान के माध्यम से हमारी दृष्टि तत्व स्वरूपी बन जाती है ।

ज्ञानशुद्धिकरण के दो मंत्र – “नमो जिणाणं....जिअ भयाणं”, “मुझे नहीं होना परेशान” जीवन में लाने है ।

मेरे अंदर सम्यक् ज्ञान प्रगट हो इस भाव के साथ श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया गया ।

“ॐ नमो नाणस्स...”

आठवा दिन... तप पद साधना

तप याने ज्ञान का विकास ।

सम्यक् तप याने क्या ? उसका वास्तविक स्वरूप क्या है ? जिसके जीवन में सम्यक् तप की आराधना रहती है उसका हर विघ्न टल जाते है... इस प्रकार का परिणाम देनेवाली प्रक्रिया क्या है ? उस पर प.पू. गुरुदेवने प्रभाव डालते हुए कहाँ, सम्यक् तप ऐसी प्रक्रिया है जिससे तत्काल शरीर को, मन को फायदा होता है । कर्म की निर्जरा होती है । जिससे हमारे जीवन के विघ्न कम होने शुरू हो जाते है ।



सम्यक् ज्ञान प्राप्त होने के बाद जो भी कार्य होता है, सम्यक् ज्ञान पूर्वक जो भी कार्य मन, वचन और काया से करते हैं उसीका नाम है **सम्यक् तप** ।

सम्यक् तप करना नहीं पड़ता, हो जाता है ।

“मुझे नहीं होना परेशान”, “नमो जिणाणं...जिअ भयाणं”, “आप जैसे भी हो, I Love You...” । इन तीनों में जागृत रहेंगे तो अपने आप तप हो जाएगा । बिना कारण आनंद प्रगट करना... यह तप है ।

Smile तप याने हमेशा प्रसन्न चित्त में रहना । Internal Smile and Exeternal Smile always smile. अरिहंत की प्रसन्नता कैसी है ? Always, smile... मेरे अंदर भी ऐसी प्रसन्नता प्रगट हो इस भाव के साथ श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया गया ।

“ॐ नमो तवस्स”

नौहवा दिन – दर्शन पद ।

आराधना साधना का महत्व का दिन है । जो हम आज करेंगे वो पाएँगे ।

आज सम्यक् दर्शन कैसे प्रगट होता है यह प.पू. गुरुदेवने बताया ।

सम्यक् ज्ञान आधारित जीवन बनाना इसे सम्यक् तप कहते हैं । इस सम्यक् तप को जीवन में धीरे धीरे लाते लाते जो प्रगट होता है वह है ‘सम्यक् दर्शन’ ।

सम्यक् ज्ञान और सम्यक् तप का परिणाम है सम्यक् दर्शन । सम्यक् तप हमारा शुद्धिकरण करता है । उस Level को पार करते हैं तब सम्यक् दर्शन प्रगट होता है । जिसके अंदर सम्यक् दर्शन प्रगट हो जाता है उसकी मुक्ति निश्चित है । सम्यक् दर्शन याने Divine Scientific Vision. सम्यक् दर्शन के लक्षण क्या हैं ?

लक्षण :-

- (1) **श्रद्धा** – अरिहंत परमात्मा के बताये हुए मार्ग पर और उनके वचनों पर, सद्गुरु पर, खुद के उपर अतूट श्रद्धा ।
- (2) **शम** – याने शमन करना, समाप्त करना । अज्ञान के उपर विजय पाना ।
- (3) **संवेग** – सम्यक् तप के द्वारा संवेग प्रगट करना है । कर्म के प्रभाव को उखाड़कर फेंक देना ।
- (4) **निर्वेद** – वेदना से मुक्त होगा । वेदना की तकलीफ से मुक्त होना ।
- (5) **दया** – याने अनुकंपा... हर जीव के लिए Love, Care and Share.

अनुकंपा नहीं है तो संवेग, शम, श्रद्धा कुछ नहीं है ।

श्रद्धा, शम, संवेग, निर्वेद, दया.... यह पाँच लक्षण हमारे अंदर develop करने के लिये पूज्य गुरुदेवने बताया । जो आवश्यक है ।

प्रभु आपके मार्ग में प्रशस्त रहके, संग में रहकर, सम्यक् दर्शन के पगथिये मेरे जीवन में आये यह भाव के साथ श्री सिद्धचक्र यंत्र पर

वासक्षेप पूजन किया ।

“ॐ नमो दंशणस्स”

दसवाँ दिन – चारित्र पद

सम्यक् चारित्र का गुणगान करके उसका चिंतन करना । चारित्र याने चित्त शुद्धि । आज हमारा Character Change कैसे करना है उसकी चाबी मिली । कर्म सत्ता को ललकारके पूरी श्रद्धा से आज यह भाव किया कि पूर्व संस्कार से जो मैं लेकर आया हूँ उसे Change करना है । मेरा Destiny Change करके मुझे मुक्ति पाना है । I will change my character. निस्पृह भाव से जीवन का आनंद मनाना.... यह है सम्यक् चारित्र । सम्यक् दर्शन का पहले लक्षण को लक्ष बनाना है – 'Love, Care & Share' को, तो अपने आप सम्यक् चारित्र प्रगट होगा ।

सम्यक् चारित्र याने विरती याने कि भोगवृत्ति का नाश । भोगवृत्ति से मुक्त होना । तत्व को प्रगट करके सत्व को प्रगट करो । चारित्रधर की सेवा करने से, वैयावच्च करने से उनके जैसे हम बन सकते हैं । नमो चारितस्स में स्थिर रहने से सम्यक् चारित्र प्रगट होगा । आनंद प्रगट होगा ।

“ॐ नमो चारितस्स”

यह मंत्र जाप करते करते सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया ।

ग्यारहवा दिन – गुणविकास का मार्ग शुरु साधु पद से ।

इस दस दिन की आराधना साधना में जीवन व्यवहार कैसे करना है उनका पूरा मार्ग निश्चित हो चूका । अब उसका अमलीकरण करना है, परम पद प्रगट करने के लिए..... यह बताते हुए प.पू. गुरुदेवने कहाँ, सम्यक् दर्शन भूमिका है । सम्यक् चारित्र परिणामन है । साधक की advance अवस्था है साधु अवस्था । चोबीसो घंटे सिद्धपद प्रगट करने में अपना पूरा जीवन बिता देता है ।

आज से पंच परमेष्ठि की साधना शुरु होती है । गुणविकास याने Love, Care & Share का अभ्यास करना ।

प.पू. गुरुदेवने साधु और साधक के बीच क्या अंतर है वह बताया । साधक मे से साधु कैसा बनना है यह देखा ।

व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिती, जीव, परमाणु.... सब जीव के साथ Love, Care and Share करना है । स्वाध्याय में रहना है । सतत अपने आपको check करना है । स्व को देखना है कि मैंने जो निर्णय लिया है, वह है कि नहीं ? मैं Love, Care & Share में हूँ ?

पाँच प्रकार की समिति के बारे में समझ मिली । साधक, साधना, साधु... इन तीनों की विशेष clarity मिली ।

साधु पद ऐसा पद है जो हमे साधक बनाता है, साधक दशा को वंदन करना, अहोभाव करना, हम भी जल्दी जल्दी ऐसे साधु बने ऐसे भाव करते हुए श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया ।

“ॐ नमो लोए सब्ब साहुणं”

शुभेच्छ :

श्रेष्ठ अशुभ विचार मानव पासे अनेक पाप करावे छे .



बारहवाँ दिन – उपाध्याय पद

आज एक step आगे बढ़े । उपाध्याय के जीवन में परम विनय, विवेक है । न कोई आड़बर न कोई दिखावा है । सब जीव को मिलते हैं । उनका न कोई वेश है । उनके मुख्य गुण.... विनय, विवेक, नमन, शरण, समर्पण है । सिर्फ आत्मसमर्पण बाकी है । हमारे लिए वे solution provider है । सद्गुरु स्वरूप से अपने जीवने के परिणाम से हमें मार्गदर्शन करते हैं । हरेक जीव के level पर solution देते हैं । उपाध्याय के जाप करने से अपने आप सूझबूझ आती है । सद्गुरु प्रति विशेष अहोभाव रखते हैं । ऐसे उपाध्याय भगवंत आप जहाँ भी, जिस स्वरूप में हो आप मेरे अंदर आओ, मुझे उजागर करो यह भाव जागृत करते हुए श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया गया ।

“ॐ नमो उवज्जायाणं”

तेरहवा दिन – आचार्य पद

आज आचार्य अष्टक पद के माध्यम से आचार्य अपने गुणों से हमारे जीवन में क्या क्या कृपा कर सकते हैं यह देखा । आचार्य की विशेषता क्या है यह जाना । आचार्य तीर्थंकर परमात्मा के विचारों को साकार स्वरूप देते हैं । भगवान के मार्ग पर चलने के लिए सबको प्रोत्साहित करते हैं । जो कोई उनके वायुमंडल में आते हैं उन सबको प्रेमभाव से रास्ता दिखाते हैं । अखंड ब्रह्मचर्य में लीन रहते हैं । सतत उजास, उमंग, उल्लास में बहते रहते हैं । तीर्थंकर परमात्मा की तरह उनके हृदय में हरक्षण “सवि जीव करु शासन रसि” का भाव होता है । ऐसे आचार्य हमें तत्व स्वरूप से मिले, उनका शरण मिले, उनकी निश्रामिले, उनकी मैत्रीभावना मिले... यही भाव करना है । हे आचार्य भगवंत आप हमारे जीवन में आना । द्रव्य स्वरूप से या भाव स्वरूप से जिससे हमारा भटकना बंद हो और हमारा हित हो । हमारे अंदर से अंधियारा दूर हो... ऐसी कृपा करना । इस भाव के साथ श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया गया ।

“ॐ नमो आयरियाणं”

चौदहवाँ दिन – अरिहंत पद

आज माऊन्ट एवरेस्ट जैसे सबसे ऊँचे पद पर आ चूके हैं – अरिहंत पद पर ।

हमारे जीवन में जो कुछ भी चाहिए... आसुरि शक्ति को निकालनी है, ज्ञान साधना करनी है, परिणाम चाहिए... उसका पूरा मार्ग अरिहंत में है तत्व स्वरूप और व्यक्ति स्वरूप से ।

तीर्थंकर और अरिहंत में क्या भेद है यह समझ मिली । अरिहंत बनना है तो अरिहंत का शरण लेना है ।

अरिहंत ऐसे साथीदार हैं हमारे, जो तीनों लोक में तीनों काल हमारे साथ भवोभव चलते हैं । अनंत काल का संबंध है क्योंकि वो ही सर्वेसर्वा है । जो भी उनके आसपास आ जाता है उसका मंगल निश्चित है ऐसा उनका

अस्तित्व है । ऐसे अरिहंत के साथ आज हमें दोस्ती यारी करने की है । ऐसे अरिहंत को भाव स्वरूप हृदय में स्थापित करने से सबकुछ सहज हो जाता है । हृदय में अरिहंत... अरिहंत... रटण करना है चोबीसो घंटों । अरिहंत नाम ही रक्षक है ऐसे अरिहंत हमें परिषह, उपसर्ग से मुक्त कराते हैं । ऐसे अरिहंत को हमें हमारा पूरा अस्तित्व समर्पित करना है । उनके मार्ग पर पूर्ण विश्वास और श्रद्धा से चलना है । उनके शरण में जाना है ।

“ॐ ह्रीं ॐ नमो अरिहंताणं”

इस कर्म के कुरुक्षेत्र के अंदर सर्व कर्म से मुक्त होना है और सिद्ध बनना है । जब तक हम आपके जैसे न बने तब तक आप हमारे साथीदार बनके रहना... यह भाव करते करते श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया ।

पंद्रहवा दिन – अंतिम दिन... सिद्ध पद ।

परम ज्ञान स्थान... सिद्ध गति अवस्था... अनंत अनंत काल से जो ढूँढ़ रहे हैं उस स्थान पर आ चूके । इस चौद राजलोक के अंदर गति भ्रमण करानेवाले कार्मण और तेजस के बारे में प.पू. गुरुदेवने समझाया । इससे हमें मुक्त होना है... कैसे ? सतत कर्म शुद्धि मंत्र “नमो अरिहंताणं, नमो जिणाणं... जिय भयाणं” का रटण करो । इसी में पुरुषार्थ करना है । Power को उजागर करना है ।

“नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं...”

ये दोनो मंत्र हमारे जीवन व्यवहार में प्रवर्तन करने हैं । तब व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिती, जीव परमाणु से मुक्त होंगे । असंग दशा आयेगी ।

सिद्ध बनने का मार्ग वीर योद्धा का मार्ग है । हमें वीर योद्धा बनना है ।

में वीर बनूं और मेरे अंदर सिद्धचक्र गतिमान हो, मेरे सर्व भवभ्रमण तूटते जाये ऐसी भावना के साथ श्री सिद्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया गया ।

“नमो सिद्धाणं.....”

इस तरह पंद्रह दिन की यह श्री नवरात्री आराधना नवपद साधना श्री सिद्धचक्र महायंत्र जाप पूजन अनुष्ठान संपन्न हुआ । हररोज जाप पूजन होने के बाद प्रभुजी की आरती और मंगल दिपक किया जाता था । सभी साधकोने इसका लाभ लिया । इस आराधना साधना में सभी साधको ने यंत्र पर और जिनके पास यंत्र नहीं थे उन्होंने भाव पूजन किया । ज्ञान पद से सिद्धपद की यह यात्रा में सभी साधकने खुदको और श्री सिद्धचक्र यंत्र को recharge करके फिर से ऐसी आराधना साधना में जुड़ने का निर्णय लिया ।

नमो जिणाणं ।



महावीर जन्म कल्याणक उत्सव – 2016

हम जिसके धर्मशासन में रहते हैं ऐसे चरम तीर्थकर श्री भगवान महावीर का जन्म महोत्सव “महावीर जन्म कल्याणक” को अनोखे ढंग से मनाने का एक प्रयोग “परम सुख जीवन विकास केन्द्र” द्वारा प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई के सानिध्य में चैत्र सुद तेरस, दि. १९ एप्रैल २०१६ – मंगलवार को मनाया गया ।

भगवान महावीर का आलंबन लेके उनके जन्म दिन निमित्त खुद के अंदर महावीर प्रगट करने का इस प्रयोग में आज के काल के नरक स्थान जैसे कि सरकारी अस्पताल, अनाथआश्रम जैसे स्थान के दर्शन करके वहाँ समय व्यतीत करते हुए व्यक्ति जो कर्मयोग से शारिरीक पीड़ा, वेदना, दर्द, लाचारी में समय पसार कर रहे हैं, जिनको कोई प्रेम देने वाले नहीं है, हिंमत देनेवाले नहीं है ऐसे शरीर और मन से लाचार और दुःखीजनो के साथ रहकर उनकी वेदना, पीड़ा, संवेदना का अनुभव करके उन जीवो को शांति और शाता देने का यह अनुकंपा का प्रयोग था । जीवन की वास्तविकता हमारे अंदर क्या transformation लाती है उसका चिंतन करने का यह प्रयोग था । दोपहर 2.30 बजे सायन अस्पताल के गेट नं. 7 के पास सभी सत्संगी, सेवक, महेमान, बच्चे इस प्रयोग में शामिल होने आ पहुँचे थे । प.पू. गुरुदेवने पूर्वभूमिका समझाते हुए कहाँ कि, यहाँ जो जीव जी रहे हैं उन्हें हमारे प्रेम और हुंफ की जरूरत है । जो पीड़ा, शारिरीक तकलीफ वे भुगत रहे हैं उन्हें हमारी अनुकंपा को शांति के स्वरूप में transfer करना है और हमारे अंदर महावीर प्रगट करना है । उनके दुःख देखके रोना नहीं है बल्कि सावधान होना है, जागृत होना है । मैं कितना lucky हूँ... । मैं प्रभु के शरण में हूँ । भगवान ने हर जीव के लिये Love, Care and Share की भावना की और महावीर बने । तत्पश्चात् प.पू. गुरुदेवने परम सुख जीवन विकास केन्द्र द्वारा की जाती सात क्षेत्र में सेवा – अस्पताल, आश्रम, Education, साधु-साध्वी वैयावच्च, Science of Divine Living को जन जन तक पहुँचाने का अभियान, पशु-पक्षी जीवदया, 24 x 7 hours helpline.... के बारे में जानकारी दी और प्रेरणा करते हुए कहाँ – इन सात क्षेत्रों में यथाशक्ति मन सेवा, तन सेवा, वचन सेवा, धन सेवा, संबंध सेवा में योगदान देने को कहाँ । सालभर इन सात क्षेत्र में परम सुख परिवार सदप्रवृत्ति कर रहा है ।

तत्पश्चात् 20 से 22 जन का गुप बनाकर सभी को फल की थैली देने में आयी । फिर Group Leader के साथ अस्पताल के अलग अलग वॉर्ड में अलग अलग Group गए । हरएक दर्दी के पास जाके उनके स्वजन बनके उन्हें शांति और प्रेम से मिले और फल की थैली दी । सभी सेवको ने वॉर्ड में बैठके वहाँ के सभी जीवो के लिए प्रभुकृपा, नमो जिणाणं...जिय भयाणं, श्री गजानंद जय गजानंद.... मंत्र जाप किये । उन जीवो को शाता

मिले, उनकी वेदना का शमन हो ऐसे भाव आंदोलन बहते किये । छोटे बच्चे Children Ward में जाके उन छोटे छोटे बच्चो को मिले और उनके लिये मंगल जाप किये । अलग अलग वॉर्ड में जाने के बाद अस्पताल के प्रांगण में प.पू. गुरुदेव ने अस्पताल के सभी जीवो के लिये प्रभुकृपा करके “नमो जिणाणं...जिअ भयाणं” जाप के भाव आंदोलन बहते किये । सभी ने तनमन से हृदयपूर्वक अस्पताल के परिसर के कणकण में और जनजन में शांति और मंगल हो इस मंगल भावना के साथ “श्री गजानंद, जय गजानंद...जय जय गणेश मौर्या...” के जाप किये । तत्पश्चात् गौतम प्रसादी ग्रहण करके सभी Salvation Army Girls आश्रम में गये ।

यह बच्चियाँ जो निराधार हैं, जिनके Parents नहीं हैं, Family नहीं है ऐसी बालिकाएँ इस आश्रममें हैं । वास्तविकता का स्वीकार करके हसते हसते जीवन जीती इन बालिकाओं के साथ आमने सामने बैठके प्रेम से सभी ने Love & Share की अनुभूति की । लगभग छह साल की उम्र से लेके पंद्रह साल की बालिकाओने हँसी-खुशी गाने गाये । ईशु की प्रार्थना सुनाई । प.पू. गुरुदेवने सभी बालिकाओं को ‘नमो जिणाणं...जिअ भयाणं’ धून में तल्लीन बनाते हुए कहाँ – जब भी आपको डर लगे, घबराहट लगे तब यह धून करना । “मुझे नहीं होना परेशान” यह मंत्र देते हुए कहाँ, जब भी कोई मुश्कली या परेशानी आये तब ईशु को याद करके यह बोलना “मुझे नहीं होना परेशान” और जब किसी पे गुस्सा आता है तब “आप कैसे भी हो, I Love You” ये बोलने से गुस्सा चला जाएगा और आप relax feel करोगे । इस तरह यह तीन मंत्र उनके जीवन में हसते हसते सहज आ गये । 80 से 90 जितनी सभी बालिकाएँ आनंद में लहराती थी । सभी बालिकाओ को एक Kit देने में आई जिसमें Tooth Paste, Tooth Brush, Hair Oil, Bath Soap, Comb, Shampoo, Telcum Powder, Napkin, Hair Clip ईत्यादि सामग्री दी गई । अंत में सभी बालिकाओ को आम रस परोषा गया । कुछ बालिकाओने अपना आनंद Interview देके व्यक्त किया । कुछ लोगो ने Interview देके अपना महावीर जन्म कल्याणक दिन का अनुभव Share किया । कुछ लोगो ने Feed-back Form में अपना अनुभव Share किया । इस तरह महावीर बनने का यह प्रयोग बहोत ही अद्भूत रहा । जगत की वास्तविकता का दर्शन करके खुद के अंतःकरण में चिंतन करके “मुझे महावीर बनना है” यही इस प्रयोग का लक्ष था । भगवान महावीर के चरणो में यह स्तुति का स्तवना करके अहेवाल पूर्ण करती हूँ ।

“जेना गुणोना सिंधुना बे बिन्दु पण जाणुं नहीं,
पण अेक श्रध्धा दिल महीं के नाथ सम को छे नहीं,
जेना सहारे क्रोड तरिया मुक्ति मुज निश्रय सही,
मारा प्रभु महावीरने भावे करुं हूँ बंदना....।”

नमो जिणाणं

संकलन : रीटा मारु (मुलुन्ड)



મહાવીર જન્મ કલ્યાણક ઉત્સવ તા. ૧૯-૪-૨૦૧૬, મંગળવાર

આપણે જેના ધર્મશાસનમાં રહીએ છીએ એવા ચરમ તીર્થકર શ્રી ભગવાન મહાવીરનો જન્મ મહોત્સવ “મહાવીર જન્મ કલ્યાણક ઉત્સવ”ને કંઈક અનોખી રીતે ઉજવવાનો એક પ્રયોગ “પરમ સુખ જીવન વિકાસ કેન્દ્ર”ના નેજા હેઠળ “પ.પૂ. ગુરુદેવ શ્રી પંકજભાઈ”ના સાંનિધ્યમાં ચૈત્ર સુદ તેરસ, તા. ૧૯ એપ્રિલ ૨૦૧૬ – મંગળવારના ઉજવાયો.

ભગવાન મહાવીરનું આલંબન લઈ એમના જન્મ નિમીત્તે પોતાનામાં મહાવીર પ્રગટ કરવાના આ પ્રયોગમાં આજના કાળમાં રહેલા નર્કસ્થાન જેવા કે સરકારી હોસ્પિટલ, અનાથઆશ્રમ જેવા સ્થળોના દર્શન કરી, ત્યાં સમય વ્યતીત કરી રહેલ વ્યક્તિઓ – જેઓ કર્મયોગે શારિરીક પીડાઓ, વેદના, દર્દ, એકલતા, લાચારીમાં સમય પસાર કરી રહ્યા છે. જેમને કોઈ હુંફ આપનાર નથી. પ્રેમ આપનાર નથી. હિંમત આપનાર નથી. આવા શરીર અને મનથી લાચાર અને દુઃખીજનો સાથે સહભાગી થઈ તેમની વેદના, પીડા, સંવેદનાને અનુભવી, આવા જીવોને શાંતિ અને શાતાની સંવેદના transfer કરવાનો આ અનુકંપાનો પ્રયોગ – જીવનની નરી વાસ્તવિકતાને જોવાનો અને આ વાસ્તવિકતા આપણા અંતરમાં શું transformation સર્જે છે તેનું ચિંતન કરવાનો હતો.

બપોરના ૨.૩૦ વાગે સાયન હોસ્પિટલમાં ગેટ નં. ૭ પાસે સૌ સત્સંગીઓ, સેવકો, મહેમાનો, બાળકો આ પ્રયોગમાં સહભાગી થવા માટે આવી પહોંચ્યા હતાં. પ.પૂ. ગુરુદેવે આ Process ની પૂર્વભૂમિકા સમજાવતાં કહ્યું કે અહીં જે જીવો જીવી રહ્યા છે તેમને આપણા પ્રેમ અને હુંફની જરૂર છે. જે પીડાઓ, શારિરીક દુઃખ ભોગવી રહ્યા છે એ તરફ આપણી અનુકંપાને શાંતિના સ્વરૂપમાં transfer કરવાની છે અને પોતાની અંદર મહાવીર પ્રગટ કરવાનો છે. એમના દુઃખો જોઈને રડવાનું નથી, પણ સાવધાન થવાનું છે, જાગૃત થવાનું છે. હું કેટલો Lucky છું ! હું પ્રભુના શરણમાં છું. ભગવાને દરેક જીવ માટે Love, Care & Share ની ભાવના ભાવી અને મહાવીર બન્યા. એના પછી પ.પૂ. ગુરુદેવે પરમ સુખ જીવન વિકાસ દ્વારા સાત ક્ષેત્ર – હોસ્પિટલ, આશ્રમ, Education, સાધુ-સાધ્વી વૈયાવચ્ચ, Science Divine Living ને જન જન સુધી પહોંચાડવાનું અભિયાન, પશુ-પક્ષી જીવદયા, 24 Hrs. Helpline ની માહિતી અને સમજણ આપી અને પ્રેરણા કરતાં કહ્યું કે આ સાત ક્ષેત્રમાં યથાશક્તિ તનસેવા, મનસેવા, વચનસેવા, ધનસેવા, સંબંધસેવાનું યોગદાન આપવાનું કહ્યું. આખા વર્ષ દરમ્યાન આ સાત ક્ષેત્રે પરમ આનંદ પરિવાર સદ્ પ્રવૃત્તિ કરી રહ્યું છે.

ત્યાં હાજર રહેલા બધાનાં ૨૦ થી ૨૨ જણાનાં Group બનાવી દરેકના હાથમાં ફૂટ ભરેલી થેલી આપવામાં આવી. ત્યારબાદ group leader ની સાથે group માં ભેગા થઈ હોસ્પિટલના wards માં ગયા. એક Patient પાસે એક સેવક જઈ ‘નમો જિણાણાં’ કહી એક આત્મીયજન બની હુંફ અને

શાતા આપીને ફૂટની થેલી એમને અર્પણ કરી હતી. પછી બધા સેવકોએ ભેગા મળી એક સ્થાનમાં એ ward માં ત્યાં રહેલા સર્વ જીવો માટે અને એમની સેવા કરી રહેલ staff, નર્સ, ડોક્ટરોને આ સેવા માટે શક્તિ-સામર્થ્ય મળે એ માટે પ્રભુકૃપા અને “નમો જિણાણાં – જિઅ ભયાણાં”, “શ્રી ગજાનંદ, જય ગજાનંદ” વગેરે મંત્રોના ખૂબજ ભાવપૂર્વક જાપ કર્યા હતા. એ જીવોને શાંતિ મળે, વેદનાનું શમન થાય એવા ભાવ આંદોલન વહેતા કર્યા. આ રીતે ત્રણ-ચાર wards માં જઈ સેવકોએ શાંતિ અને શક્તિ માટે પ્રભુને પ્રાર્થના કરી. નાના બાળકો Children wards માં જઈ ત્યાં રહેલ તેમની જ વયના બાળકોને શું થયું છે ? ની પૂછા કરીને એમના માટે પ્રભુકૃપા અને જાપ કર્યા.

અલગ અલગ wards માં ગયેલ સર્વ સેવકો અને સત્સંગીઓ ફરી પાછા નીચે ground માં આવ્યા. પ.પૂ. ગુરુદેવે અહીં રહેલ સર્વ જીવો માટે પ્રભુ કૃપા કરી “નમો જિણાણાં, જિઅ ભયાણાં” જાપના ભાવ આંદોલન વહેતા કર્યા. સર્વ સેવકોએ તન-મનથી હૃદયપૂર્વક જાપ દ્વારા આ પરીસરના કણ કણમાં અને જન જનમાં શાંતિ અને મંગલ વ્યાપે. એ જ મંગલભાવના સાથે “શ્રી ગજાનંદ જય ગજાનંદ જય જય ગણેશ મોર્યા”ના જાપ કર્યા. આ જાપ કરતાં હૈયુ ખરેખર અનુકંપિત થઈ રહ્યું. ત્યારબાદ ગૌતમપ્રસાદી, નાસ્તા-પાણીના સ્વરૂપમાં આરોગી સૌએ Salvation Army Girls આશ્રમ તરફ પ્રયાણ કર્યું. આ બાલિકાઓ જેઓ નિરાધાર છે, parents નથી, family નથી એવી કન્યાઓ આ આશ્રમમાં આશ્રય લે છે. વાસ્તવિકતાનો સ્વીકાર કરી હસતાં હસતાં સમય ગુજારી રહેલ આ બાલિકાઓ સાથે એકની સાથે એક એમ સામસામે બેસી દરેક સેવકોએ બાલિકાઓ સાથે love અને share ની લાગણી ગદ્ગદ્ હૃદયે અનુભવી હતી. લગભગ ૬ વર્ષથી ૧૫ વર્ષની બાલિકાઓએ ખૂબજ ખુલ્લા હૃદયે હસીહસીને, કોઈપણ જાતની ફરિયાદ વગર ગીતો ગાયા. એમની ઈશુની પ્રાર્થનાઓ ગાઈ. પ.પૂ. ગુરુદેવે એ સર્વ બાલિકાઓને “નમો જિણાણાં, જિઅ ભયાણાં”ની ધૂન ગવડાવતાં કહ્યું કે જ્યારે પણ તમે હતાશ કે ડરથી ગભરાઈ જાઓ ત્યારે આ ધૂન કરવાની. “મુજે નહિં હોના પરેશાન” આ મંત્ર આપતાં સમજાવ્યું કે જ્યારે પણ કોઈ મુશ્કેલી કે tension આવે ત્યારે ઈશુને મનમાં યાદ કરી બોલવાનું “મુજે નહિં હોના પરેશાન”. અને જ્યારે કોઈ પર ગુસ્સો કે anger કે stress આવે ત્યારે “આપ કેસે ભી હો, I Love You” આ બોલવાથી ગુસ્સો ચાલ્યો જશે અને આપ relax feel કરશો.

આમ, પાયાનાં ત્રણ basic મંત્રો હસતાં હસતાં સમજવાથી એમના જીવનમાં વણાઈ જાય એ રીતે પ.પૂ. ગુરુદેવે એમને આપ્યાં. ૮૦ થી ૯૦ જેટલી બાળાઓના મુખ પર આનંદની ચમક દેખાતી હતી. સર્વ બાળાઓને ૧ કિટ આપવામાં આવી. જેમાં Tooth Paste, Tooth Brush, Hair Oil, Bath Soap, Comb, Shampoo, Talcum Powder, Napkin, Hair Clip વગેરે સામગ્રી હતી. છેલ્લે સૌને આમરસ પીવડાવી એમને ફરીથી મળવાનું વચન આપ્યું. અમુક બાળાઓએ પોતાનો અનુભવ interview આપી share કર્યા. આપ આયે હો તો હમે અચ્છા લગતા હૈ.... સૌ કોઈ આત્મીયતાની લાગણી અનુભવી રહ્યાં હતાં. ત્યાં હાજર રહેલા અમુક લોકોએ

શુભેચ્છક : નાનાકડી ગેરસમજથી મોટી લડાઈ થઈ શકે જ્યારે નાનકડા સમાધાનથી મોટી લડાઈ અટકાવી શકાય.



interview आपी अमनो 'महावीर जन्म कल्याणक'नो अनुभव share कर्यो. भीजा दोकोअे feedback form मां पोतानो अनुभव share कर्यो. आम 'महावीर प्रगट करवानो आ प्रयोग' पूअज अद्भूत रह्यो. जगतनी वास्तविकतानुं दर्शन करी, पोताना अंतःकरणमां चिंतन करी 'भारे महावीर बनवुं छे'.... अे ज आ प्रयोगनो लक्ष रह्यो. भगवान महावीरना चरणमां आ स्तुतिनुं स्तवन करी अहेवाल पूर्ण करुं छुं.

“जेना गुणोना सिंधुना भे बिन्दु पण ज्ञानुं नही,
पण अेक श्रद्धा दिल मही के नाथ सम को छे नही,
जेना सडारे डोड तरिया मुक्ति मुज निश्चय सही,
भारा प्रभु महावीरने भावे करुं छुं वंदना.”

नमो ज्ञिणां

संकलन : रीटा मार (मुलुंड)

सम्यक् अग्नि महोत्सव – होली

यह सृष्टि विविध रंगो से भरी हुई है । इस रंगो में ताल मिलाने के लिए सृष्टि हमें न्यौता देती है । वसंत ऋतु का आगमन हर जीव को सहज आनंद और लय लेने के लिए प्रेरित करता है । जीवन को सृष्टि के इस ताल और रंग में रंगने का अवसर याने “होली उत्सव” । इस “सम्यक् अग्नि महोत्सव” याने “सम्यक् होली उत्सव” का आयोजन परम सुख जीवन विकास केन्द्रने प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई के सांनिध्य में मुलुंड सेन्टर में दि. २३ मार्च २०१६ बुधवार को शाम ७.०० से ११.०० बजे तक किया था । मुलुंड सेन्टर के आंगन मे यह महोत्सव होने जा रहा था इसलिए सभी सेवक और सत्संगी आनंद में आ गये थे । सभी के चेहरे पे खुशी झूम रही थी । प.पू. गुरुदेव... हमारे आंगन में... एक उत्साह और गुरु-दर्शन की उत्कंठा सभी के चेहरे पे झलक रही थी ।

रतन गेलेक्सी, नेहरु रोड, मुलुंड (वेस्ट) हॉल मे शाम ५.०० बजे से ही सभी सेवको उत्साह से हॉल को सजाने के लिये आ चूके थे । कोई भगवान के सामने रंगोली बना रहा था तो कोई छत पे धजा-पताका लगा रहा था । कोई तोरण लगा रहे थे । होली की प्रतिकृति तैयार हो रही थी । रंगोली बना रहे थे । आसन बिछा रहे थे । अहो... अहो... प्रभु और गुरुदेव को मिलने की तालावेली... आनंद उत्साह का माहोल जम रहा था ।

शाम ६.३० से सत्संगीओ, महेशान आ रहे थे । चटपटी गौतम प्रसादी का स्वाद लेकर सभी आसन पे आरुढ हो रहे थे । प.पू. गुरुदेव का आगमन होते ही इस रंगोत्सव में प्राण आ गये । बहोत ही शानदार शुरुआत.... नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ प.पू. गुरुदेवने की ।

साधु जीवन का मंत्र, श्रमण बनने का मंत्र... साधना मंत्र... इस मंत्र के उच्चार के साथ ही पूरा वातावरण energetic हो गया । जिसका अनुभव सभीने किया ।

“पंच परमेष्ठि कृपा करो....” यह धुन में सभी तल्लीन हो गये और कृपा ली । अरिहंत, सिद्ध (देवतत्व), आचार्य, उपाध्याय, साधु (सत्गुरु तत्व) धर्म तत्व और जीव सृष्टि के सर्व जीव को हृदयपूर्वक वंदन करके उनका शरण लेते लेते... उनको समर्पण करते करते सभी इस पंच तत्व की कृपा अपने अस्तित्व में स्वीकार रहे थे ।

हॉल के बीच रखी हुई होली की प्रतिकृति – ज्ञान ज्योत का महत्व बताते हुए प.पू. गुरुदेवने कहाँ, हमारे अंदर रही हुई सभी नकारात्मकता और दोषो को इस अग्नि में जला डालो और केसरी-पीली ज्योत के रंग का स्वीकार करके निर्णय लेना है कि आजसे मैं मेरा जीवन भगवानने बताये हुए ज्ञान-विज्ञान के आधार पे जीऊँगा । प.पू. गुरुदेवने केसरी रंग की ज्ञान ज्योत के सामने ७ से १० मिनट तक देखते ही रहने को कहाँ और फिर इस ज्योत को दोनो आँख के बीच आज्ञा केन्द्र में स्थापित करने के लिये कहाँ । और फिर सभी ने एक निर्णय लिया कि आज से मैं ज्ञानपूर्वक मेरे जीवन के सभी व्यवहार करूँगा । और हृदयचक्र पे ज्ञानज्योत को पदस्थ करके निर्णय लिया कि प्रेमपूर्वक जीवन जीऊँगा । Love, Care and Share.... महावीरने बताया हुआ जतना मार्ग को जीवन में उतारूँगा । बहुत ही ज्ञानात्मक समझ, बहुत ही सरल भाषामें प.पू. गुरुदेव के श्रीमुख से सभी ग्रहण कर रहे थे ।

अज्ञान और नकारात्मकता को जीवन में से दूर हटाके सर्जनात्मक अभिगम अपनाने का.... इस सम्यक् अग्नि महोत्सव का मुख्य संदेश था । प.पू. गुरुदेव ने प्रेरणा करते हुए कहा कि, जीवन में से मायूसी, उदासी भगाओ और निर्दोष आनंद लेते रहो । साथ ही आंतरिक विकास की जागृति रखो । ऐसे सत्संग, शिबीर में आते रहो जिससे ‘सत्’ के Track पे रहो । परम सुख जीवन विकास केन्द्र द्वारा आगामी Programme की जानकारी मिली । तत्पश्चात् प्रभु समक्ष आरती और मंगल दिपक किया गया । प.पू. गुरुदेव के आर्शिवाद लेके, केसरिया ज्ञान रंग का तिलक धारण करके सभी अपने घर गये ।

इस समग्र आयोजन को साकार रूप देनेवाले सभी सेवको के प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान को वंदन करके इस अहेवाल को यहाँ मैं विराम देती हूँ । फिर मिलेंगे... ऐसे ही उमंग और उत्साह से भरे ओर नये अहेवाल में....

नमो जिणां ।

संकलन : रीटा मार (मुलुंड)



સમ્યક્ અગ્નિ મહોત્સવ - હોળી

કુદરતના રંગમાં તાલ મિલાવવા માટે કુદરત સામે ચાલીને આમંત્રણ આપે છે. વસંત ઋતુનું આગમન સર્વ જીવોને સહજ આનંદ અને સહજ લયને માણવા માટે પ્રેરે છે. જીવનને કુદરતનાં આ તાલ અને રંગમાં રંગાવવાનો એક અવસર “સમ્યક્ અગ્નિ મહોત્સવ - હોળી ઉત્સવ”ની ઉજવણી, પરમ સુખ જીવન વિકાસ કેન્દ્રનાં નેજા હેઠળ, પ.પૂ. ગુરુદેવ શ્રી પંકજભાઈના સાંનિધ્યમાં મુલુંડ સેંટર ખાતે તા. ૨૩ માર્ચ ૨૦૧૬, બુધવાર સાંજે ૭.૦૦ થી ૧૧.૦૦ દરમ્યાન કરવામાં આવેલ. મુલુંડ સેંટરનાં આંગણે આ અવસરને ઉજવવાનો લહાવો મળ્યો એટલે દરેક સેવક અને સત્સંગીઓના હૃદયમાં ખુશી અને આનંદની લહેર જોવા મળી હતી. પ.પૂ. ગુરુદેવ... અમ આંગણીયે... એક ઉત્સાહ અને ગુરુ દર્શનની તાલાવેલીની લાગણી સૌ સેવકો અનુભવી રહ્યાં હતાં.

રતન ગેલેક્સી, નેહરુ રોડ, મુલુંડ (વેસ્ટ) - આંગણું - અવસરને માણવાનું. સાંજે ૫.૦૦ વાગ્યાથી થનગનતા સેવકો, હોલને શણગારવા માટે, એક ઉત્સાહ અને આનંદનો માહોલ ઊભો કરવા માટે આવી પહોંચ્યાં હતાં. કોઈ ભગવાનની સામે ગહુલી તો કોઈ રંગોળી બનાવી રહ્યું હતું. કોઈ છત પર રંગબેરંગી પતાકા લગાવી રહ્યું હતું. હોળીની પ્રતિકૃતિની સજાવટ થઈ રહી હતી. બારણે તોરણ લગાવી રહ્યાં હતાં. આંગણીયે રંગોળી પુરાઈ રહી હતી. આસનો બિછાવી રહ્યાં હતાં. અહીં... પ્રભુ અને ગુરુને મળવાની ઝંખનાનો આનંદ અને ઉત્સાહનો રંગ બરાબર જામી રહ્યો હતો.

સાંજે ૬.૩૦ થી સત્સંગીઓ, મહેમાનો આવી રહ્યાં હતાં. સર્વપ્રથમ ચટપટી ગૌતમપ્રસાદીને ન્યાય આપી સૌ આસનસ્થ થઈ રહ્યાં હતાં. પ.પૂ. શ્રી ગુરુદેવના આગમન સાથે આ રંગોત્સવમાં પ્રાણ પૂરાયા હતાં. ખૂબજ જોરદાર શરૂઆત, નમસ્કાર મહામંત્રના ઉચ્ચાર સાથે પ.પૂ. ગુરુદેવે કરી હતી. સાધુજીવનનો મંત્ર, શ્રમણ બનવાનો મંત્ર, સાધના મંત્ર... આ મંત્રના ઉચ્ચાર અને રટણથી ખૂબજ energetic ભાવ મંડળ રચાઈ રહ્યું હતું. જેનો અનુભવ ત્યાં હાજર રહેલા દરેક જીવને થયો હતો. “પંચપરમેષ્ઠી કૃપા કરો...”નું ગીત તરંગીત થતાં સૌ કોઈ ખુલ્લા હૃદયે એ કૃપાને ઝીલી રહ્યાં હતાં. અરિહંત, સિધ્ધ (સુદેવ), આચાર્ય, ઉપાધ્યાય, સાધુ (સુગુરુ), ધર્મ તત્વ (સુધર્મ) અને જીવસૃષ્ટિના સર્વ જીવને હૃદયપૂર્વક વંદન કરી એમનું શરણું લેતાં લેતાં સમર્પણ કરતાં કરતાં આ પાંચ તત્વને સૌ કોઈ પોતાના અસ્તિત્વમાં આત્મસાત કરી રહ્યાં હતાં.

હોલની મધ્યમાં ઊભી કરવામાં આવેલી હોળીની પ્રતિકૃતિ - જ્ઞાનજ્યોતનું મહત્વ સમજાવતા પ.પૂ. ગુરુદેવે કહ્યું કે આપણી બધી નકારાત્મકતાઓ અને દોષોને આ અગ્નિમાં હોમી દો અને કેસરી-પીળી જ્ઞાનજ્યોતના રંગનો સ્વીકાર કરી, પ્રભુ સામે નક્કી કર્યું કે હવેથી હું મારું જીવન ભગવાને આપેલા જ્ઞાન-વિજ્ઞાનના આધારે જીવીશ. પ.પૂ. ગુરુદેવે કેસરી colour ની જ્ઞાનજ્યોતને ૭ થી ૧૦ મિનીટ પાંચ ફડકાવ્યા વગર એકટિશે જોતાં રહી તેને બે નેત્રોની વચ્ચે આવેલ આજ્ઞાકેન્દ્રમાં પદસ્થ કરીને સંકલ્પ લેવાડાવ્યો કે હું જ્ઞાનપૂર્વક મારા જીવનનાં દરેક વ્યવહારો કરીશ. અને હૃદયચક્ર

પર પદસ્થ કરી નિર્ણય લેવાડાવ્યો કે હું પ્રેમપૂર્વક જીવીશ. Love, Care & Share - મહાવીરે બતાવેલ ‘જતના’ને જીવનમાં ઉતારીશ. ખૂબજ જ્ઞાનાત્મક સમજણ, ખૂબજ સરળ ભાષામાં પ.પૂ. ગુરુદેવના મુખેથી સૌ ગ્રહણ કરી રહ્યાં હતાં. અજ્ઞાન અને નકારાત્મકતાને જીવનમાંથી દૂર કરી અને સર્જનાત્મક attitude ને અપનાવવો... આ સમ્યક્ અગ્નિ મહોત્સવ સત્સંગનો મુખ્ય સંદેશ છે. પ.પૂ. ગુરુદેવે પ્રેરણા કરતાં કહ્યું કે જીવનમાં માયુસી - ઉદાસીને ભગાવો, નિર્દોષ આનંદ લેતા રહો. સાથે આંતરિક વિકાસ પર જાગૃતિ રાખો અને આવા સત્સંગ, શિબીરોમાં આવતા રહો જેથી “સત્ ના track” પર રહો...

પરમ સુખ જીવન વિકાસ કેન્દ્ર દ્વારા આગામી કાર્યક્રમની માહિતી મેળવી, પ્રભુ સમક્ષ આરતી અને મંગલદિપક આનંદ અને ઉલ્લાસથી સૌએ ભેગા મળીને કર્યો. પ.પૂ. ગુરુદેવના આશીર્વાદ લઈ કેસરીયા જ્ઞાન રંગનો તિલક ધારણ કરી સૌ છૂટાં પડ્યાં.

આ સમગ્ર આયોજનને સાકાર કરનાર સૌ સેવકોના પ્રત્યક્ષ કે પરોક્ષ યોગદાનને વંદન કરી આ અહેવાલને અહીં અલ્પવિરામ આપું છું... ફરી મળીશું.. ફરી આવા ઉમંગ અને ઉત્સાહને માણવા... બીજા કોઈ અહેવાલમાં.

નમો જિણાણં

સંકલન : રીટા માર્ (મુલુંડ)

આનંદમય જીવન કે વિકાસ કી અદ્ભૂત શિબીર - 2016 Science of Divine Living Through નમસ્કાર મહામંત્ર યોગ - I (ડોંબિવલી, સાંતાક્રુજ, કાંદિવલી, વડાલા)

સંસાર વ્યવહાર મેં મનુષ્ય કે પાસ કુછ થોડે પૈસે આતે હી સુખ લગને લગતા હૈ । ડૂન્હી પૈસો કે પીછે હંમેશા વહ ભાગતા રહતા હૈ । લક્ષ્ય હૈ સુખ પાના.... । સુખ કે લિએ પૈસે કે પીછે ભાગતા રહતા હૈ ઓર ધનવાન મી હો જાતા હૈ । કિંતુ ધન હોને કે બાવજુદ મી સુખ નહીં મિલ પાતા । તબ મન મે વિચાર આતા હૈ, ક્યા યહી સુખ હૈ ? ક્યા જીવન મે કુછ missing હૈ ? ઉસે જાનને, સમજને ઓર અનુભવ કરને કે લિએ Practical Workshop - Science of Divine Living Through નમસ્કાર મહામંત્ર કા આયોજન મુંબઈ મેં ડોંબિવલી, વડાલા, સાંતાક્રુજ ઓર કાંદિવલી મેં હુઆ થા । પરમ સુખ જીવન વિકાસ કેન્દ્ર દ્વારા યહ આયોજન પિછલે ગ્યારહ સાલ સે પ.પૂ. ગુરુદેવ પંકજભાઈ કે સાંનિધ્ય મેં સફલતાપૂર્વક હો રહા હૈ । પ્રમુકૃપા સે ઓર પ.પૂ. ગુરુદેવ કી સચોટ, સરલ, સ્પષ્ટ ઓર વૈજ્ઞાનિક વાણી કે પ્રભાવ સે હજારો શિબીરાર્થીઓને "Missing in life" કો પ્રાપ્ત કિયા હૈ । ઓર યહ



"Missing" फिर से miss न हो इसलिए परम आनंद परिवार में जुड़ गये हैं और अपना जीवन meaningful बनाया है। परम सुख जीवन विकास केन्द्र का यही लक्ष्य है, “जन जन पाये आनंद”। यह आनंद के तरंग सृष्टि के हर जीव में प्रगट हो।

कुल नौ सत्र की यह शिबीर “आनंद” नामक प्रदेश में जाने की गुरुचाबी है।

यह शिबीर की शुरुआत डोंबिवली और वडाला में दि. १२-०७-२०१५ को हुई। सांताक्रुज और कांदिवली में दि. १९-०७-२०१५ को हुई।

प्रथम सत्र जाहिर शिबीर का था। लोगो में जागृति लाने के लिये और इस शिबीर में क्या है इसलिए यह जाहिर शिबीर का आयोजन किया था। प.पू. गुरुदेवने “श्रेष्ठ मंत्र नवकार, सिद्धमंत्र नवकार.....” यह गीतगुंजन द्वारा शुरुआत की। संगीत के साथ सभी इस धुन में लीन हो गये। जीवन याने क्या? हम यहाँ मनुष्य रूप में क्यों आये हैं? हमारा मकसद क्या है? यह प्रश्न करके प.पू. गुरुदेवने ज्ञान और लक्ष्य की समझ दी।

प्रभुकृपा और नमो जिणाणं की धून के साथ प.पू. गुरुदेवने दूसरे सत्र की शुरुआत करके लोगो को जागृत किया। सत्र की धारा में बहेते किया। मैं कोन हूँ? मैं समय का प्रवासी हूँ। और मेरे पास २०% की स्वतंत्रता है। स्वतंत्र विचार, स्वतंत्र निर्णय और स्वतंत्र अमल जो सृष्टि के किसी भी जीव के पास नहीं है। सिर्फ मनुष्य के पास ही है। यही विशिष्टता हमें भगवान बनने के लिये लायक बनाती है। मैं समय का प्रवासी हूँ.... यही हम भुल जाते हैं और फिर परेशान होते हैं। हरक्षण “मुझे नहीं होना परेशान” यह अपने आपको कहना है। जीवन के पांच आधार बहुत ही सरलता से प.पू. गुरुदेवने संगीत के साथ लोगो को समझाये।

१) पहला आधार : प्रभुकृपा -

हररोज आँख खुलते ही प्रभु के साथ बातचीत कैसे करनी उसका विज्ञान समझाया। परम अस्तित्व के साथ हमारा अनुसंधान होता है जो हमें हमारे हित की ओर ले जाता है।

२) दूसरा आधार : नमो जिणाणं -

प.पू. गुरुदेवने समझाया कि जीवन व्यवहार में हम व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिती के साथ झझुमते हैं। हम हेरानगति से मुक्त होने के लिए व्यक्ति में रहे हुए परमात्मा को वंदन करके, अपने हृदय में उसे विशेष स्थान देकर, स्वीकारभाव के साथ उस व्यक्ति के साथ व्यवहार करना है। अंतर में “मुझे नहीं होना परेशान” निर्णय लेना है। इससे जगत को देखने की हमारी दृष्टि बदल जायेगी।

तीसरे सत्र की शुरुआत प.पू. गुरुदेवने प्रभुकृपा से की। अगले सत्र का Revision करते हुए अदिव्यजीवन के पांच आधार को जीवन में Day to Day life में अपनाने को कहा।

३) तीसरा आधार : “मुझे नहीं होना परेशान” -

प.पू. गुरुदेवने कहा यह परम लक्ष्य है। परम मंत्र है। हर जीव यही चाहता है। यही उसकी खोज है। इस लक्ष्य को सतत जागृत रखना है। और दोनो हाथ उपर उठाके हमारा निर्णय परमतत्व को बताना है। इसके तरंग समय सृष्टि में जायेंगे।

४) चौथा आधार : पांच धून -

हररोज सुबह प्रभुकृपा लेने के बाद पांच धून गुनगुनाने से हमारा Determination पक्का होता है। शुरुआत में CD का सहारा लेकर बाद में Habbit Pattern बनाना है।

- बोल मनवा बोल, मुझे नहीं होना परेशान (लक्ष धून)
- नमो जिणाणं.... जिय भयाणं.... (समर्पण धून)
- मैं समय का प्रवासी हूँ, मैं सत्त हूँ, मैं चित्त हूँ, मैं आनंद हूँ.... (अस्तित्व धून)
- आप कैसे भी हो, I Love You.... (मैत्री धून)
- आप हो हमारे, हम है तुम्हारे.... (जीवन संगीत धून)

यह धून गाने से घर का वातावरण आनंदमय बनेगा और घर के दूसरे सदस्य पर भी इसकी Positive असर होती है।

५) पाँचवा आधार : आप कैसे भी हो, I Love You...

यहाँ पर प.पू. गुरुदेवने समझाया कि हर व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिती को I Love You कहना है। हर जीव में परमतत्व का अंश है। “मुझे नहीं होना परेशान” के साथ साथ "I Love You" होगा तो ही शुद्धिकरण होगा। हमारे पास ओर कोई Option ही नहीं है। हृदयपूर्वक का मैत्रीभाव हर जीव के साथ होगा तो ही “मुझे नहीं होना परेशान” सफल बनेगा। प.पू. गुरुदेवने कहाँ कि, हमारे में और भगवान में क्या फर्क है? वे गृहस्थ थे। हम भी गृहस्थ हैं। वे राज करते थे। सब व्यवहार करते थे फिर भी वे भगवान बन गये और हम.....?

बस.... भगवानने सतत “मुझे नहीं होना परेशान” और हर जीव के साथ "I Love You" सतत यही किया और वे भगवान बन गये। साडे बारह साल सतत यही काम किया और वे परम तत्व को पा गये। हमें भी इसकी Habbit डालनी है। परममुक्ति का यही एक मंत्र है। प.पू. गुरुदेवने सभीको इसे जीवन में अपनाके उतारने को कहा।

चौथे सत्र की शुरुआत पाँच धून के साथ हुई। प.पू. गुरुदेवने ‘मंत्र’ याने क्या? उसकी वैज्ञानिक समझ दी। मंत्र 100% Pure है। नवकार मंत्र महामंत्र क्यों है? उसकी समझ दी। परमइष्ट तत्व के साथ कैसे Tuning करना वह सुबह की प्रक्रिया में चार शरणा, नवपद स्तुति.... विस्तृत रूप से समझाया। चार महातत्व इस समय सृष्टि में है। वह कृपा करने बैठे ही है। सिर्फ हमारा receiver उनकी frequency level में



आये उसका Tuning Process करना है । सुबह की प्रक्रिया यह Tuning करने का Process है । यह प्रक्रिया करने से हमारा मंगल निश्चित है । तत्पश्चात् प.पू. गुरुदेवने चार शरणा की Tuning Process करवाई । उसके बाद नवपद स्तुति का विस्तृत रूप मिला ।

पाँचवा सत्र : प्रभुकृपा के साथ पाँचवे सत्र की शुरुआत हुई । पर्युषण के बाद का यह पहला सत्र था । पाँच भाव धून गुनगुनाने के बाद श्वेत प्रकाश की प्रक्रिया के बारे में प.पू. गुरुदेवने समझाया । श्वेत प्रकाश की प्रक्रिया एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है । वर्तमान जीवित तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी के साथ हमारे अस्तित्व का अनुसंधान करने का प्रयोग किया ।

जिससे हमारे शरीर के level, प्राण के level, मन के level और चित्त के level पर शुद्धिकरण होता है । तत्पश्चात् नमस्कार महामंत्र के भाष्य जाप किये । सभी इस प्रक्रिया में प्रभुकृपा के साथ शुद्ध होते गये । प.पू. गुरुदेवने समझाया कि यह पूरी प्रक्रिया हररोज अनुष्ठानपूर्वक करनी है । अनुष्ठान याने क्या उसकी समझ दी गई । आसन, समय, दिशा, क्रिया और भाव... की समझ दी । प.पू. गुरुदेवने कहाँ कि, प्रभु के पास सद्विनय की कृपा माँगनी है । जिसके साथ हम रहते हैं उनके प्रति विनय, अहोभाव प्रगट होना चाहिए । हर जीव को Thank You कहना है । Love, Care and Share.... हर जीव के साथ जतनापूर्वक व्यवहार करना है । यही धारा में बहना है । खाते-पीते हम तीन लोग को आर्शिवाद दे सकते हैं । हमारी थाली में परोसे हुए भोजन के जीवों को, जिनकी वजह से हमें आहार प्राप्त हुआ उनका और जिन्होंने आहार बनाके हमें परोसा उनको । इस प्रकार हमें सभी जीवों को Thank You कहना है । हम भी इसी तरह किसीके आर्शिवाद से यहाँ मनुष्य भव तक पहुँचे हैं । यह एक दिव्य step है जीवन को दिव्य बनाने का आहार के माध्यम से ।

छट्टा, सातवा, आठवा सत्र पूरे दिन का सत्र था । सुबह ९.३० बजे से शाम ८.०० बजे तक था ।

सत्र की शुरुआत में शरीर मैत्री याने क्या और कैसे करना है उसका Practical Demo और उसके हरेक step की हमारे शरीर के कौनसे अवयव पर क्या असर होती है वह सरल भाषा में सेवक श्री नितीनभाईने समझाया । सभी इस सत्र में उत्कंठा से जुड़े थे । शरीर के अवयवों के साथ मैत्री करते ही Tension Pressure कैसे दूर होते हैं यह श्री नितीनभाईने समझाया । सबके शरीर संबंधी प्रश्नों के समाधानकारी उत्तर दिये । लगभग 2.00 बजे यह सत्र पूर्ण हुआ । उसके बाद सभी शिबीरार्थीओने लाई हुई गौतम प्रसादी का रसास्वाद किया ।

लगभग 3.30 बजे दोपहर के सत्र की शुरुआत प.पू. गुरुदेवने की । रात की प्रक्रिया के बारे में समझाया । “मंगलम् भगवान वीरो....” में

मंगल भावना, मैत्री भावना, विश्व कल्याण भावना.... कैसे प्रगट करना इसकी समझ प.पू. गुरुदेवने दी । रातको सोने से पहले यह बार भावना का उच्चारण दिल से करके फिर नमस्कार महामंत्र का जाप करते करते निद्राधीन होना है । हमारे subconscious mind में पूरी रात यही गुंजारव चालु रहता है । तत्पश्चात् शुद्धात्म नमस्कार योग... कैसे करना है यह प.पू. गुरुदेवने समझाया । इसमें हरेक step करते करते हमें Goal की ओर आगे बढ़ना है । हरेक Step भाव के साथ करना है । प्राणमैत्री के सत्र में प.पू. गुरुदेवने प्राण याने क्या ? उसका functioning कैसे है उसकी समझ दी । प्राणशक्ति के साथ कैसे मैत्री करना है वह Practically समझाया । Toxic, Tonic, अनुलोम विलोम (समत्व) और भ्रामरी.... यह चार प्रकार की प्राणमैत्री के पगथिये सभी ने किये । शरीर में ताजगी और शक्ति का अनुभव होता है ।

इस तरह शरीरमैत्री, शुद्धात्म नमस्कार योग और प्राणमैत्री हररोज करना और फिर सुबह की प्रक्रिया, पाँच धून का गुंजारव करने से शारिरीक और आंतरिक शुद्धिकरण होता है । यह पूरी प्रक्रिया करते समय लक्ष “मुझे नहीं होना परेशान” आवश्यक है । इस लक्ष की जागृति सतत रखनी है । वरना यह सब प्रक्रिया जड़ बन जायेगी । इस मार्ग पे चलना है तो यह जागृति अवश्य रखनी है । बहुत ही अर्थपूर्ण ज्ञानात्मक और Practical सत्र था । स्व का स्व की साथ Commitment लेके जीवन को दिव्य और मंगलमय बनाने का यह आनंदमय जीवन के विकास की शिबीर संपन्न हुई ।

**आनंदमय जीवन का विकास की
अद्भूत शिबीर (2015)
Science of Divine Living
Through नमस्कार महामंत्र योग – I
(डॉ.भिवली, सांताक्रुज़, कांटीवली, वडावा)**

संसार व्यवहारमां भाषासने थाय छे के पांच पैसा भेगा थाय अटले सुभ मणे. अटले ते पैसा पाछण दों छे. लक्ष छे सुभ (?). दोंडी दोंडीने पैसा पश भेगा करे छे, तेम छतां सुभ तो न मण्युं. आम थाय छे त्तारे तर्क थाय छे के हुं जे दोंडादोंड करुं छुं ते यथार्थ छे ? जीवनमां शुं missing छे ? आ missing ने जाशवा – समजवा अने अनुभववानो "Practical Workshop – Science of Divine Living Through नमस्कार महामंत्र" नुं आयोजन मुंभईमां डॉ.भिवली, वडावा, सांताक्रुज़ अने कांटीवली मधे थयुं छुंतुं.



પરમ સુખ જીવન વિકાસ કેન્દ્ર દ્વારા આ આયોજન છેલ્લા ૧૧ વર્ષથી પ.પૂ. ગુરુદેવ પંકજભાઈના સાંનિધ્યમાં સફળતાપૂર્વક થઈ રહ્યું છે. પ્રભુકૃપાથી અને પ.પૂ. ગુરુદેવની સ્પષ્ટ, સચોટ અને વૈજ્ઞાનિક વાણીના પ્રભાવથી હજારો શિબીરાર્થીઓએ 'Missing in Life' ને પ્રાપ્ત કર્યું છે. આ 'Missing' ફરીથી miss ન થઈ જાય એ હેતુથી પરમ આનંદ પરિવારમાં જોડાયા છે અને Life ને meaningful બનાવી છે. પરમ સુખ જીવન વિકાસ કેન્દ્રનો આ લક્ષ્ય છે 'જન જન પામે આનંદ'. આ આનંદના તરંગો સૃષ્ટિના જીવે જીવમાં પ્રગટે.

કુલ નવ સત્રમાં આયોજીત આ શિબીર 'આનંદ નામના પ્રદેશ'માં enter થવાની ગુરુચાવી છે.

આ શિબીરની શરૂઆત ડૉંબિવલી અને વડાલામાં તા. ૧૨-૦૭-૨૦૧૫, સાંતાક્રુઝ અને કાંદીવલીમાં તા. ૧૮-૦૭-૨૦૧૫ના થઈ હતી.

પ્રથમ સત્ર જાહેર સત્ર તરીકે આયોજવામાં આવ્યું હતું. જાહેર સત્રના આ આયોજન પાછળ હેતુ લોકોમાં જાગૃતિ - awareness લાવવાનો અને આ શિબીરમાં શું છે તેની રૂપરેખા જણાવવાનો.... પ.પૂ. ગુરુદેવે 'શ્રેષ્ઠ મંત્ર નવકાર...સિદ્ધ મંત્ર નવકાર' આ ગીતગુંજનથી શરૂઆત કરી હતી. સંગીતના સથવારે પ.પૂ. ગુરુદેવના ભાવવાહી સ્વરમાં સૌ કોઈ આ ગીતને માણી રહ્યાં હતાં. જીવન એટલે શું ? આપણે અહીં મનુષ્ય તરીકે આવ્યાં છીએ - શા માટે ? લોકોને પ્રશ્ન કર્યો હતો કે આ શિબીરમાં જોડાવવા શા માટે આવ્યા છો ? વગેરે પ્રશ્નોત્તરી, સાથે સાથે 'જ્ઞાન અને લક્ષ'ની સમજણ આપી હતી. ખૂબજ સરળ અને સચોટ શૈલીમાં 'વાસ્તવિકતા'ની સમજ લઈને સત્ર વિરામ પામ્યું હતું.

પ્રભુકૃપા અને નમો જિણાણાંની ધૂન સાથે ગુરુદેવે બીજા સત્રની શરૂઆત કરતા લોકોને જાગૃત કર્યા, સત્રની ધારામાં વહેતા કર્યા. હું કોણ છું ? હું સમયનો પ્રવાસી છું. અને મારી પાસે ૨૦% ની સ્વતંત્રતા છે. સ્વતંત્ર વિચાર, નિર્ણય અને અમલ જે સૃષ્ટિના બીજા કોઈ જીવ પાસે નથી. ફક્ત મનુષ્ય પાસે જ આ સંપત્તિ છે. આ જ વિશિષ્ટતા આપણને ભગવાન બનવા માટેની પાત્રતા આપે છે. હું સમયનો પ્રવાસી છું આ જ આપણે ભુલી જઈએ છીએ અને પછી હેરાન થઈએ છીએ. હરક્ષણે "મારે નથી થવું હેરાન" પોતાને જ કહેવાનું છે. જીવનને દિવ્ય બનાવવાના પાંચ આધાર ખૂબજ સરળતાથી સંગીતનાં તાલે પ.પૂ. ગુરુદેવે લોકોને સમજાવ્યા હતાં.

૧ લો આધાર : પ્રભુકૃપા -

દરરોજ સવારનાં આંખ ખૂલતાની સાથે પ્રભુ સાથે વાતચીત કઈ રીતે કરવી એની સમજ આપી હતી. એની પાછળનું વિજ્ઞાન સમજાવ્યું હતું. પરમ અસ્તિત્વ સાથે તમારું જોડાણ - connection થાય છે. જે તમને હંમેશા તમારા હિત તરફ જ દોરી જશે.

૨ જો આધાર : નમો જિણાણાં -

પ.પૂ. ગુરુદેવે અહીં ખુલાસાપૂર્વક સમજાવ્યું કે જીવન વ્યવહારમાં આપણે વ્યક્તિ, વસ્તુ, પરિસ્થિતિ સામે ઝઝૂમતા હોઈએ છીએ. આ હેરાનગતિમાંથી મુક્ત થવા માટે વ્યક્તિમાં રહેલા પરમાત્માને વંદન કરી,

હૃદયમાં વિશેષ સ્થાન આપી સ્વીકારભાવ સાથે વ્યક્તિ સાથે વ્યવહાર કરવો. અંતરમાં 'મારે નથી થવું હેરાન' મનમાં નિર્ણય કરવો. આનાથી જગત પ્રત્યે જોવાની દ્રષ્ટિ બદલાઈ જશે.

પ્રભુકૃપા સાથે ત્રીજા સત્રની શરૂઆત પ.પૂ. ગુરુદેવે કરી લોકોને જાગૃત કર્યા હતાં. આગળના session નું revision કરાવતા દિવ્ય જીવનના પાંચ આધારને જીવનમાં day to day life માં apply કરવાનું કહ્યું.

૩ જો આધાર : મારે નથી થવું હેરાન -

પ.પૂ. ગુરુદેવે અહીં સમજાવ્યું કે આ પરમ લક્ષ્ય છે, પરમ મંત્ર છે. દરેક જીવ આ જ ચાહે છે. તેની શોધ આ જ છે. વ્યક્તિનો પોતાનો નિર્ણય છે "મારે નથી થવું હેરાન"... ગમે તે પરિસ્થિતિ હોય, આ લક્ષ્યને સતત જાગૃત રાખવાનો છે. અને બન્ને હાથ ઊંચા કરીને આપણા નિર્ણયની પરમતત્વને જાણ કરવાની છે. આના તરંગ - vibration સમગ્ર સૃષ્ટિમાં જશે. (Determination declared to Prabhu)

૪ થો આધાર : પાંચ ભાવ ધૂનો -

દરરોજ સવારે પ્રભુકૃપા કર્યા પછી પાંચ ભાવધૂનો ગુનગુનાવતા આપણું determination દૃઢ થાય છે. શરૂઆતમાં C.D. નો સહારો લઈ ધીરે ધીરે habbit pattern બનાવતા જવું.

- (૧) બોલ મનવા બોલ મારે નથી થવું હેરાન (લક્ષ ધૂન)
- (૨) નમો જિણાણાં - જિઅ ભયાણાં (સમર્પણભાવ ધૂન)
- (૩) હું સમયનો પ્રવાસી છું, હું સત્ છું, હું ચિત્ છું, આનંદ છું (અસ્તિત્વ ધૂન)
- (૪) તમે ગમે એવા હો, I Love You (મૈત્રી ધૂન)
- (૫) તમે છો અમારા, અમે છીએ તમારા (જીવન સંગીત ધૂન)

આ ધૂનો મોટેથી ગાવાથી ઘરનું વાતાવરણ આનંદમય બનશે. ઘરના બીજા સભ્યો પર પણ આની positive અસર પડશે.

૫ મો આધાર : તમે ગમે એવા હો, I Love You -

પ.પૂ. ગુરુદેવે અહીં સમજાવતાં કહ્યું કે દરેક વ્યક્તિ, વસ્તુ, પરિસ્થિતિને I Love You કહેવું. દરેક જીવમાં પરમતત્વનો અંશ છે. "મારે નથી થવું હેરાન"ની સાથે સાથે I Love You હોય તો જ શુદ્ધિકરણ થાય. આપણી પાસે બીજું કોઈ option જ નથી. હૃદયપૂર્વકનો મૈત્રીભાવ જો દરેક જીવ સાથે પ્રગટ થશે તો જ 'મારે નથી થવું હેરાન' સાર્થક થશે. પૂ. ગુરુદેવે અહીં સમજ આપતા કહ્યું હતું કે આપણામાં અને ભગવાનમાં શું ફરક છે ? એ ગૃહસ્થ હતાં. આપણે પણ ગૃહસ્થ છીએ. એ રાજ્ય ચલાવતા હતાં. બધો જ વ્યવહાર કરતાં હતાં. છતાં એ ભગવાન બની ગયાં અને આપણે ? બસ, ભગવાને સતત 'મારે નથી થવું હેરાન', 'I Love You' આ જ Chemistry નું વલોવણ કર્યું અને ભગવાન બની ગયા. સાડાબાર વર્ષ અંતરમાં આ જ મંત્રની Chemistry બનાવી પરમ અંશનો સાક્ષાત્કાર કર્યો. આપણે પણ આની habbit, આદત પાડવાની છે. પરમ મુક્તિનો આ જ એક મંત્ર છે, રસાયણ છે. અહીં. પ.પૂ. ગુરુદેવે સૌને appeal કરતાં કહ્યું કે આને ખરેખર જીવનમાં ઈમાનદારીપૂર્વક



લાવજો, અપનાવજો... અને જીવનને દિવ્ય મંગલધામ બનાવજો. સૌ શિબીરાર્થીઓ મંત્રમુગ્ધ બનીને આ વાણીને માણી રહ્યાં હતાં અને મનોમન આ રીતે જીવન જીવવાનો નિર્ણય કરતાં છૂટા પડ્યાં.

પ.પૂ. ગુરુદેવે ચોથા સત્રની શરૂઆત પાંચ ધૂન - સંગીતના સથવારે ગુનગુનાવી. સૌ સંગીત અને ધૂનની ધારામાં વહેવા લાગ્યાં હતાં.

પ.પૂ. ગુરુદેવે મંત્ર એટલે શું? એની વૈજ્ઞાનિક સમજ આપી. મંત્ર 100% Pure છે. અમુક જ શબ્દો મંત્રનું સ્વરૂપ ધારણ કરે છે એની સુંદર છણાવટ - સમજણ આપી. તેમાં નવકારમંત્રને મહામંત્ર શા માટે કહે છે તેની સમજ આપી. પરમ ઈષ્ટ તત્વ સાથે કેવી રીતે tuning કરવું તે સવારની પ્રક્રિયામાં ચાર શરણા, નવપદ સ્તુતિમાં સમજાવ્યું. પ.પૂ. ગુરુદેવે ચાર શરણાની વૈજ્ઞાનિક સમજ આપતાં કહ્યું કે ચાર પરમ મહાતત્વ આ સમગ્ર સૃષ્ટિમાં છવાયેલા છે. તે આપણી પર કૃપા કરવા તૈયાર જ બેઠા છે. બસ આપણું receiver આપણે એમની frequency level માં આવે એનું જ tuning કરવાનું છે. આ સવારની પ્રક્રિયા એ પરમતત્વ સાથે tuning કરવાનો process છે. અંતરના ઉંડા ભાવથી આ મહાતત્વ સાથે જો દરરોજ tuning કરીશું તો આપણું હિત થવું નિશ્ચિત જ છે. અને સૌ કોઈ ચતારિ મંગલમ્, કેવલિ પન્નો ધમ્મો મંગલમ્...ના ઉચ્ચારણ અને ભાવમાં લીન બની ગયાં. ત્યાર બાદ નવપદ સ્તુતિનો સંગીતના સથવારે પ.પૂ. ગુરુદેવ સાથે ગુંજન કર્યું. ખૂબજ ભાવાત્મક અને જ્ઞાનાત્મક session હતું.

પાંચમાં સત્રની શરૂઆત પ્રભુકૃપા સાથે પ.પૂ. ગુરુદેવે કરી. ભાવધૂનોને ગુંજાવી સૌને ધારામાં લાવ્યા. શ્વેત પ્રકાશની પ્રક્રિયાની ખૂબજ સુંદર સમજ આપી. આ શ્વેત પ્રકાશની પ્રક્રિયા એ વૈજ્ઞાનિક પ્રક્રિયા છે. વર્તમાનમાં હમણાં હાજર જીવિત તીર્થંકર શ્રી સીમંધર સ્વામીનું જોડાણ આપણાં અસ્તિત્વ સાથે કરવાનો આ દિવ્ય પ્રયોગ છે. જે આપણાં શરીરના level, પ્રાણના level, મનના level અને ચિત્તના level પર શુદ્ધિકરણ કરે છે. સૌ કોઈ આ પ્રક્રિયામાં લીન થઈ પોતાનું શુદ્ધિકરણ કરતાં ગયાં. આ પ્રક્રિયા પત્યા પછી તરતજ નમસ્કાર મહામંત્રના ભાષ્ય જાપ કર્યાં. સૌ કોઈ આ જાપમાં પ્રભુની કૃપા સાથે શુદ્ધિકરણ પણ કરતાં ગયાં. અહીં પ.પૂ. ગુરુદેવે કહ્યું કે આ આખી સવારની પ્રક્રિયા દરરોજ અનુષ્ઠાનપૂર્વક કરવી. પછી પ.પૂ. ગુરુદેવે અનુષ્ઠાન એટલે શું તેની સમજ આપી. આસન, સમય, દિશા, ક્રિયા અને ભાવની સમજ આપી. પ.પૂ. ગુરુદેવે કહ્યું કે પ્રભુ પાસે (૧) સદ્વિનયની કૃપા માંગવાની. જેમની સાથે રહેતા હોઈએ તેમના પ્રત્યે વિનય, અહોભાવ પ્રગટ થવો જોઈએ તો જ જીવન જીવવા જેવું લાગશે. બીજું (૨) દરેક જણને thank you કહેવું. Love, Care & Share દરેક જીવ સાથે આ પ્રમાણે જતનાપૂર્વક વ્યવહાર કરવો. હાલતાં, ચાલતાં આ જ ધારા વહે. (૩) પાતા પીતા આપણે ત્રણ જણને આર્શિવાદ આપી શકીએ છીએ. (અ) આપણી થાળીમાં પીરસાયેલ આહારના જીવોને (બ) જેમના નિમીત્તે આહાર મળ્યો એ અસંખ્ય જીવોનો સાથ અને મહેનત થકી આ આહાર મળ્યો. (ક) જેમણે પીરસ્યું છે, જેમણે finally બનાવ્યું છે, તેમને. આ ત્રણે પ્રકારે તમે આર્શિવાદ આપી શકો છો. આપણને પણ

કોઈએ આવા આર્શિવાદ આપ્યા છે ત્યારે હમણાં આ મનુષ્ય સ્ટેશન સુધી પહોંચી શક્યા છીએ. આ એક દિવ્ય step છે. આહાર દ્વારા જીવનને દિવ્ય બનાવવાનો... આ નવીન સમજણ સાથે પાંચમું સત્ર પુરું થયું.

છઠ્ઠું, સાતમું, આઠમું સત્ર એક જ દિવસે સવારના ૯.૩૦ થી સાંજે ૮.૦૦ સુધી આયોજવામાં આવ્યું હતું.

સત્રની શરૂઆતમાં શરીર મૈત્રી એટલે શું અને કેવી રીતે કરવી એનું Practical demo સાથે દરેક step ની આપણા શરીરના કયા અવયવ પર અસર થાય છે તેની ઝીણવટપૂર્વક, ખૂબજ સરળતાથી સેવક શ્રી નીતીનભાઈએ સમજ આપી હતી. બધાજ શિબીરાર્થીઓ ખૂબજ ધીરજ અને લગનથી આ સત્રમાં જોડાયા હતાં. શરીરનાં દરેક અંગો સાથે મૈત્રી સાધતા ત્યાં રહેલા tension pressure થી કેવી રીતે મુક્ત થઈ શકીએ તેની સમજ નીતીનભાઈએ આપી હતી. લોકોના શરીર સંબંધી પ્રશ્નોના ખૂબજ સરળતાપૂર્વક જવાબ આપ્યાં હતાં. લગભગ ૨.૦૦ વાગે સત્ર પુરું થયું. બધા શિબીરાર્થીઓએ લાવેલ ગૌતમ પ્રસાદીનો સ્વાદ માણી પાછા બીજા સત્ર માટે તૈયાર થઈ ગયાં.

લગભગ ૩.૩૦ વાગે બપોરના session ની પ.પૂ. ગુરુદેવે શરૂઆત કરી. રાત્રીની પ્રક્રિયાની સમજણ આપી. મંગલમ્ ભગવાન વીરો... માં મંગલ ભાવના, મૈત્રી ભાવના, વિશ્વ કલ્યાણ ભાવના કેવી રીતે પ્રગટ કરવી તેની ખૂબજ સુંદર સમજણ આપી. રાત્રીના છેલ્લે સૂતા પહેલા આ બાર ભાવનાના હૃદયપૂર્વક ભાવથી ઉચ્ચારણ કર્યા પછી જાપ કરતાં કરતાં નિદ્રા આધીન થતાં તમારા subconscious mind માં આ જ દિવ્ય ગુંજારવો થાય છે. રાત્રી પ્રક્રિયાની સમજ આપ્યા પછી શુદ્ધાત્મા નમસ્કાર યોગને સમજાવતાં પ.પૂ. ગુરુદેવે આ યોગમાં દરેક step સાથે પોતાના નિર્ણય - લક્ષને declared કરવાના છે. ભાવ જોડવાનો છે. યાંત્રિક રીતે ન કરતાં ભાવ જોડીને કરવાથી આ નમસ્કાર યોગ શરીર સાથે ભાવમાં પણ નિર્મળતા લાવે છે. પ્રાણ મૈત્રીના session માં પ.પૂ. ગુરુદેવે પ્રાણ એટલે શું, તેનું functioning કેવી રીતે છે? તેની સમજ આપી હતી. આ પ્રાણ શક્તિ સાથે કેવી રીતે મૈત્રી કરવી તે Practically કરીને સમજાવ્યું હતું. Toxic, tonic, અનુલોમ વિલોમ (સમત્વ) અને ભ્રામરી - આ ચાર પ્રકારનાં પ્રાણ મૈત્રીના પગથિયા સૌએ સાથે મળીને કર્યાં. શરીરમાં તાજગી અને શક્તિનો અનુભવ થાય છે. આમ શરીર મૈત્રી, શુદ્ધાત્મ નમસ્કાર યોગ અને પ્રાણ મૈત્રી દરરોજ નિયમસર કરવાથી અને તે પછી સવારની પ્રક્રિયા કરવાથી શારિરિક અને આંતરિક શુદ્ધિકરણ થાય છે. વિકાસ થાય છે. આ સમગ્ર પ્રક્રિયામાં લક્ષની હાજરી હોવી જરૂરી છે. 'મારે નથી થવું હેરાન' આ સતત હાજર રહેવું જોઈએ. નહિ તો આ બધી પ્રક્રિયાઓ જડક્રિયા બની જશે. આટલી જાગૃતિ આ માર્ગ પર ચાલનારાએ અવશ્ય રાખવાની છે. ખૂબજ અર્થપૂર્ણ, Practical અને જ્ઞાનાત્મક આ session રહ્યું હતું. સ્વનું સ્વ સાથે commitment લઈ આ જીવનને દિવ્ય અને મંગલમય બનાવવાના આ સમગ્ર workshop ની અહીં પૂર્ણાહુતી થઈ હતી.



શ્રી નવરાત્રી આરાધના શ્રી નવપદ (જ્ઞાન) સાધના - શ્રી સિદ્ધચક્ર યંત્ર પૂજન અનુષ્ઠાન (શહાપુર, માનસ મંદિર - આસો નવરાત્રિ, ચૈત્રી નવરાત્રિ)

સિદ્ધચક્ર પૂજન કરતાં મનમાં આનંદ અને આત્મા નિર્મળ પણે વહી રહ્યો હતો. પૂજન દરમ્યાન જે રીતે પૂ. પંકજભાઈએ પૂજન કરાવ્યું એમાં નવીનતા હતી અને સાથે સાથે એક દિવ્ય અનુભૂતિ હતી. જાણે આદિનાથ દાદા, સમસ્ત દેવી-દેવતાઓ હાજરાહજુર અનુભવાઈ રહ્યાં હતાં. “મુજે નહીં હોના પરેશાન”, અભય અને અરિહંત અરિહંતની ધૂન કરતાં આનંદનાં જાણે મોજા ઉછળી રહ્યાં હતાં. એક દિવસનો આ દિવ્ય પૂજન પૂ. પંકજભાઈ માટે માન અને શ્રદ્ધા જગાવનાર બની ગયો. T.V. ઉપર તો ઘણી વખત સાંભળ્યા હતાં પણ આજે પહેલીવાર પૂ. પંકજભાઈને સાક્ષાત જોયા. હવે આગળ સત્સંગમાં જોડાવવાનો મન બનાવી લીધો છે. આજનો દિવસ ખૂબ ફળદાયી અને આત્માને જગાડનાર સાબિત થયો. ‘આપ જેસે ભી હો, I Love You’ નો મંત્ર પ્રેમની unconditional condition બતાવે છે. કે તમે પ્રેમ કરો તો એ કયા પણ પ્રકાર કે સંબંધનો હોય પણ unconditional કરો અને જીવમાત્રથી કરો. સર્વ ભાઈ-બહેનો અને પૂજનીય પંકજભાઈને મારા નમો જિણાણં.

Vijay Deepak Maru - 09869606400

A very good experience. As I am a college student I feeled very interesting. Till now I haven't been in contact with such programme. But after attending this programme, I feeled nice. And I am sure I will likely to attend such programme again.

Twinkle Gada

સિદ્ધચક્ર પૂજન આજ બહુત અચ્છા લગા । નવકાર મંત્ર સે મન કી શાંતી કે લિએ મુઝે નહીં હોના પરેશાન, ચાહે કુછ મી હો હમે અપને હાલ પર રહના ઓર સાધના કરતે રહના હૈ । ઇસસે હમ સબ કુછ સંસાર કી પરેશાની મુલકર સાધના સે જીવન મેં શાંતી કી ઓર અગ્રસર હોના હૈ । યહ બહુત હી અચ્છા લગા ।

સરોજબેન જવેરચન્દ જૈન - 8652000796

શ્રી સિદ્ધચક્ર યંત્ર પૂજન કરવાથી ભાવ દ્વારા ભગવાન સાથે મિલન કરવામાં સરળતા રહે છે. તેનાથી નકારાત્મક પરમાણુનો નાશ થાય છે અને જીવનમાં વ્યવહાર રાખવામાં સરળતા રહે છે.

Ramesh M. Shah - 9820319961

Namo Jinanam

Trully Awesome. સરસ ભાવસભર પૂજન રહ્યું. દિવસ પૂરો ન થાય એવું લાગવા લાગ્યું. હજુ પણ પૂજન ચાલુ જ રહે, માણ્યા કરીએ. હજુ પણ આવા programme રાખશો એવી અભ્યર્થના. Music સાથે જોશસભર ખરેખર ભાવ આવી ગયા. આનંદ ક્યારેય ભૂલાશે નહી. ખરેખર વારંવાર કરવાથી સમજ આવી જાય, જ્ઞાન આવી જાય.

Bhavana V. Worah - 7666946836

Good feeling for understand of Divine Living and got knowledge for poojan of Shree Siddha Chakra Yantra.

Moreover we understood what is Navkar Mantra and their steps in detail.

How to live with others.

What should we answer to other.

Virendrabhai Kothari - 9021901865

સિદ્ધચક્ર યંત્ર પૂજન પહેલીવાર attend કર્યું પરંતુ પૂજન સાંભળીને ઘણું જ જાણવા મળ્યું. દરેકે દરેક પદને વિસ્તારથી અને સંગીત સાથે સાંભળી ઘણું જાણવા મળ્યું. જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, સાધુ, ઉપાધ્યાય, આચાર્ય, અરિહંત અને સિદ્ધ.... દરેકે દરેક પદની વિસ્તારથી સમજ પડી અને સાથે મંત્ર જાપ કર્યા તો ઘણું જ સારું લાગ્યું.

Meena D. Nagda - 8080108040

નમો જિણાણં

પ.પૂ. શ્રી પંકજભાઈના સાંનિધ્યમાં નવપદ આરાધનામાં શ્રી સિદ્ધચક્ર યંત્ર પૂજન અનુષ્ઠાન મેં life માં first time કરી. તેમાં પૂ. ગુરુદેવે સમર્પણ ભાવના ૧૫ પગથિયા, શ્રી સીમંધર સ્વામી વિશે જે સમજાવ્યું તેમાં ૬ દેવીના પગથિયા, ૪ જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપના પગથિયા અને ૫ પગથિયા પંચ પરમેષ્ઠિના.... આવું અનુષ્ઠાન મેં first time સાંભળ્યું. તે દિલને touch કરી ગયું. મન એકદમ શાંત થઈ ગયું. જેમ ‘ધર્મનું મૂળ વિનય છે’ તેમ પૂ. ગુરુદેવનો વારંવાર સત્સંગ કરવાનું મન થઈ જાય. ધર્મ, નવકાર વગેરેની તેમની સમજાવટ છે તે હૃદયને સ્પર્શી જાય એવું છે. આમાં meditation માં બેસી જઈએ અને પૂ. ગુરુદેવનું પ્રવચન સાંભળતા જ રહીએ... ઉઠવાનું મન ન થાય તેવું હતું.

Chetan V. Shah - 9820028380

બહુજ આનંદ થયો. બહુજ સુવ્યવસ્થિત હતું. પાંચ કલાક બેઠાં પણ જરાયે કંટાળો ન આવ્યો. એમાં મેઘરાજાના અમી છાંટણા થયાં ને વાતાવરણ જાણે મહેકી ઉઠ્યું. Time limte ને લીધે સમેટી લેવું પડ્યું. પણ જરાય ક્યાંય થાક વર્તાતો નહોતો. સહકુટુંબ સિદ્ધચક્ર મહાપૂજનને માણ્યો એ અત્યંત આનંદની વાત છે. નકારાત્મક વિચારોથી મુક્ત થઈ અને સિદ્ધ પદ કેમ પ્રાપ્ત કરવું એ અનોખી યાત્રા તરફ પ્રયાણની શરૂઆત થઈ. ખૂબ સુંદર... અતિ સુંદર... !

શાન્તાબેન ગુલાબચંદ - 24141997

શુભેચ્છક :

અંક : ૩૨ / જૂન-૨૦૧૬

૧૭

રોજ થોડો સમય પોતાને મળો.

નમો જિણાણં



Management of team is good & nice. Siddhachakra Yantra Poojan experience also good in life first time & explain by P.Pu. Pankajbhai in soft and simple language is also good experience of life. We also joint next time in this programme.

Hitesh Jethalal Furia - 9892299807

અદ્ભૂત કાર્યક્રમ રહ્યો. ખાસ કરીને અરિહત તથા સિધ્ધના જાપ અલૌકિક હતા.

જ્યારે પંચપરમેષ્ઠિની ભક્તિનો સમય હતો ત્યારે જાણે કુદરત પણ સાથ આપતી હોય તેમ બારે મેઘ વર્ષા હતી.

Thank you sir. ૧૫ દિવસના programme ની મજાની સામે આ ફક્ત synopsis હતું. છતાં પણ પહેલા programme attend કર્યા હોવાથી ખૂબ deep understanding થઈ.

Thank You.

Purnima Shah - 9833514085

હું પ્રથમ વખત 'નમો જિણાણ'માં આવી છું. મેં આના વિશે ઘણું સાંભળ્યું હતું. પણ હું આવી એટલે મને કાંઈક અલગ અનુભવ થયો. બસમાં બેઠી ત્યારથી મને ઉત્કંઠા હતી કે કાંઈક નવું અને અલગ હશે. અને ખરેખર અહીં આવ્યા પછી આ વાતાવરણ મને બહુ ગમ્યું. "શ્રી સિધ્ધચક્ર"ની આરાધના મેં પણ ઘણીવાર કરી છે પણ અહીં સમજણપૂર્વકની આરાધના મને બહુ ગમી. મારી આખી યાત્રા ઘણી સરસ રહી અને સમયનો સદ્ઉપયોગ થયો છે. મને આ મંત્ર "I Love You" બહુ ગમ્યું છે અને મેં નક્કી કરી લીધું છે કે કોઈ સાથે કોઈ પણ પરિસ્થિતિમાં હું આ મંત્ર સામેવાળાને કહીશ. અહીં આવ્યા પછી મને ઘરની જરા પણ યાદ આવી નહીં. અને મારો આજનો આખો દિવસ આરાધનામય ગયો છે. હું બધાનો ખૂબ આભાર માનું છું.

Hema S. Nandu

હું આજે પ્રથમ વખત 'નમો જિણાણ' સાથે આવી છું. પહેલાં એના વિશે ઘણી વખત સાંભળ્યું હતું. આજે એની સાથે જોડાઈને બહુ મજા આવી. દરેક ચીજનું આયોજન સરસ હતું. સિધ્ધચક્ર યંત્રનાં પૂજનમાં બેસીને અહીંયા ઘણી 'સમજણ' મળી. બધું અર્થ સાથે સમજાવવામાં આવ્યું. આ આખી યાત્રા બહુ ભાવપૂર્વક થઈ. આજના દિવસમાં ઘણું શીખવા મળ્યું. આખો દિવસ આરાધનામય ગયો.

Aruna K. Savla - 9869522906

મેં સિધ્ધચક્ર યંત્રની આરાધના ઘાટકોપરમાં કરી હતી પણ શાહપુરમાં હું પહેલી વાર આવી. અને જેવો હોલમાં પ્રવેશ કર્યો અને જેવું પૂ. ગુરુજીએ જે ભાવ કરવા કીધાં એ ભાવ કરતાં કરતાં મને યંત્ર પર સિધ્ધચક્ર પૂજન કરવાના ભાવ થયા અને યંત્ર પર મારું ભાવપૂર્વક પૂજન થયું. અને જ્યારથી શહાપુર જવાનું નક્કી થયું ત્યારથી મેં મારા ભાભી, બહેન બધાને આવવાની પ્રેરણા કરી અને એમણે પણ હા પાડી. અને એમને પણ આ યંત્ર પર

બેસવાનો લાભ મળ્યો. આ બધી પ્રભુકૃપા અને ગુરુની કૃપા છે.

Tarla Vora - 9967001796

શ્રી સિધ્ધચક્ર યંત્ર પૂજન અનુષ્ઠાન આ પહેલા ન કોઈ વખત જાણ્યું અને માણ્યું છે.

પહેલી વખત શ્રી મુખેથી શ્રી સિધ્ધચક્ર પૂજન અને પંચપરમેષ્ઠિ ભગવંતની સાથે આપણે કેવી રીતે આત્મીયતા અને આરાધના કરી શકીએ તેની સાધના આરાધના દૃઢયસ્પર્શી, સરળ અને આનંદથી કરી. 'નમો જિણાણ'ના સરળ, સેવાતત્પર કાર્યકર્તાને જોઈને આનંદ થયો. પ.પૂ. શ્રી પંકજભાઈને આવા કાર્ય મોટા પાયે ઉપાડવાનું અને વધારેમાં વધારે લોકો જોડાય એવી મારી દૃઢયની ભાવના છે. તમારી ભગવાન પ્રત્યેની પ્રેમની સરળ વાત લોકોના દૃઢયની અંદર ઉતરી જાય છે.

ઉદય શાંતીલાલ ધુલ્લા - 8655592100

It was a pleasant experience attending this yatra.

Yatra was managed very well & gained lot of knowledge from explanation given in the Sidhachakra Poojan.

Kajal Savla - 24719850

નવરાત્રી આરાધના ઓર નવપદ સાધના કા અનુભવ બહોત હી અદ્ભુત હૈ । એસા અનુભવ પહેલે કમ્પી મી નહી હુઆ । સિદ્ધચક્ર યંત્ર કા પૂજન વાસક્ષેપ કે સાથ મી અદ્ભુત હૈ । ઇસસે વિરતિ ભાવ આતા હૈ । નવરાત્રી મેં પહેલે છહ દિન દૈવીઓં કા પૂજન કિયા ઇસસે આરાધના ભાવ આયા । અસુરી શક્તિ પર વિજય પાના શિખા । જ્ઞાન, તપ, દર્શન, ચારિત્ર કા સમ્યક્ જ્ઞાન મિલા ।

અપને જીવન મે ઉપયોગી જ્ઞાન મિલા । અપને ઘર કે વાતાવરણ મેં અદ્ભુત change આયા । જાપ ઓર મંત્ર કા જ્ઞાન મિલા । ભાવસે હમ હમારે દોષો પર કેસે વિજય પા સકતે હૈ યહ simple તરીકે સે શિખા । એસી આરાધના ઓર સાધના સાલ મે દો બાર કરની હી વાહિયે । ઇસસે હમારા જીવન change હો જાતા હૈ । હમારા અનુભવ અદ્ભુત રહા ।

નયના કેતન શાહ - 9987667986

Feeling of both "Happiness" & "Regret". Happiness for the infinite knowledge received in a simplistic & scientific way.

Regret for not receiving the above in earlier part of my life when it was most required.

But it is said : "Better late than never" – as the timing of each & everything in our life is pre-determined by the Lord.

So any regrets are in a way "Blessings in disguise" which have paved the way for Happiness in the present.

Ketan Shah - 9987184011



નમો જિણાણં

“ઓમ મંગલમ્ ઓમકાર મંગલમ્,
ગુરુ મંગલમ્, ગુરુ કૃપા મંગલમ્ ॥

ઘણા વખતથી શ્રી સિદ્ધચક્ર યંત્ર ઘરે પધરાવવાના ભાવ હતા. પણ શક્ય થતું ન હતું. આ વર્ષે પ્રભુકૃપા, સદ્ગુરુની કૃપાથી શ્રી સિદ્ધચક્ર યંત્ર ઘરે પધરાવવાનો લાભ મળ્યો.

પોતાના સ્વયંના યંત્ર સાથે આરાધના, સાધના કરતાં ઘણી સારી અનુભૂતિ થઈ. ડૉબિવલીથી પારલા ટ્રેનમાં એકલા આવતાં મંત્રનું મનનચિંતન કરવાનો લ્હાવો પણ અલગ જ હતો. ભીડમાં પણ એકલતા (ફક્ત હું)ની અનુભૂતિ થઈ. સદ્ગુરુની કૃપાથી હું આધ્યાત્મિક માર્ગમાં આગળ વધું એજ પ્રભુ પાસે વિનંતી. મારું, મારા પરિવારનું અને સર્વ જગતનું કલ્યાણ મંગલ થાઓ.

નમો જિણાણં

Priti B. Savla - 9820944517

Namo Jinanam

શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાયંત્ર લેવાનું નક્કી કર્યું સાથે 15 દિવસની સાધના કરવા માટેની પ્રતિકુળતાઓ આવી. 15 દિવસ દરરોજ આવવાનું શક્ય નહતું. પણ પ્રભુને કહી દીધું હતું મને દરરોજ પહોંચાડજે. શ્રદ્ધા સાથે યંત્રને લઈ લીધું ને હું દરરોજ પહોંચી શકી. વચ્ચે તબિયત બગડી ગઈ તો પણ દરરોજ પહોંચવું શક્ય બન્યું. સાધના કરતાં કરતાં ઘણી જ Negativity નીકળી ગઈ. વગર મહેનતે શુદ્ધિકરણ રોજ થતું ગયું. આંતરિક સાધનામાં ઘણું આગળ વધાયું. પૂ. ગુરુદેવે સમજાવ્યું કે લાગણીયકને કચરાપેટીમાં નાંખવાનું છે અને એ decision લઈ લીધું અને બધા સાથે “તમે ગમે તેવા હો, I Love You” માં રહેવાનું પુરૂષાર્થ કરવાનું decision લઈ લીધું.

Alpa H. Gala - 9867811291

સિદ્ધચક્ર યંત્ર પૂજનના 15 પગથિયા (steps) સિદ્ધ બનવા માટેના છે. એ 15 steps નું પૂજન કરતાં કરતાં મારી અંદરથી નકારાત્મકતા (દોષ) ઓછી થઈ રહી છે. હેરાનગતિ ઓછી થઈ રહી છે અને આનંદનો અનુભવ વધી રહ્યો છે. એવો અનુભવ થઈ રહ્યો છે.

સિદ્ધ બનવા માટેના 15 steps મારા રોજના જીવનમાં વણાઈ જાય એનો શ્રમ મારે કરવો છે. ધીરે ધીરે મારામાં રહેલાં દોષો જરૂર ઓછા થશે એવો મને 100% વિશ્વાસ છે. આ એક અદ્ભૂત પૂજન છે અને સંપૂર્ણ વૈજ્ઞાનિક છે.

Jayantilal K. Savla - 9821683896

Namo Jinanam

Get one more opportunity to connect to the Higher self. It was a very Blissful Navpad Sadhna. During the sadhna I came to realise more of my short commings & with help of "GURUDEV" & in presence of Simandhar

Swami & the divine Siddhachakra Mahayantra & with the divine blessings of "Adhya-Shakti" I was able to overcome many of my fears & Negative thought process.

I wish that whatever realisations I had in this "Navpad Sadhna" Be a permanent life turning impression on my innerself & wish the same for all the Sadhaks & all people faltouring this Jin marg attain the same.

Thank you "GURUDEV" for your unconditional and Indisvimate Love & Affection showed continously on us.

Girish Vira - 9594853875

Namo Jinanam

હું પ્રથમ વખત શ્રી નવરાત્રી નવપદ આરાધનામાં આવ્યો છું. નવરાત્રી સાધના આટલી સરળ અને પ્રભુને પામવાનો માર્ગ છે. જે મને ખબર ન હતી. પંદર દિવસની આરાધનામાં શ્રી મહાકાલી માતા, શ્રી દુર્ગા મા અને શ્રી મહાલક્ષ્મીની જ્ઞાન આરાધનાથી મારામાંથી અસુરી શક્તિનો નાશ થયો તેમજ સુરી શક્તિનું આહ્વાન કરતાં મારા જીવનને એક નવો માર્ગ મળ્યો. સમ્યક્ જ્ઞાન, સમ્યક્ તપ, સમ્યક્ દર્શન, સમ્યક્ ચારિત્રનો માર્ગ પુલ્લો થયો અને પ્રભુની કૃપાથી સાધુપદની યાત્રાનો પ્રારંભ થયો અને સિદ્ધ પદ સુધીની યાત્રા સંપૂર્ણ થઈ. મારા જીવનમાં અરિહંત બનીસ અને મારું જીવન પ્રભુને આત્મ સમર્પણ કરીને પ્રભુ પાસે કૃપા માંગવાની છે. ગમે ત્યાં હું જાઉં પ્રભુની અને સદ્ગુરુની કૃપા હંમેશા મારી સાથે રહે અને આ માર્ગમાં હંમેશા પ્રભુકૃપા સાથે રહું. ‘નમો જિણાણં’ની ધૂન 24 x 7 મારી સાથે રહે એવી પ્રભુને વિનંતી કરીશ.

Alpesh P. Mamania - 9820162699

શ્રી સિદ્ધચક્ર યંત્ર લેવાની ભાવના થઈ. પૂ. ગુરુજીને નિર્ણય લીધો છે તે વાત કરી. પણ રૂપિયાનું આયોજન ન હતું. ગુરુજીએ કીધું થઈ જશે અને રૂપિયાનું આયોજન થઈ ગયું. અને યંત્ર સાથે આરાધનામાં બેઠી. અને ૧૫ દિવસ સહજ અને શાંતિથી આવવાનું થયું. મંત્ર સાથે બેસીને ખૂબજ આનંદ થયો. ૧૫ દિવસ સતત આરાધના ક્યારેય નથી થઈ. જીવનના પ્રશ્નોના જવાબ મળતા ગયા. પહેલો દિવસ પછી બીજો દિવસ, ત્રીજો દિવસ એમ ઉત્તરોત્તર આનંદ વધતો ગયો. શાસ્ત્રોના શબ્દનો અર્થ પૂ. ગુરુજીએ બહુજ સરળ ભાષામાં સમજાવ્યું તે કદીયે નહતું સાંભળ્યું. અદ્ભૂત લ્હાવો હતો. આનંદને feel કરી શકું છું પણ શબ્દમાં વર્ણવી નથી શકતી. “સીમંધર સ્વામી”ની સાક્ષાત હાજરી અનુભવી. તેમાં મહાવીર જન્મકલ્યાણકનો દિવસ તો અદ્ભૂત હતો. તે દિવસે તો હોસ્પિટલ તેમજ બાલિકાઓના આશ્રમમાં મુલાકાત બાદ જીવનમાં કંઈ જ ફરિયાદ ન રહી. “અરિહંત પરમાત્મા” પ્રત્યેનો અહોભાવ વધતો ગયો. વિશ્વાસ વધતો ગયો. આ પંદર દિવસની અદ્ભૂત યાત્રા હતી. જેનું શબ્દમાં વર્ણન કરવું અશક્ય છે.

“હે પ્રભુ ! સૃષ્ટિમાં જેટલા જીવો છે સર્વેનું મંગલ થાઓ.”

ઈન્દુ શાહ - 25619772

શુભેચ્છક :

જે પોતાને યાદતો નથી તે અન્ય કોઈને યાદી શકતો નથી.



આ ચૈત્રી નવરાત્રી આરાધનામાં પહેલા લગભગ ૩ દિવસ તો હું કામને હિસાબે આવી નહોતો શક્યો. લગભગ ચોથા દિવસથી મેં આવવાનું શરૂ કર્યું. અહીં આવ્યા પછી પૂ. પંકજભાઈના પ્રવચન સાંભળવામાં ખૂબજ જાણવા મળ્યું. પૂ. પંકજભાઈ હસતાં હસતાં ખૂબ જ સરસ રીતે સમજાવે છે અને point to point દાખલા સાથે સમજાવે છે. અને તેમાં ખૂબજ દિવ્ય જ્ઞાનની અનુભૂતિ થાય છે. અને એકદમ સરસ આધ્યાત્મિક આનંદ મળે છે. અને તેમના કહેવા પ્રમાણે સવારે શ્રી સીમંધર સ્વામી અને અરિહંત પરમાત્માને પ્રાર્થના કરીને તેમને મારું સર્વસ્વ સોંપીને પ્રાર્થના કર્યા પછી તેમની આપેલી ધૂનો બોલીને પછી આખો દિવસ એકદમ સરસ જાય છે અને ધારેલા બધા કામો સરસ રીતે થઈ જાય છે. કોઈપણ કામમાં રૂકાવટ નથી આવતી ખૂબજ આધ્યાત્મિક આનંદ મળે છે. છેલ્લા લગભગ ૮ દિવસ તો રાત્રે ૮ થી ૮.૧૫ થાય તો એમ થાય કે જેમ બને તેમ જલ્દી જમીને અહીં પહોંચી જાઉં.

જયંત પી. પંચમીઆ – 9769941232

નકારાત્મકતાથી શરૂ થયેલી યાત્રા સંપૂર્ણ શુદ્ધ ચૈતન્ય સુધી પહોંચાડી દે છે. મહાકાલી, દુર્ગા, મહાલક્ષ્મી, સરસ્વતી દેવીની કૃપા સતત વહેતી વાણીમાં તથ્યો સમજાતા જાય છે. પરમ જ્ઞાન “મારે નથી થવું હેરાન” પર વારંવાર ચોટ કરવામાં આવે છે અને જ્ઞાન-દર્શન-તપ-ચારિત્રની સરવાણી વહેતી વહેતી ઉપાધ્યાય-આચાર્ય-અરિહંત સુધી લઈ જાય છે. Total surrender કરવાથી બધા જ દુઃખ-દર્દ નાશ જ પામે છે. Positive Cycle ચાલુ થાય છે. હવે તુ જ છે, હું છું જ નહીં મેં સંપૂર્ણ surrender કરી દીધું. આ ભક્તિની ઉચ્ચતમ ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થા સુધી સંગીત-મંત્રોચ્ચાર દ્વારા લઈ ગયા. શ્રી સિદ્ધચક્ર યંત્રમાં જે શક્તિ મંત્રોચ્ચાર દ્વારા પ્રસ્થાપિત કરવામાં આવે છે અને શ્રદ્ધાથી એને શક્તિ સ્વરૂપ બનાવવામાં આવે છે. તે ખરેખર આ અનુભવ ખૂબજ સુંદર રહ્યો. મંત્ર, શુદ્ધ ભાવ અને સંપૂર્ણ સર્મપણ result લાવે જ છે. બધાની energy તમને શુદ્ધ બનાવવામાં સહાય કરે છે.

Uma Suresh Shah - 9167060069

શ્રી ચૈત્ર નવરાત્રી આરાધના શ્રી નવપદ જ્ઞાન સાધના અને શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાયંત્ર પૂજન એ ત્રણે એક બીજાથી કેવા સંકળાયેલા છે અને આપણને કેવા સહાયક છે એની સમજ પૂ. શ્રી પંકજભાઈએ બહુ જ સારી રીતે સમજાવી.

પંદર દિવસ સુધી સાધનામાં અને ભક્તિરસમાં એવા તરબોળ કરી દીધા કે દિવસ દરમિયાન એ જ ગુંજ્યા કરે. ફક્ત આટલું જ નહીં પણ Practice માં કેમ મૂકી શકીએ એ પણ સમજણમાં આપ્યું. નવરાત્રી આરાધનાથી Divine શક્તિ કેમ પ્રાપ્ત થાય અને તેનો ઉપયોગ નવપદ જ્ઞાન સાધનામાં કેવી રીતે કરવો તે બતાવ્યું. આ સાધના શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાયંત્રના પૂજન વડે આપણને હંમેશા યાદ અપાવે છે એ સમજાવ્યું. આ પ્રમાણે જો સાધના કરીએ તો સજગતા, સરળતા અને નમ્રતા આવ્યા વગર રહે નહીં.

નમો જિણાણં

Madhukant M. Lakhani - 9322306656

પરમ પૂજ્ય શ્રી ગુરુદેવને કોટિ કોટિ પ્રણામ. એમના સાનિધ્યમાં રહીને ઘણું શીખવા મળ્યું, જાણવા, અનુભવવા મળ્યું છે. મારી life માં આજ સુધી ક્યારેય આવો અનુભવ થયો નથી. આવા શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાયંત્રના પૂજનમાં નજરો જોવા કે જાણવા મળ્યો નથી. ગુરુદેવ તો દરેકે દરેક પ્રસંગ અદ્ભૂત રીતે ઉજવીને સૌને આશ્ચર્યચકિત કરી દે છે. આવું શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાયંત્રનું પૂજન તથા ચૈત્રી નવરાત્રી આરાધના તથા શ્રી નવપદ જ્ઞાન સાધના કરાવ્યા તે તો અદ્ભૂત અને અલૌકિક જ છે. મેં તો આ પૂજન કરીને મારું જીવન ધન્ય બનાવી દીધું છે. મારા જીવનમાં આવું પૂજન ક્યારેય જોયું કે જાણ્યું નથી, જાણે કે આપણે સ્વર્ગમાં બેઠા છીએ અને પૂ. ગુરુદેવ સમવસરણમાં બેસીને સૌને સત્સંગ કરાવે છે. પૂ. ગુરુજી જ્ઞાન બહુ સરળ અને સીધી રીતે આપણને સમજાવે છે. તેથી હવે લાગે છે કે અનંતા ભવો આપણને રજાવું નહીં પડે અને સીધા મહાવિદેહ ક્ષેત્ર તરફ પ્રયાણ કરશું એવું મનમાં થયા કરે છે. તેમનું જ્ઞાન અદ્ભૂત છે તે આપણાં જ્ઞાની સદ્ગુરુ તો છે જ પણ મારા માટે તો એ સાચેજ સીમંધર સ્વામી મળ્યા હોય એવું લાગે છે. પૂ. ગુરુદેવ વિષે જેટલું લખીએ એટલું ઓછું છે. તેમનો ઉપકાર આપણા ઉપર એટલો બધો છે કે તેનો બદલો આપવા માટેની આપણી એવી હૈસિયત પણ નથી. શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાયંત્ર મને મળ્યું છે તેથી કોઈપણ જાતનો ડર નથી. બધું જ સીધેસીધું ઉતરી જશે એવું લાગ્યા કરે છે. હું ક્યારેય આટલા કલાક આવી રીતે બેસી શકતી નથી પણ પૂ. ગુરુદેવ જે જ્ઞાનથી જે સિદ્ધચક્ર મહાયંત્રનું પૂજન કરાવે છે અને આપણને તરબતર કરી દે છે, કે ક્યારેય કંટાળો આવતો નથી. આ સિદ્ધચક્ર મહાયંત્રનું પૂજન કરી હું મારી જાતને ધન્ય માનું છું અને આવા ગુરુદેવને જીવનમાં પામીને ખૂબ ખુશ છું. છેલ્લે કહું તો ગુરુજીના ચરણકમળમાં મારું મસ્તક ઝુકાવું છું. ભવોભવ આ જ ગુરુજીનું સાનિધ્ય મળે એ જ પ્રાર્થના કરું છું.

મુજ રોમે રોમ નાદ ગુંજે શ્રી ગુરુદેવનો,

હળપળ મહીં, હળસ્થળ મહીં સથવાર ગુરુદેવનો.

નયના હેમેન્દ્રકુમાર મહેતા – 9004704517

નવરાત્રી આરાધના, નવપદ જ્ઞાન સાધનાનો અનુભવ અદ્ભૂત રહ્યો. પ્રભુની કૃપા અને સદ્ગુરુની નિશ્રામાં પ્રથમ ત્રણ દિવસ મારી અંદરથી નકારાત્મકતાને બહાર કાઢી, બીજા ત્રણ દિવસ સત્તા, સંપત્તિ, સાધન, સામગ્રીનું શુદ્ધકરણ કર્યું. પછી નવપદ આરાધનાની શરૂઆત થઈ. સમ્યક્ જ્ઞાનને અંતરાત્મામાં સ્થાપિત કર્યું. સદાય, સતત, સમ્યક્ તપમાં રહીશ એ નિર્ણય લીધો. સમ્યક્ દર્શન, જે જેવું છે તેવું જોઈશ. વ્યક્તિ, વસ્તુ, પરિસ્થિતિ, પરમાણુ અને જીવમાં પ્રભુ તત્વના દર્શન કરીશ એવો નિર્ણય લીધો. ચારિત્રરૂપ પરિણામ પ્રભુની કૃપાથી, સદ્ગુરુની કૃપાથી પ્રગટ કરીશ એવો નિર્ણય લીધો. સદાય પંચ પરમેષ્ઠિના શરણમાં રહીશ, મારી અંદર સાધુના ગુણો પ્રગટ થાય એ માટે શ્રમ કરીશ. એમ કરતાં કરતાં, પરમ પદને પ્રાપ્ત કરીશ. પ્રભુકૃપાથી સદ્ગુરુએ સિદ્ધગતિ માટે રસ્તો સરળ બનાવી આપ્યો છે. કૃપા કરો... કૃપા કરો....

Dilip P. Dedhia - 9870038171



આનંદમય જીવનના વિકાસની અદ્ભૂત શિબીર Science of Divine Living

નમો જિણાણં

આજની શિબીરનો શરીર મૈત્રી યોગ ખૂબજ સુંદર અને અદ્ભૂત લાગ્યો. જે શરીર થકી આપણું કાર્ય થાય છે એની સાથે મૈત્રી કરીને સુખદ અનુભવ થયો. સાથે જ શરીર બોલે છે એ આજે અનુભવ્યું. સુંદર અને અદ્ભૂત.....!

સરોજબેન જે. ગોહિલ - 23898342

Felt relaxed, controlled balanced & increase in my physical & mental knowledge to live my life in a reformed & divine manner. I am happy & satisfied with the Prakriyas taught Breathing & Asans with spiritual attachment.

Nikita Patel - 8097836870

નામ પ્રમાણે આ શિબીરમાં આનંદમય જીવનના વિકાસની અદ્ભૂત અનુભૂતિ આવે છે. શરીરની સાથે મૈત્રી કેમ કરવી એ આ શિબીરમાં શીખવા મળ્યું. સુવાની, બેસવાની, ખમાસણા આપવાની જે ક્રિયા શિખાડવામાં આવી એ બહુ અદ્ભૂત હતી. ખાસ કરીને જેને ઉઠવાની અને બેસવાની તકલીફ થાય છે એના માટે અદ્ભૂત હતી. Streching, Relaxing ની જે ક્રિયા બતાડવામાં આવી એ પણ અદ્ભૂત હતી. જેનાથી શરીર આખું relax થઈ ગયું.

Kalavati Shah - 9167686778

Namo Jinanam

Really a great, unique shibir for Divine Living. Thank you... Thank you... Thank you. Life has become peaceful, hassle free & spontaneous. Prabhu Kripa always make situations & surroundings favourable. Amezing.

Tushar Pandya - 9324263457

Namaskar Mahamantra Yoga Shibir is very helpful for me to develop spiritual experience in my life. It is like different type of shibir for me. My mind & body also refresh. Making god pray (for interect self to God) is very effective for me in my all over life.

Thank you Guruji for guiding me to joining this Namaskar Mahamantra Yoga Shibir.

Viral Somani - 9029870289

Great experience. Enjoyed throughly the “શારીરિક મૈત્રી”, it is very scientific.

I feel and pray that I can take out some time from my sleep and eating time and do all the prakriyas wholeheartedly and make my life meaningful.

Manish C. Shah - 9987011237

આજનાં session માં ભોજન વિશે જાણવા મળ્યું. જે ભોજન આપણે ગ્રહણ કરીએ છે તેના માટે કેટલા લોકોની મહેનત હોય છે. તેમને કારણે આપણને આ ભોજન મળ્યું છે તેને હું સાચા દિલથી અભિનંદન કરું છું. મંત્ર પ્રક્રિયાના વિવિધ આસનોની જાણકારી મળી ને એના માટે સિધ્ધાસન સર્વશ્રેષ્ઠ છે.

શરીર મૈત્રી વિશે જાણ્યું કે જો આપણે શરીર સાથે મૈત્રી કરશું તો એ આપણી સાથે મૈત્રી કરશે. શરીરને લગતી વિવિધ પ્રક્રિયા કરવી એ આપણાં શારીરિક સ્વાસ્થ્ય માટે સારું છે. માટે જેટલું બને એની સાથે મૈત્રી કરવી.

ને જે ગૌતમ પ્રસાદી આજે કરવા મળી તેનો આનંદ છે.

Vijay D. Patel - 9867310784

નમો જિણાણં

હું જેન નથી અને મે મારા એકલા થકી આ શિબીર joint કરી છે અને કાંદિવલીમાં થયેલા session joint કર્યા બાદ મને મારામાં ફરક લાગ્યો છે. પ્રભુ પ્રત્યે આસ્થા વધી છે અને વિશ્વાસ દ્રઢ થયો છે. આજની આ શિબીરમાં નવું જાણવા મળ્યું અને શરીર સાથેની મૈત્રી સારી લાગી અને હવે એ હંમેશા રહે એવો પ્રયત્ન કરતી રહીશ. શરીર યોગ દરમ્યાન જ પગના ઘૂંટણનો દુઃખાવો ઓછો થયો !!! બહુજ સુંદર અને અદ્ભૂત.....!

Kiran Dilip Gohil - 9320041264

નમો જિણાણં

આજની શિબીરનો અનુભવ ઘણો સારો રહ્યો. મને આ શિબીરમાં આવવાથી મનમાં અને શરીરમાં ઘણો આનંદ રહે છે. “આત્મા”માં અનેરો આનંદ આવે છે. ઘણો જ ગમે છે. જ્યારે અમારા બોરીવલીના ઉપાશ્રયમાં બહેનો સાથે બહુજ મગજમારી થાય છે એના કરતાં અહીં શાંતિ રહે છે. જીવન આનંદમય બનતું જાય છે. પાંચ ધૂનો ગુંજ્યા કરે છે.

Renuka D. Shah - 9920825627

શિબીરનો અનુભવ ઘણો સારો રહ્યો. Scientific રીતે જે નવકાર મંત્રની આરાધના કરી એ ઘણું જ અદ્ભૂત રહ્યું અને સારું રહ્યું. જે રીતે અત્યાર સુધી કરી રહ્યાં હતાં તેનાથી આ ઘણું જુદું છે. મનમાં પણ ઘણી શાંતિ અનુભવાય છે. આજે જ છેલ્લું Session હતું. તે પણ ઘણું સુંદર હતું. કુદરતની સાથે તેના સાન્નિધ્યમાં રહેવાનું એક સુંદર અનુભવ હતો.

Dipti S. Shah - 9821072675



1) अरिहंत T.V. CHANNEL (हररोज सुबह 8.30 और रात को 11.30 बजे)

प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई के श्रीमुख से साक्षात अरिहंत परमात्मा, तीर्थंकर परमात्मा की दिव्य वाणी सरल और सचोट शैली में अनुभव करके आनंद उठाने और जीवन में अद्भूत परिणाम पाने के लिए देखिए... हररोज सुबह 8.30 बजे तथा रात को 11.30 बजे ।

पुरे भारत में 1.5 करोड़ लोग (जैन-अजैन) लोकल केबल SET TOP BOX, VIDEOCON D2h तथा TATA SKY के माध्यम से अरिहंत टी.वी. चैनल पर प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई की वाणी को ग्रहण करके अपने जीवन में अद्भूत परिणाम प्राप्त कर रहे हैं ।

हम सभी को इसी तरह यह अमृतरस मिलता रहे, इसके लिए अरिहंत टी.वी. चैनल पर प्रसारित हो रहे इस कार्यक्रम के आप सौजन्य दाता बन सकते हैं । आप का नाम जितने दिन का सौजन्य होगा उतने दिन प्रसारित किया जाएगा । अवश्य लाभ लें ।

संपर्क : 9322235233 / 9833133266

2) MARRIED COUPLE SHIBIR - DT. 28 & 29 MAY, 2016

स्थल : सांताक्रुझ श्री अचलगच्छ जैन संघ (आरोग्य धाम), दत्तात्रय रोड, सूर्या होस्पिटल के पीछे, सांताक्रुझ (वेस्ट) ।

समय : ता. 28 मई, 2016 शनिवार – सुबह 10.00 से शाम 6.00 बजे तक

ता. 29 मई, 2016 रविवार – सुबह 6.00 से शाम 6.00 बजे तक

इस शिबीर में शादीसुद्धा जोड़े, अकेले माता अथवा पिता, शादी योग्य लडका और लडकी, लीव ईन रिलेशनसीप में रहनेवाले, तलाकसुदा सभी जुड़ सकते हैं । अवश्य जुड़ें ।

3) एक दिवसीय श्री सिद्धचक्र यंत्र पूजन अनुष्ठान के साथ श्री नवरात्री आराधना श्री नवपद ज्ञान साधना - शाहपुर - मानस मंदिर तीर्थ में - ता. 12 जून, 2016

एक मौका प्रभुकृपा से ओर – जिनके घर में यह महायंत्र है उसे Recharge करने का और जिनके घर में नहीं है उन्हें प्रेरणा है इस महायंत्र को अपने घर में स्थापित करने का । यह एक अद्भूत और अद्वितीय आराधना साधना है । यह सिद्धचक्र महायंत्र हमारा और हमारे समस्त परिवार का साथीदार है और हमारी हरपल रक्षा करता है । यह दिव्य महाअनुष्ठान में आप सहपरिवार, मित्रगण, सगेसंबंधी के साथ अवश्य पधारें । बोरीवली, अंधेरी, सायन, घाटकोपर, मुलुंड से बस की व्यवस्था रखी गई है ।

(सुबह 5.45 बजे मुंबई से बस रवाना होगी)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें : 9833133266 / 9820944517 / 9820619814 / 9322991036

4) नमस्कार महामंत्र योग – SCIENCE OF DIVINE LIVING

आनंदमय जीवन के विकास की अद्भूत शिबीर – जुलाई 2016 में मुंबई में 4 सेन्ट्रो में शुरु होने जा रही है ।

WESTERN LINE में दो सेन्ट्रो में – मीरारोड / भायंदर / दहींसर

और CENTRAL LINE में दो सेन्ट्रो में – मुलुंड / कोटनगीन / साउथ मुंबई ।

5) गुरुपूर्णिमा – सद्गुरु के प्रति अहोभाव की अभिव्यक्ति ता. 19 जुलाई 2016, मंगलवार

गुरु एक तत्व है, हमे उस तत्व को पकड़ना है, व्यक्ति स्वरूप नहीं लेकिन आज के युग में व्यक्ति स्वरूप गुरु की बहोत ही जरूरत है । प्रभुकृपा से हमे ऐसे सद्गुरु मिले हैं जो सीमंधर स्वामी का ही रूप हैं, जो हमें हरपल रास्ता दिखाते हैं, जिन्होंने हमारे और हमारे परिवार के जीवन को आनंदमय और मंगलमय बनाया है । प्रभु का Actual मार्ग का वैज्ञानिक और Practical स्वरूप बताया है । ऐसे महान दिव्य सद्गुरु के प्रति अहोभाव की अभिव्यक्ति तो हमे हरपल करनी है । यह दिन हम सब समूह में अपना अहोभाव प्रगट करेंगे ।

शुभेच्छक :

दुःखने भूखवा माटे परमात्मा सिवाय अन्य कोई मार्ग नहीं.



6) 15 अगस्त, 2016 सोमवार – स्वतंत्रता दिन – स्व को स्वतंत्र बनाने का प्रारंभ दिन

इस दिन भारत देश स्वतंत्र हुआ – क्या हम स्वतंत्र हुए ?

देश का झंडा तो लहेराया क्या हमने हमारी स्वतंत्रता का कभी झंडा लहेराया है ? नहीं ना.....

यह सब तो हमें पता नहीं है..... अवश्य सहपरिवार, मित्रगण, सगेसंबंधी के साथ लाभ लेना ।

7) जन्माष्टमी – ता. 25 अगस्त, 2016 गुरुवार

Negative का अंत और Positive का जन्म ।

8) DIVINE SCIENTIFIC PRACTICAL सम्यक् पर्युषण अनुभवधारा

ता. 29 अगस्त से 6 सितंबर – 2016 (सोमवार से मंगलवार – 9 दिन)

9) महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर नीचे दी हुई ७ प्रकार की सेवा प्रवृत्तियाँ पूरे साल भर की जाती हैं, आप अपना योगदान तन सेवा, मन सेवा, धन सेवा, वचन सेवा, संबंध सेवा के रूप में दे सकते हैं ।

(१) होस्पिटल सेक्टर

(२) आश्रम सेक्टर

(३) EDUCATION SECTOR

(४) पू. साधु-साध्वीजी भगवंतो की वैयावच्च

(५) SCIENCE OF DIVINE LIVING प्रचार प्रसारण

(६) पशु पक्षी जीवदया

(७) जीवन की किसी भी समस्या के उपाय के लिए 24 x 7 HELPLINE SEVA

10) परम सुख HELPLINE 24 x 7 No. : 09920202756

जीवन की किसी भी समस्या के उपाय के लिए उपर बताए हुए नंबर पर संपर्क करें ।

यह सेवा 24 घंटे और सातों दिन उपलब्ध है ।

परम सुख WHATSAPP NO. 09920203965 – इस नंबर पर आप अपना WHATSAPP NO. REGISTER करवा सकते हैं जिससे आपको आनेवाले कार्यक्रमों की जानकारी और पू. गुरुदेव की वाणी का लाभ AUDIO AND VIDEO के माध्यम से रोज ले सकते हो । इसके लिए आपको अपना नाम और नंबर और नमो जिणाणं लिखकर यह WHATSAPP नंबर पर भेजना है ।

प.पू. पंकजभाई से किसी भी प्रश्न का हल चाहते हो या

CD, DVD, POSTER CARD, MAGAZINE के लिए संपर्क करे :

9920203965 (WHATS APP) / 9920202756 (HELPLINE) / 9867811201



Continued from Last Magazine.....

SCIENCE OF MANTRA YOGA :

Definition of Mantra as per Mantra Shastra called Matrika Vidya मन्त्रात् त्रायते इति मंत्र. That means repetition of the thought process continuously which can bring the thought in to reality. The repetition of thought process is done through medium of repetition of certain "Code Words" given by Guru / Mantra Sadhaka.

The other way of defining Mantra is Mana + Yantra = Mantra. i.e. Yantra means physical medium, Mana means Mind. The medium which helps Mind to achieve its Goal is called Mantra.

Now how does this Mantra Science operate :

UCĀRA ⇔ VICĀRA ⇔ BHĀVA ⇔ SANKALPA

It starts with uttering of certain "Coded Words" given by Mantra Guru / Mantra Sadhaka in certain **Way, Tone, Rhythm & Tempo** for a particular Goal / Objective. Now after repeating this utterance in above way it creates certain unique thought waves in human mind according to the concept of given Mantra. So at later stage of chanting Mantra it becomes repetition of those thoughts waves which creates its ambience in Sadhaka mind and his surroundings which is called as Vicara. Now after continuously repetition of thought process it slowly and gradually becomes part of Sub conscious then super conscious and finally the given Goal/Objective becomes reality of conscious experience & real world physical reality.

The level of uttering/chanting mantra, initially it is uttered in such a way which is audible to all those who are in the vicinity, gradually the audibility decreases such that it is audible only to self. The first level of audibility is called Bhasya Japa. Second level of audibility is called Upansu Japa. Third level of audibility is called Manas Japa. That it is in form of thought waves within mind of Sadhaka. After continuous repetitions of Manas Japa it converts into physical reality of matter world. Finally Ajapa japa maintains this reality effortlessly.

This Mantra Science is Micro Science directly connected to Chemistry of Jiva & Pudgala Parmanu as discussed earlier in this paper. The science of Mantra enables Jiva/ human being to attract particular type of pudgala parmanu atoms from environment from any place and any time. Similarly through this same Mantra Yoga any unwanted parmanu can be disposed off or thrown out by Jiva/Human being.

Hence it can be seen that through this Science of Mantra Jiva/Human being can easily associate/dissociate with any type of atoms/Pudgala parmanu or his own term & will. From this practice of Mantra Science it can be seen that in this

matter world any thing can be achieved in this physical matter world with miraculous results without deviating from main Goal of human life i.e. Achievement of complete Freedom from pain, suffering & matter world.

This is Science of Mantra Yoga, now let us see how this Science is utilized by different Scientific Practical Mantra processes in day to day life to make one self peaceful, happy, stressless, tensionless and prosperous in all respects. Harmonious communion with self, family & all five internal & external Environments of human beings as discussed earlier.

First Mantra Process :

Whenever we get up in the morning and open our eyes first Mantra to be uttered "NAMO JINANAM" take refuge (Sarana) of Arihant Parmatma & express Gratitude to all past, present & future Arihant entities by pure heart. Thank them for whatever we have in this life.

It is due to their Grace, Bliss & Enlightenment of knowledge of Ultimate Goal, Path to achieve that Goal, we are in comfortable state of human being with all senses intact, all organs of body in fit condition with proper food, clothing and house to live. Reasonable livelihood for earning, good family members etc.

સિદ્ધે શરણં પવ્વજ્ઞામિ

Take refuge (Sarana) of all Siddhas, thank them for reaching this human state. It is through their Grace we have come out from state of Nigoda and reached this supreme state of human being and after coming in this state we have realized that ultimate state to be achieved is Siddha hood. That is a state of complete freedom from all pain, suffering & parmanu Pudgala(Atom). Thank all siddhas for their Grace and take blessing for achieving Siddha hood.

શાહુ શરણં પવ્વજ્ઞામિ

Take refuge (Sarana) of all sadhu entities thank them for introducing us to Arihants, Siddhas and their Goals & Path of peace and happiness. It is through them we are motivated to tread on path shown by Arihants. They show path, wisdom and give strength to walk on the path. They have fully dedicated their lives to the path of eternity with one point focus & love/care for all Jivas every moment of their life. It is because of their presence the path is live even after 2600 years after Mahavir..

ધર્મં શરણં પવ્વજ્ઞામિ

Take refuge (Sarana) of Dharma Tatva i.e law of nature & cosmic order. Our existence is based on essence of Dharma. Without it's support we are nothing & nobody. Thank them



and take blessings for their role in our existence, whatever Jivas & Ajivas exist in nature based on dharmatatva thank them for their support and bless them for their role in our existence without which it would not have been possible.

By this Mantrocara, Vicara & Bhava, whole environment within us & around us becomes very blissful & Graceous by which whole day atmosphere is set up within us with tremendous power of all these divine entities and automatically this environment changes our destiny of day and all auspicious events/incidents happen because of this Mantra/Parmanu Impact in our life.

Second Mantra Process :

(1) Goal Mantra Dhun : Chanting Meditation for 3 mins

Mana O Mana I will not suffer,
It is my determined Decision
I will not suffer."

(2) Grace : Chanting Meditation (કૃપા મંત્ર ધૂન) For 3 mins.

'Namo Jinanam, Jiya Bhayanam'

(This Mantra means I dedicate devote myself to you. O Jina, Make me fearless Jiva around me fearless and all Jiva become fearless)

(3) Love Mantra Dhun : Chanting Meditation For 3 mins

' However you Are I Love you,
Because of You, Inspite of You,
I Love you.'

(Here word 'you' means people, object, situations Jivas & Atoms.)

(4) Friendship Mantra Dhun : Chanting Meditation For 3 mins.

' I am yours, you are mine,
communion between us wonderful, wonderful.
Your nature is unique.
My nature is also unique.
Let us celebrate uniqueness of each other &
make Our life wonderful ,wonderful.'

(5) Existence Awareness :

' I am traveler of time
I am traveler of time.
I have come with credit card of fix time on

Human station, I am so lucky. I have three
Types of freedom, Freedom of thought, Freedom
Of decision making , Freedom of Implementation.

I have come as human to make this freedom
Complete & Everlasting.'

By daily chanting these Mantra Dhun meditation, the thoughts in Mantra is seeded in our existence they become part of our existence and by persistently chanting this dhuns with full heart & involvement it becomes live reality by process of Mantra Science discussed earlier.

Achievements by this process :

- (1) It gives Goal & focus of Life.
- (2) It gives power of Grace & Blessings from divine entities.
- (3) It spreads power of unconditional love within us and all around us and empowers our life.
- (4) It brings harmony in life within self with others & all concerned in Universe, this the biggest Asset of human life.
- (5) It brings self awareness, Who Am I, What am I, How Am I and purpose of Existence as human.

Third Mantra Process :

Five scientific Mantra Practices of practical divine living in day to day life in every event

This is uttering four Mantra in sequence and then appreciating qualities of person/objects we meet.

(1) First Mantra : Utterance Practice

Say 'Namo Jinanam' to whomsoever we meet in audible voice to person/Jiva, object or situation.

While Uttering this mantra, three thoughts should be uttered within :

- (a) I salute God within you.
- (b) I accept God within you.
- (c) I have special place in my heart for you.

(2) Second Mantra : Utterance

Three Mantra should be uttered in heart before starting Communication.

- a) I will not suffer'
- b) However you are, I Love You.
- c) You are innocent, I am innocent

There is fault only in my opinions about you, hence I will remove all my opinions about you'



(3) Third Step :

Appreciate & tell at least two Good qualities of that person.

After this five practices, then only start communicating with that person on daily basis in each event. Do this practice with all persons/Jivas/Objects every time.

Achievements of this Process :

- (1) It creates tremendous rapport with person and objects we meet.
- (2) It generates harmony and effortless friendship is developed.
- (3) It creates harmony with all Living and non living beings whoever we meet.

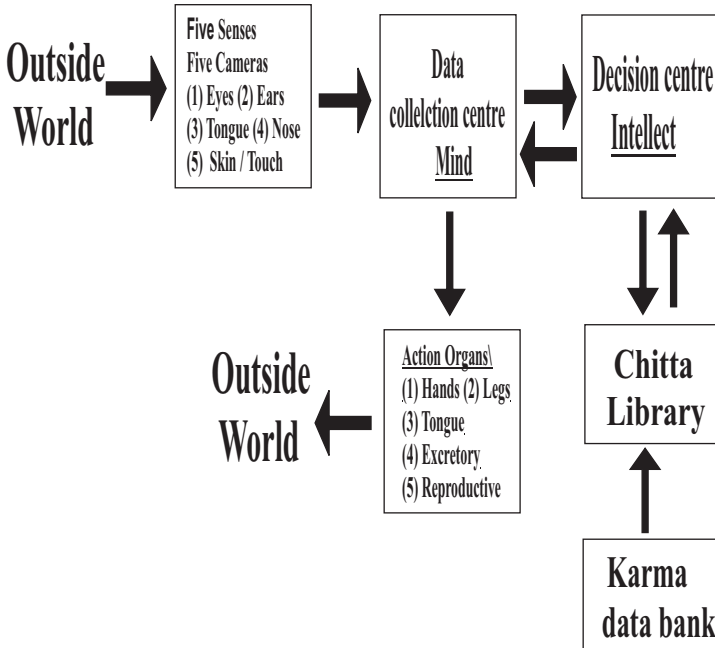
This is the Greatest Ecological balancing practice shown ever by Anybody on this earth till date.

We can easily say Mahavira the Complete Environmentalist / Ecological Scientist.

III PROCESS OF SCIENTIFIC PRACTICAL PRATIKRAMANA IN DAY TO DAY LIFE.

This is the most scientific process of liberating oneself from clutches of self misery, misunderstanding, causes of disharmony and always remain fresh, hearty & cheerful, joyful, keeping self peaceful and all around cheerful.

Let us understand how we interact with outside world.



We sense the world through our 5 Cameras (Senses) Each camera has it's limitation. Each camera can grasp only 1% of real world. The efficiency of each camera is 50%. Hence total grasping of Five Cameras is 5% of real world, 50% of efficiency of each camera makes it 2.5% and efficiency of our mind is 50%. Hence in reality we understand & observe this world to extent of 1.25% and fight & cry over this totally incomplete data.

All this data collected by all 5 (Senses) Cameras is sent to data collection centre called Mana(Mind) Mind prepares folders of each sample of data to Intellect for decision, it refers this data file to Chitta Library where all data base is stored as Temporary Storage device. Intellect after assessing data it takes decision and conveys back to Mana(Mind) for execution. This execution command is given to action organs in our body called hands, legs, tongue, Excretory & Reproductive organs. This is how whole function occurs in our day to day life.

From all this scientific Information data processing we can understand why Mahavira insisted not to depend on the data provided by our five senses (Cameras). Hence he showed the process of scientific pratikramana which can be easily practiced in our day to day life and get librated from assumptions about people, objects, situations & jiva. This is regarding inputs coming from outside world. There is new data coming with every breath human being takes from Karma Bank gives it's result from Udaya Karma. Now data from outside world and data from Karma Bank both appear on Chitta screen simultaneously and end results are stored again in Chitta library.

ROLE OF SCIENTIFIC PRACTICAL PRATIKRAMANA

Mahavira has shown that it is the data stored as well data appearing in Chitta library from Karma Bank does not allow human being to freely operate in day to day life leading to Internal suffering & external pollution of environment. That is Root cause of trouble leading to destruction of self and Nature. When each human being operates like this micro destruction at Family level, Social level, Country level & Universe level. To delete all these destructive effects at micro & macro level the Scientific Practical Pratikramana can play a very big role in cleansing the pollution effect at all levels.



PROCESS OF SCIENTIFIC PRACTICAL PRATIKRAMANA IN DAY TO DAY LIFE

Step-I:

Whenever a person comes across other person, object or situation he has to follow the 5 practices shown in Third Mantra process.

Step-II:

- Start interacting with person, objects or situations.
- After the interaction is over in that transaction just observe how much emotional reactions of likes and dislikes is generated and stored during the process about those persons, objects & situations.
- This is garbage data which we have collected in our Chitta during the transaction in form of emotional likes and dislikes which is going to damage. Our future transactions with those persons, objects & situations. Realize & Accept this mistake.
- Delete these likes & dislikes emotions stored immediately.
- Decide whenever those persons, objects & situations come again in your life., you will interact with them freshly without any past reference of likes/dislikes.
- Gradually develop a habit of not generating those unwanted emotional reactions of likes/dislikes at all.

Make the above steps of Scientific Pratikramana a habit of lifestyle & see how wonderful & fresh you feel throughout the day inspite of remaining busy for 24 hours.

CONCLUSION :

We have seen how Mahavira has Scientifically explained the Constituents of Ecology and how these constituents interact with each other. The concept of 5 Internal & External Environments of human beings. How human being is the only culprit who disturbs his own internal ecology which is termed as violence by Mahavira. This turbulence of individual violence converts into wave of Mass violence in society, Country & World leading to disharmony and destruction for all.

As a solution to above Environmental / Ecological unbalance Mahavira has shown the definite Scientific Practical Path to overcome this short comings.

MAHAVIRA'S MESSAGE :

He has told every human being to take the responsibility on self for whatever damage & destruction happening to himself and come out of 'Blame Game'. Hence he himself at his own level has to correct the deficiencies and comic out of the damage & destruction. When all humans will act accordingly Balance of Ecology & Environment will follow automatically.

He has emphatically emphasized in his message, Love, Care & Share for all in heart and inculcating as habitual style is the only solution to all the problems in today's world.

To achieve the above solutions of Love, Care & Share in day to day life in all human beings, he has given following **Scientific Softwares**.

- Jatna Marg
- Science of Mantra Yoga
- Science of Practical Pratikramana

PERSONAL INVITATION :

If you find above solutions of Mahavir logical and Scientific, I invite you all with open heart to join the community of **PARAM ANAND PARIVAR** where all the Scientific principles of Mahavir are implemented purely Scientifically without any bias of Cast, Creed, Religion or Nation. Till date in last 10 years 5000 people have already joined this movement and we want atleast 9 crore family to join this movement and make this world the **Best Place** to live in, **Enjoy** and achieve **Eternal Bliss**.

NAMO JINANAM.

GOD BLESS.





૧. સાધક જીવનના મુખ્ય ગુણો કયા ?

જ. સાધક જીવનમાં સૌથી પહેલો ગુણ સરળતા છે. બીજો ગુણ છે કોમળતા. હૃદય કોમળ હોય, અનુકંપિત હોય. કોઈનું દુઃખ જોઈને તરત એની અંદર અનુકંપા પ્રગટે છે. અનુકંપા પ્રગટી અને એને કેવી રીતે રસ્તો બતાવવો, એના પ્રત્યે પ્રેરણા થાય છે. અનુકંપા એટલે સામેવાળાનું દુઃખ પોતે લેવું એમ નહીં, અનુકંપા એટલે સામેવાળાનું દુઃખ જોઈને પોતે જ્ઞાનસ્વરૂપમાં આવવું કે મને પણ આવું થઈ શકે એમ છે અને અત્યારના મારી પાસે શું શક્તિ છે જેના માધ્યમથી હું, આ જીવને મદદરૂપ થઈ શકું. આનું નામ છે 'અનુકંપા'. અનુકંપા એટલે સામેવાળાનું દુઃખ જોઈને એના દુઃખને પોતાના જીવનનો એક ભાગ બનાવવો. કોમળતા કોને કહેવાય? કોમળતા એને કહેવાય કે સામેવાળો જીવ જે પીડાતો હોય એ પીડાને જોઈને એ પીડાના માર્ગમાંથી કેવી રીતે મુક્ત થાય એ જાતના ભાવનું હૃદયની અંદર પ્રગટીકરણ થાય એનું નામ છે 'સમ્યક્ કોમળતા'. સમ્યક્ સરળતા અને સમ્યક્ નમ્રતા.

“અહો ! તે ઉત્તમા ખંતિ”. ખંતિ એટલે નમ્રતા. ગમે એવા મોટા વિદ્વાન પંડિત હોય, ઘણી બધી વિદ્યાઓ જાણતા હોય, ઘણા બધા શાસ્ત્રો જાણતાં હોય, ઘણી બધી વિદ્યાઓ આવડતી હોય, ઘણી બધી મંત્ર વિદ્યાઓ અને ઘણી બધી શક્તિઓ પણ હોઈ શકે પણ છતાં જો એની અંદર આ સમ્યક્.... સૌથી પહેલો ગુણ કયો કીધો? સમ્યક્ સરળતા. બીજો ગુણ સમ્યક્ કોમળતા, ત્રીજો ગુણ સમ્યક્ નમ્રતા.... ગમે એવો powerful હોય પણ એની સાથે વાતચીત કરીએ, કલાકો સુધી એની સાથે રહીએ પણ આપણને ખબર ન પડવા દે એની અંદર શું પડ્યું છે? એનું નામ છે 'નમ્રતા'. નમ્રતા એટલે નમો નમો કરે એમ નહીં. તમે આડુઅવળું કરો તો

યે નમો નમો કરે એમ નહીં ! સમજાય છે ? નમ્રતા એટલે લોકો એમ સમજે છે 'નમવું' ને sweet-smile Air Hostess જેવી ચોવીસ કલાક રાખે એનું નામ નમ્રતા. આ એક નમ્રતાનો ભાગ છે. પણ સાધના જીવનની અંદર નમ્રતા જો હોય તો સામેવાળાને સમજાવવા એના અલગ અલગ steps છે.

પહેલા step થી ન સમજે તો બીજો step, બીજા step થી ન સમજે તો ત્રીજો step, ત્રીજાથી ન સમજે તો ચોથો step. એમ એના પગથિયાઓ છે. આ પગથિયા કેના છે ? નમ્રતાના જ પગથિયા છે. સમ્યક્ સરળતા, સમ્યક્ કોમળતા, સમ્યક્ નમ્રતા. પણ આ નમ્રતા હોવી બહુ જરૂરી છે. કોઈપણ સાધક જો પોતાને સાધક માનતો હોય, પ્રભુના માર્ગની અંદર આગળ વધવા માંગતો હોય તો એને આ ગુણના વિકાસ કરવાની ખાસ આવશ્યકતા છે.

“મંગલમ્ ભગવાન વીરો,

મંગલમ્ ભગવાન ગૌતમ પ્રભુ,

મંગલમ્ સ્થૂલ ભદ્રાધ્યા.

આ સ્થૂલ ભદ્રાધ્યાની અંદર શું સમજાવી દીધું ભગવાને? તો ભાઈ ! હું સ્થૂળ છું, મને સરળ, નમ્ર અને સજાગ બનાવ. હં.... શું બનાવ? સ્થૂલમાંથી ભદ્ર બનાવ. ભદ્રતા એટલે શું? ભદ્રતા એટલે સરળ, નમ્ર અને સજાગ. આપણે આપણી બાર ભાવનાની અંદર રાતના રોજ ભાવના આવી કરીએ છીએ કે હે પરમાત્મા, મને એવો વીર બનાવ કે હું તારા જેવી ભદ્રતા પ્રગટ કરી શકું. કેવી? તો કહે સમ્યક્ સરળતા, સમ્યક્ નમ્રતા, સમ્યક્ સજાગતા. Alertness... સતત લક્ષ પ્રત્યેની જાગૃતિ મારી અંદર પ્રગટે આનું જ નામ સેવક છે. આનું જ નામ સાધક છે.



૨. રાત કાળી જ કેમ હોય છે ? એનું રહસ્ય શું છે ?

જ. ભગવાન હરક્ષણો નવું નવું આપે છે પણ આપણને જોતા નથી આવડતું. ભગવાન રોજ એક રાત આપે છે. એ પણ શેના માટે છે એ ખબર છે ? નથી ને.... ! રાતનો કલર કયો ? કાળો. તે કાળો શા માટે ? તો ભગવાન કહે છે આપણે જેટલા લોચા માર્યા હોયને એ બધાને કાળામાં ઘૂસેડી દો એટલે કાંઈ દેખાય ? ન પોતાને દેખાય ન બીજાને દેખાય. એટલે ભગવાન કહે છે રોજ એવી કાળી રાત તને આપું છું અને મહિનામાં એક એવી કાળી રાત તને આપું છું કે જ્યાં બિલકુલ ઉજાસ ન હોય. શેના માટે આપું છું ભાઈ ? કે એની અંદર બધું ઓગળી જાય. એટલે તું બધું ઓગાળીને સૂઈ જજે. બધું વિસર્જિત કરીને સૂઈ જજે. એટલે આપણાં જેટલા અંદરના ઉભરાઓ, કચરાઓ જે કંઈપણ છે એ રોજ રાતના દફનાવી, ફેંકી રાતને સોંપી દેજો તો ઈ રાત સફળ થઈ ગઈ. Temporary death નો અનુભવ કરવાનો રોજ. એમજ છે કે નહીં ? એમ જ છે. વાસ્તવિક રૂપે પણ આપણે એ રીતે સૂતા નથી.

તમને કેવામાં આવે કે તમારી છેલ્લી રાત છે તો ઊંઘ આવે ? ઉંઘુ થઈ જાય. આવતી હોય તો યે જતી રહે. બરાબર છે કે નહીં... ? હૈં ?

ભગવાન કહે, તુ રોજ રાતના આ Practice કર કે હે ઈશ્વર ! કાલે સવારના આપની કૃપા હશે તો મળશું. Today is my last day અને જેટલા મેં લોચા માર્યા છે આજે હું બધાનું પ્રતિક્રમણ કરીને ફેંકી દઉં છું. Yes, every night be fresh. કેટલા જણ ન્હાઈને સૂવે છે ? હૈં.... ? ઘણાં લોકોને આદત હોય કે રાતના સૂતા પહેલાં ન્હાવા જાય ને પછી સૂવે. એટલે ભગવાન કહે છે કે આજથી હવે હું તને ન્હાતા શીખવાડું છું. એવું ન્હાવાનું કે અંદરના જેટલાં દર્દો છે, અંદરના જેટલા કચરાઓ છે ઈ

બધાને વિસર્જિત કરી નાંખ. આ અંધારી કાળી રાત છે. કોઈ જોતું નથી. એટલે મુક્ત થઈ જા. બધુ છૂપું કાઢી નાંખ. રોજ ભગવાન એવી રાત આપે છે. મહિનાની એક રાત તો ભયંકર આપે છે. હવે આને ભયંકર કહેવી કે સર્વોત્તમ કહેવી ? સર્વોત્તમ.... ! અત્યાર સુધી કહે કે આ અમાસ આવી અને રડવા બેસી જાય. અમાસમાં તો વધારે જલસા છે. હૈં... ! આખા માસનું કાર્ય કરવાનું હોય એનું નામ 'અમાસ'. આખા મહિનાનો કચરો સાફ કરી નાંખવાનો. Yes.... દફનાવી દે તું, ફેંકી દે. કંઈ નહીં દેખાય. કાળામાં કાળુ મળી જશે. આપણાં બધા કાળા કાઢી નાંખવાના. જેટલી negativity છે એ રાતે કાઢી નાખ અને એક નવી સવાર, નવું જીવન, નવી રીત નક્કી કરજે. સવારના ઉઠજે, મને મળજે પછી તારું જીવન ચાલુ કરજે. એટલે રોજ રાતના આખા દિવસનું જે કંઈ હોય, 24 કલાકનાં જેટલા લોચા લાપસી હોય એ બધા દફનાવી દેવાના. કાલે નવી સવાર, નવી વાત, નવી રીત. વ્યક્તિ ભલે ઈ જ હોય પણ વાત નવી. આપણે શું કરીએ છીએ ? દિવસ ભલે નવો પણ વ્યક્તિ ઈ ને ઈ જ. એટલે હવે ભગવાન opportunity આપે છે fresh બનવા માટે અને આપણે વાસી ને પાછાં ન્હાતા જઈએ. એટલે જો ખરેખર ન્હાવું હોય તો આ રીતે ન્હાવું. “રોજ રાતના વિસર્જન અને રોજ સવારના નવી શરૂઆત.” એ જ વ્યક્તિઓ, એ જ પરિસ્થિતીઓ, એ જ બધુ હશે પણ જ્યારે આપણે fresh હશું તો બધું નવું છે. આ શીખવા માટે આપણે સત્સંગમાં આવ્યા છીએ. સત્સંગ એટલે અંદરનો ઉજાસ, ઉલ્લાસ અને ઉમંગ, પ્રફુલ્લિતતા જીવનમાં પ્રસરે એ મકમદ છે.



દાડમ (Pomegranate)

દાડમનાં ગુણધર્મો :-

દાડમનાં રસસ્વાદ મુજબ તેનાં ગુણધર્મોમાં સાધારણ ફેરફાર થાય છે.

- **મીઠા દાડમ** - તૃપ્તિકર, શુક્રવર્ધક, ત્રિદોષનાશક, રૂક્ષ, મળાવરોધક, સ્નિગ્ધ, મેઘાવર્ધક, બળવર્ધક, તૃષ્ણા, દાહ, જવર, હૃદયરોગ, મુખદુર્ગંધ, કંઠરોગ અને મુખરોગનાશક છે.
- **ખાટાદાડમ** - રૂક્ષ, રક્તપિત્તકારક તથા વાત-કફ વિનાશક છે.
- **ખાટા-મીઠાદાડમ** - રૂચિકર, પાચક, વાતપિત્તનાશક અને હળવા છે.
- **અનારદાણા (કાચા સુકવેલા દાડમ)** - રુચિકારક, હૃદયને પ્રિય અને વાતનો નાશ કરનાર છે.
- **છાલ** - કૃમિનાશક, મળરોધક, રક્તાતિસાર અને ઉધરસનાશક છે.
- **કાચા દાડમ** - પાચક, પૌષ્ટિક, ક્ષુધાવર્ધક, પિત્તકારક અને ઊલટી રોકનાર છે.

મહત્ત્વ :-

દાડમ નાનામોટા ગરીબ, તવંગર સૌ કોઈને પ્યારું ફળ છે. આમ તો તેનાં વર્ષમાં ત્રણવાર તાજાં ફળ આવે છે અને તે રોજ ખાવાથી દાંત, મોઢાની, ગળાની, પેટની, હૃદય તથા ફેફસાંની સર્વાંગ શુદ્ધિ થાય છે.

દાડમની કિંમત ગમે તેટલી હોય તેની છાલ, બીયાં, રસ, દાણા વગેરે બધી વસ્તુનાં અવનવા ઔષધપ્રયોગો કરી લોકો તેનો ઈચ્છે તો પૂરેપૂરો ફાયદો ઉઠાવી શકે છે.

આજકાલ તો દાડમમાંથી સરકો, શરબત, સ્કવોશ, જેલી, વિવિધ મિષ્ટાનો અને પકવાનોની લાંબી હારમાળા આપણને જોવા મળે છે. દાડમનાં ફાયદા તંદુરસ્ત શરીરને માટે પણ અનેકગણા છે. તે ઉમદા ફળ હોવા ઉપરાંત સુંદર ઔષધિરૂપે પણ માનવીને બહુ ઉપયોગી છે.

દાડમ દાણા (અનારદાણા) એક ઔષધરૂપે :-

આ દાણા પણ ઘણા જ સ્વાદિષ્ટ હોય છે. ખાંડ સાથે તેને મોઢામાં રાખવાથી તાપને કારણે મોઢાનું મોળાપણું વગેરે દૂર થાય છે. બાળકોને જીરા, નાગકેરસર, ખાંડ, મધ સાથે વાટીને ચટાડવાથી લાભ થાય છે. મોટા લોકોને ખાટા અનારદાણા ને આમળાની સાથે કાંજીમાં વાટીને પીવાથી લાભ મળે છે. અનારદાણામાંથી બનતી દાડિમાદિ, દાડિમષ્ટક વગેરે દવાઓ તેમ જ રૂચિકર, ક્ષુધાવર્ધક, શરદી સળેખમ નિવારક ચૂર્ણ વગેરે બનાવીને લાભ ઉઠાવાય છે.

આ દાણા ઠંડા અને રૂક્ષ છે. તે સંકોચક; પાચક અને ક્ષુધાવર્ધક, આમાશય, હૃદય વગેરે માટે લાભદાયી છે. પિત્તજ ઊલટી, અતિસાર અને બંને પ્રકારની ખંજવાળમાં લાભદાયી છે. ઠંડી પ્રકૃતિવાળા માટે તે લાભદાયી છે. એસિડીટીને પણ તે દૂર કરે છે.

દાડમનાં પાંદડા (પત્ર) - એક ઔષધરૂપે :-

હંમેશાં મીઠા દાડમનાં પાંદડા જ પસંદ કરવા. તાજા પાંદડાને વાટીને હાથ-પગ અને તાળવા પર લેપરૂપે લગાડવાથી ગરમીની તકલીફ મટે છે. તેની પેસ્ટમાં સરસીયું તેલ ભેળવીને માલિશ કરવાથી ખંજવાળ મટે છે. નસકોરી પર પાંદડાનો લેપ મસ્તક પર કરવો. મોઢાના ચાંદા, ઘા વગેરે મટાડવા તાજા પાંદડાના રસ વડે કોગળા કરવા. રક્તવાળા હરસમાં પાંદડાનો રસ સવાર-સાંજ પીવાથી લાભ મળે છે. પાંદડાને વાટી તેને હરસ-મસા પર લગાડવાથી લાભ મળે છે. રક્તાતિસાર, લોહીની ઊલટી, રક્તપ્રમેહ, સોજો, સોમરોગ, મુચ્છા, લૂ લાગવી વગેરે માટે પાનનો રસ દિવસમાં બે વાર પીવડાવવો. તાજા પાનનો ઉકાળો ઠંડો પાડી ગાળીને ગરમ દૂધ સાથે પીવાથી શારીરિક કે માનસિક થાકમાં લાભ મળે છે. આ ઉકાળામાં ઘી અને ખાંડ ભેળવીને લેવાથી અનિદ્રામાં લાભ મળે છે. આ ઉકાળાને પીવડાવવાથી કે તેના કોગળા કરાવવાથી અપસ્માર, વાઈ, આંચકી, તાણ વગેરેમાં લાભ મળે છે. મોઢું આવી જતાં તેની સાથે સિંધાલુણ ભેળવીને આપવું. ટાઈફોઈડમાં પણ આ પાનનો ઉકાળો આપી શકાય. આ જખ્મને રૂઝવવા માટે આ ઉકાળા વડે તેને ધોવાથી લાભ મળે છે.

અગ્નિથી દાઝેલા લોકો જો તાજાં પાંદડાને વાટીને દિવસમાં ૨-૩ વાર લેપરૂપે લગાવે તો લાભ મળે છે. આ સિવાય મધમાખી, વિંછી કે અન્ય ઝેરી જીવજંતુના ડંખ પર આ પાંદડા (તાજા) સાથે કાળા મરી ભેળવીને પાણી સાથે વાટીને ગાળીને બંને વખત પીવડાવવાથી લાભ મળે છે. તૃષ્ણા રોગ માટે પાંદડાં ને ચૂસતા રહેવાથી લાભ મળે છે.

છાંચે સૂકવેલા પાંદડાનું ચૂર્ણ બનાવી તેને થોડા પ્રમાણમાં પાણી સાથે લેવાથી દાદર, રક્તવિકાર, કોઢ, પ્રમેહ, પિત્તજવર, વાત, કફ જવર વગેરે પર લાભદાયી છે. ઘા રૂઝવવા માટે પણ તે લાભદાયી છે.

આ ચૂર્ણ વડે દાંતનું મંજન કરવાથી દાંતનાં વિવિધ રોગો જેવા કે દાંત હલવા, પેઢાનો રક્તસ્રાવ, પડ આવવું કે સોજો આવવો વગેરે દરેકમાં લાભ મળે છે.

આમ દાડમ વૃક્ષના તાજા પાન, સૂકા પાન કે તાજાં પાનનો રસ કે તેમાંથી બનાવેલો ઉકાળો તથા ચૂર્ણ વગેરે તમામ ઔષધ સ્વરૂપે વપરાય છે.

દાડમના ફૂલ - એક ઔષધિ રૂપે :-

દાડમના ફૂલ નસકોરી-નાકમાંથી થતા રક્તસ્રાવ માટે લાભદાયી છે. આ રસનું નસ્ય લેવાથી તે મટે છે. તેની સાથે ધમાસો અને હરડે સમભાગે વાટીને નખમાં ભરવાથી તેની અંદરનો સડો એ પીડામાં લાભ થાય છે. જે ફૂલની કળી હવાની અસરથી નુકસાન થઈને નીચે ખરી પડે છે. તે સંકોચક છે. તેને બાળીને ઘાવ પર ભભરાવવાથી તે તરત જ સુકાઈ જાય છે. તેની તાજા કળી સાથે નાની એલચી, ખસખસ અને રૂમી મસ્તગીને વાટીને શરબતવાળું ચાટણ બનાવવાથી અને બાળકને જૂનો અતિસાર કે ઝાડા હોય તેમાં વપરાય છે. તેની



સાથે ગુલાબના સુકા ફૂલોને વાટીને મંજન કરવાથી પેદાનું પાણી બંધ થઈ જાય છે અથવા તો ફૂલના પાઉડર કરીને મંજન કરવાથી પેદામાંથી લોહી નીકળતું પણ બંધ થઈ જાય છે. તેનો રસ નાકમાં ટપકાવવાથી-સુંઘવાથી પણ નસકોરી મટે છે. તેની કળીનું ચૂર્ણ ઉધરસ માટે ઉપયોગી છે.

દાડમની અપરિપક્વ કળીને તાજી લઈ તેને વાટીને કે અન્ય રીતે નિયોવીને સૂકી કરો. તેને પાઉડર તરીકે બનાવીને રાખો. જરૂર પડતા તેનો ઉપયોગ કરી શકાય છે.

દાડમના ફૂલ કરતા તેની કળી વધુ અસરકારક સાબિત થયેલ છે.

દાડમના ફૂલ લાલ અને સફેદ બંને પ્રકારનાં થાય છે. બંનેના ગુણ અલગ અલગ જોવા મળે છે.

દાડમ ફળની છાલ - એક ઔષધિરૂપે

દાડમની છાલને ખાંડ સાથે ખાવાથી મોઢાનો રક્તસ્ત્રાવ મટે છે. તેના રસને મીઠું અને મધ સાથે ભેળવીને મોઢામાં ધારણ કરવાથી અરુચિ મટે છે. કાચા દાડમની છાલની સૂકવણી કરીને દવાની ગોળીઓ બનાવાય છે.

મીઠા ફળની છાલ ઠંડી, થોડી ખટાશવાળી અને રૂક્ષ છે. તે હરસ માટે ઘણી જ લાભદાયી છે. ગરમીનો સોજો અને પેદાની તંદુરસ્તી માટે તે ઉપયોગી છે.

છાલને વાટીને ગુદાભ્રંશ પર લગાડવાથી લાભ મળે છે. મૂઢગર્ભને બહાર કાઢવા માટે તેનો ધુમાડો દેવો, સોજા ઉપર પાણી સાથે છાલને વાટીને લેપ કરવાથી લાભ મળે છે. તેના બારીક ચૂર્ણને નસ્ય વડે વાપરવાથી નસકોરીમાં લાભ મળે છે. જૂનો અતિસાર, ઝાડા કે આમાતિસારમાં પણ તે લાભદાયી છે.

ઠંડી પ્રકૃતિ ધરાવનારને માટે તે નુકસાનકારક છે. છાલમાંથી શરબત પણ બનાવાય છે. અને તેનાં વિવિધ પ્રકારના તેલ પણ બનાવાય છે. આ સિવાય તેનું મુખમંજન-દંતમંજન પણ બનાવાય છે. છાલમાં તેના ગર્ભ કરતા પણ વધુ પડતો પ્રભાવ જોવા મળે છે. છાલ, વાઢિયા, ઘા વગેરે પર તેનું ચૂર્ણ લગાવાય છે. માથાના દુખાવા માટે પણ છાલનો લેપ કરી શકાય છે. ગળાના દુખાવામાં પણ છાલનો લેપ કરી શકાય છે. મૂળની છાલ કૃમિધ્ન છે. વૃક્ષ છાલનો ઉકાળો કરી લોહીના હરસમાં પીવડાવાય છે. તેની સાથે તલ તેલ ભેળવી પેટના કૃમિનો નાશ કરવા માટે પીવાય છે. દાડિમાદિ તેલ પણ બનાવાય છે. રક્તાતિસારમાં તેનો ઉકાળો કડા છાલ સાથે કરી તેને ગાળીને મધ સાથે પીવડાવવામાં આવે છે.

નમો જિણાણં

परम आनंद परिवार आप के साथ है ।

जीवन की किसी भी समस्या के उपाय के लिए
24 घंटे की HELPLINE नंबर पर MISS CALL करे :

परम सुख HELPLINE 24 x 7

09920202756

यह सेवा २४ घंटे और सातों दिन उपलब्ध है ।

नमो जिणाणं ।

परम सुख जीवन विकास केन्द्र



तीन दशा है :- गृहस्थ, साधक और साधु ।

गृहस्थ याने क्या ?

घरको बनाकर एकही स्थान में स्थिर रहता हो, उसी स्थान पर अपना पूरा जीवन गुजारे उसे कहते हैं गृहस्थ । और उस स्थान में रहने के लिए रोटी, कपडा और धन की आवश्यकता होती है । और इसी आवश्यकता के लिए जो ऊँच-नीच, सच्चा-झूठा करके जीवन गुजारे वही है गृहस्थ ।

इस सृष्टि के अंदर नैसर्गिक गृहस्थपन स्त्री और पुरुष के जोडाण से शुरू होता है । गृहस्थी को चलाने के लिए अकेला काफी नहीं होता इसलिए दूसरे साथी की जरूरत होती है । दूसरे के सहारे की जरूरत पड़ती है । जो उसे नहीं आता और उसके शक्ति से बाहर है । तो जिसकी शक्ति में ये है उसके साथ रहना उसके साथ जीवन व्यतित करना । इस लिए स्त्री और पुरुष एक दूसरे के नैसर्गिक रूप से ही पूरक है । मानव समाज के दोनों मुख्य सूत्रधार है । जो स्त्रीके पास है वो पुरुष के पास नहीं है और जो पुरुष के पास है वो स्त्रीके पास नहीं है, यदि दोनो साथ दे एक-दूसरे का आधार बने तो गृहस्थी सुखरूपसे चल सकती है । यह मनुष्यने सोचा है इसलिए नहीं है पर यह तो कुदरत की रचना है । जबसे सृष्टि शुरू हुई है तभी से ही स्त्री और पुरुष है । जहाँ शरीर है वहाँ यह दोनों है । सृष्टि के सब जीवों में स्त्री पुरुष का अस्तित्व है । यह नैसर्गिक गुणात्मक भेद है । हमेशा पुरुष स्त्री के पास से पौरोषिक गुणों की अपेक्षा रखता है । और स्त्री पुरुष के पास से उसके विचारों के अनुसार व्यवहारों की ईच्छा रखती है । यह कभी भी संभव होने वाला ही नहीं है क्योंकि प्रकृतिमें विविधता है उसका स्वीकार करना, उसीका आनंद लेना । क्योंकि इसी विविधता में ही जीवन का रहस्य है । इस विविधता को हमने अपनी अपेक्षाओंसे तोड़-फोड़ दिया है । हमारे घर में मैं जिस चीज में हुशियार हूँ, ऐसी ही पूर्णता, हुशीयारी दूसरे में ढूँढता हूँ जो सही में हो रहा है । यह हमारा सब का General Common Problem है । हम यही सोचते हैं कि जो मुझमें है वही मेरे साथीमें, पार्टनर में भी हो । यदि ऐसा नहीं है तो ऐसा ही करना पड़ेगा । यहींसे धमाल शुरू होती है । यह हमारी मूलभूत प्रकृति के विरुद्ध की विचारशक्ति है । प्रकृति में ऐसा है ही नहीं । जगत के स्वरूप में सबसे बड़ा सम्यक् दर्शन का यह पहला पॉईंट है ।

हम इस संसार के एक अणु मात्र ही है । We are micropart of this world. हम कुछ भी नहीं है । हमारी यही भूल है कि हम अपने आपको कुछ समझ लेते हैं । इन सब बातों के कारण ही हम फिर परेशान होने लगते हैं । किसी की भी बात इस सृष्टि में चलती नहीं है । दूसरे जीव अपने अपने स्वरूप को स्वीकारके उसके अनुसार अपना कर्म करते हैं । अपना धर्म निभाते हैं । इस संसारमें सिर्फ मानव ही अधर्मों है । जगतकी system totally scientific और mathematical है । इसमें सभी का अपना-अपना अनुदान होता है । Role होता है ।

संगीत और संगत की हमारे जीवन में कमी है । हम सभी कुदरती स्वर लेकर आये हैं । जो पल-पल बदलता है । यह बदलाव उदय कर्म के

आधार पर है । यह उदय कर्म का बदलाव ही उसका स्वर है । इस स्वर में कोई छुटकारा नहीं है । यह पहले का जमा खाता है । पेकेज है । परंतु स्वर को सूरमें बदलना हमारे हाथ में ही है । अभी का स्वर हमने पहले ही बना लिया है । Manufacturing कर रखा है । परंतु आने वाले कलका स्वर कैसा होगा इसकी सता हमारे हाथ में ही है ।

हम जिस गृहस्थी में रहते हैं वहाँ सभी अपने अपने स्वर (संस्कार) लेकर आये हैं । और वे सबके अलग-अलग बजते हैं । लक्ष में यह रखना है कि स्वर सूरमें बदल जाए । उदय कर्म यह तो नैसर्गिक है और आएका भी परंतु उसमें ताल मिलाना यही सिर्फ मनुष्य के हाथमें है । हमारे आसपास लोग जमा होते हैं, साथ होते हैं उसमें सृष्टि के संगीत का और हमारे जीवन का यदि तालमेल हो तो ही संगत होती है । नहीं तो हम निसंगत बन जाते हैं ।

संगीत का मूल सूर है और स्वर से सूर बन रहे हैं । परंतु ये सब तालबद्ध और लयबद्ध नहीं है इसलिए परेशानियाँ हैं । ताल याने समय और समय याने हमारे जीवन का दूसरों के साथ ताल मिलाकर चलना । इन्सान के पास 20% ही स्वतंत्रता है उसके साथ ताल मिला सकता है । दूसरों के ताल को (स्वभाव) को समझें और उसमें 20% बदलाव कर दें खुद को तो कई काम आसान हो जाते हैं ।

संगीत का पूर्ण आधार ही ताल पर है उसी तरह हमारे जीवन का मध्य बिंदू भी ताल ही है । स्वर यदि न बदल सकते हो तो दूसरों के सूर के साथ कदम मिला लो । स्वीकारभाव रखने का है । यही पद्धति को संगत करना है । मूलभूत रूपसे यदि हम आसपास देखेंगे तो दिखेंगे स्त्री-पुरुष । (नारी प्रकृति है) । स्त्री का स्वर है - (१) संभाल रखना, कालजी लेना (२) सहनशक्ति (३) जननी (४) स्वीकार भाव (५) विशेष आंतरिक बल (६) कोमलता और सौंदर्य रूप-रंगसे (७) लज्जा (८) चंचलता (९) माया, कपट (१०) संग्रहवृत्ति (११) तर्क बुद्धि (१२) कम सोच, उतावलापन ।

पुरुष का स्वर :- (१) शौर्य (२) गांभीर्य (३) सृष्टि के अनुसार तर्क (४) दीर्घ द्रष्टि, लंबी सोच (५) विशालता (६) अव्यक्त किसी भी बातको सामने नहीं रखता (७) कठोरता ।

स्त्री और पुरुष में बदलाव होने पर भी बदलाव न भी हो, न रहे यह संभव है । परंतु सिर्फ इन गुणों को जानकर इस पर लक्ष रखें । Focus रखें । यदि हम किसीभी वस्तु का स्वभाव जान लेते हैं तो तुरंत ही हमारा क्रोध, तकलीफ शांत हो जाती है । हमारे जीवन के मूल कारण का Problem है भ्रम, माया जैसा है वैसा न दिखना या देखना । यदि हम अभिप्रायों से मुक्त रहेंगे तो वास्तविकता में आ जाएँगे, परिणाम मिलेगा । स्त्री-पुरुषका बल है, पुरुष स्त्रीका बल है यही बात समझ ले तो जीवन आनंदसे भर जाएँगा ।

नमो जिणाणं ।



ત્રણ દશા છે.

ગૃહસ્થ, સાધક અને સાધુ.

ગૃહસ્થ એટલે શું ?

ઘરને ગ્રહણ કરી એક સ્થાનમાં સ્થિર રહેતા હોય અને એ સ્થાનમાં જીવન ગાળે એનું નામ ગૃહસ્થ. આવા એક સ્થાનમાં રહેવા માટે રોટી, કપડાં, ધનની આવશ્યકતા રહે છે. આવી આવશ્યકતાને પૂરી કરવા જે ઉંચું-નીચું, સાચું-ખોટું કરી જીવન કાઢે એ ગૃહસ્થ.

આ સૃષ્ટિની અંદર નૈસર્ગિક ગૃહસ્થપણું સ્ત્રી અને પુરુષના જોડાણથી ઊભું થાય છે. કોઈ એકલો, ગૃહસ્થી ચલાવા બધું કામ કરી શકે નહિ માટે એને એક સાથીદારની જરૂરિયાત ઉભી થાય, બીજાના સહારાની જરૂર પડે છે. જે એને નથી આવડતું, એની શક્તિની બહાર છે, તો જેની શક્તિમાં આ છે એની સાથે રહેવું, એની સાથે જીવન વ્યતિત કરવું એટલે નૈસર્ગિક રીતે સ્ત્રી અને પુરુષ એક બીજાના પૂરક છે. મનુષ્ય સમાજનાં બે મૂળભૂત element સ્ત્રી અને પુરુષ છે.

જે પુરુષ પાસે છે એ સ્ત્રી પાસે નથી, જે સ્ત્રી પાસે છે એ પુરુષ પાસે નથી. જો બન્ને ભેગા થાય તો ગૃહસ્થીમાં આરામપૂર્વક જીવી શકાય. આ મનુષ્યે વિચાર્યું છે એટલે ગૃહસ્થીપણું છે એવું નથી. It is a natural phenomena. જ્યારથી સૃષ્ટિ શરૂ થઈ છે ત્યારથી સ્ત્રી અને પુરુષ છે. જ્યાં પણ શરીર છે ત્યાં સ્ત્રી અને પુરુષપણું છે. સૃષ્ટિમાં બધા જીવોમાં સ્ત્રી અને પુરુષનું અસ્તિત્વ છે. આ નૈસર્ગિક ગુણાત્મક ભેદ છે.

પુરુષ હંમેશા સ્ત્રી પાસેથી પોરૂષિક ગુણની અપેક્ષા કરે છે અને સ્ત્રી પુરુષ પાસેથી એના વિચારો મુજબનો વ્યવહાર ઈચ્છે છે. આ ક્યારેય સંભવ થવાનું નથી. પ્રકૃતિની અંદર વિવિધતા છે એનો સ્વીકાર કરવો, એનો આનંદ લેવો કારણકે આ વિવિધતા જ જીવનનું રહસ્ય છે. આજ વિવિધતાને આપણે આપણી અપેક્ષાઓથી તોડીફોડી નાખી છે.

આપણા ઘરમાં 'હું' જે ચીજમાં પાવરધો છું એવીજ નિષ્ણાંતતા બીજામાં ઈચ્છુ છું જે naturally થઈ રહ્યું છે. આ આપણો common problem છે. આપણે વિચારીએ છીએ કે જે હું છું, જે મારામાં છે એ મારા partner માં હોવું જોઈએ. જો એવું નથી તો એવું લાવવુંજ પડશે. અહિંથી ધમાલ શરૂ થાય છે. આ આપણી મૂળભૂત પ્રકૃતિ વિરૂધ્ધની વિચારસરણી છે. પ્રકૃતિમાં આવું છે જ નહિ. જગતનાં સ્વરૂપની અંદર સૌથી મોટા સમ્યક્ દર્શન માટેનો આ પહેલો point છે.

We are micropart of this world. We are nothing & nobody. આપણી ભૂલ છે આપણે પોતાને કંઈક સમજી લઈએ છીએ. આજ અભિપ્રાયોથી ઘેરાયેલો મનુષ્ય અંતે હેરાનગતિમાં ધકેલાઈ જાય છે. કોઈનો પણ અભિપ્રાય આ સૃષ્ટિમાં ચાલતો નથી.

અન્ય જીવ પોતપોતાના સ્વરૂપને સ્વીકારી એ પ્રમાણે પોતાનો ધર્મ નિભાવે છે. આ જગતમાં ફક્ત મનુષ્ય જ અધર્મી છે. જગતની system totally scientific & mathematical છે, એમાં બધાનો પોતાનો role છે.

સંગીત અને સંગત આપણા જીવનમાં missing છે. આપણે બધા natural સ્વર લઈને આવ્યા છીએ જે ક્ષણે ક્ષણે બદલાય છે. આ બદલાવ ઉદય કર્મને આધારે હોય. આ ઉદય કર્મનો change એજ એનો સ્વર છે. આ સ્વરમાં option નથી, એ પહેલાનું package છે. પણ સ્વરને સૂર બનાવવો એ આપણાં હાથમાં છે. અત્યારનો સ્વર આપણે પહેલા manufacturing કરી ચૂક્યા છીએ પરંતુ આવતી કાલનો સ્વર કેવો હશે એ આપણી સત્તામાં, આપણાં હાથમાં છે.

આપણે જે ગૃહસ્થીમાં રહીએ છીએ ત્યાં બધાં પોતપોતાના સ્વર લઈને આવ્યા છે અને એ બધા સ્વર અલગ અલગ વાગે છે. લક્ષમાં એ રાખવાનું છે કે સ્વર સૂરમાં convert થાય. ઉદય કર્મ એ નૈસર્ગિક છે અને આવે પણ એનો તાલ મેળવવો એ મનુષ્યના હાથમાં છે. આપણી આસપાસ લોકો ભેગા થાય છે પણ આ સૃષ્ટિના સંગીતનું અને આપણાં જીવનનાં સંગીતનું તાલમેલ થાય તો સંગત થાય, નહિ તો નિસંગત થઈ જાય.

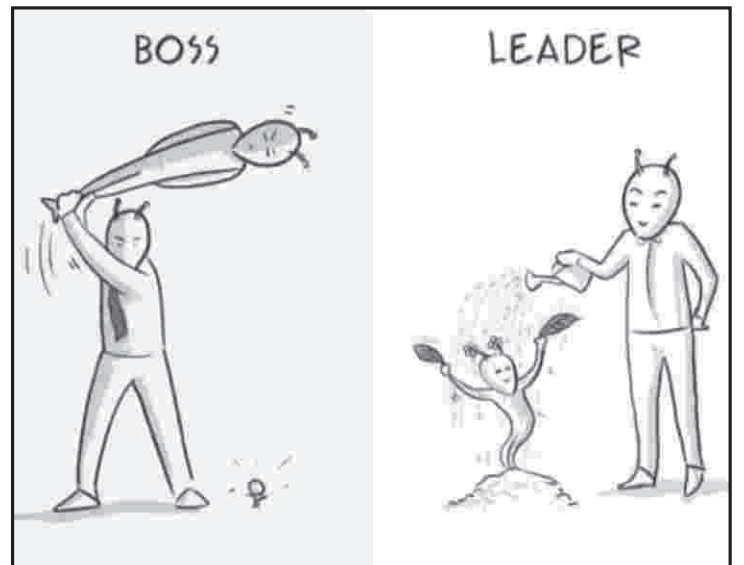
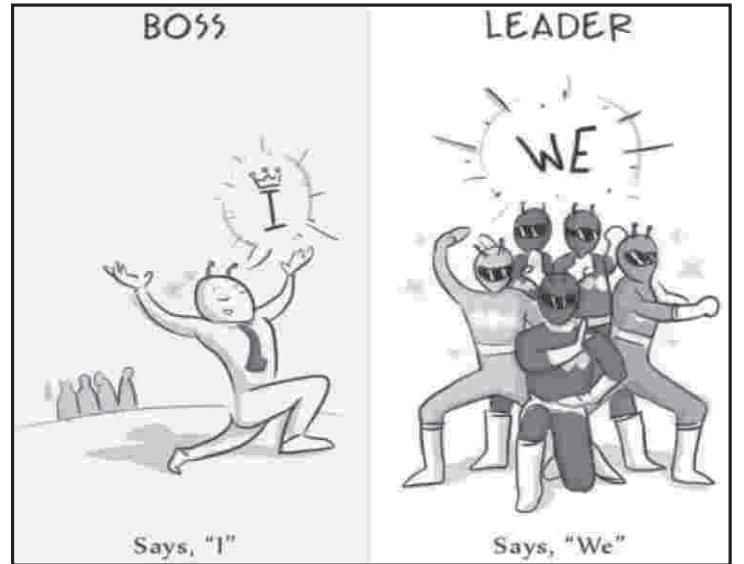
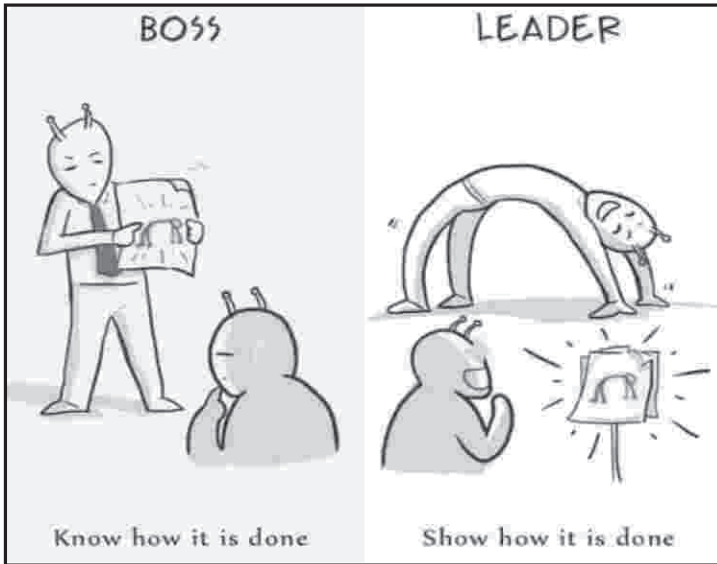
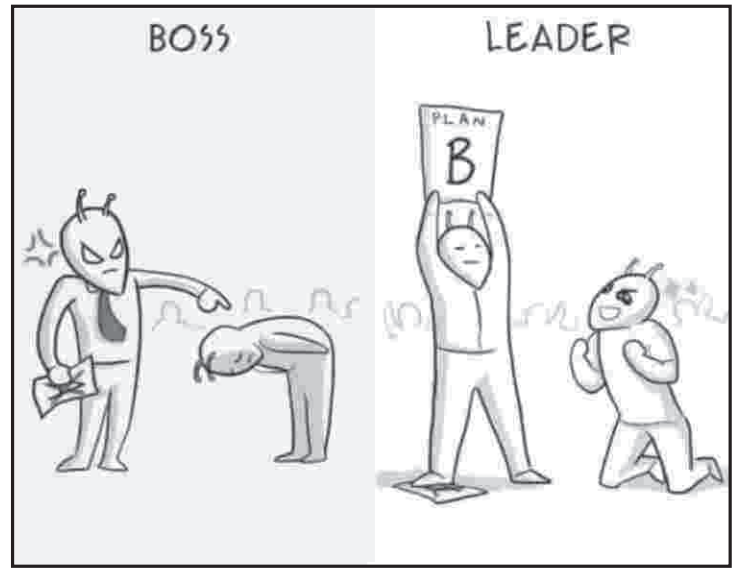
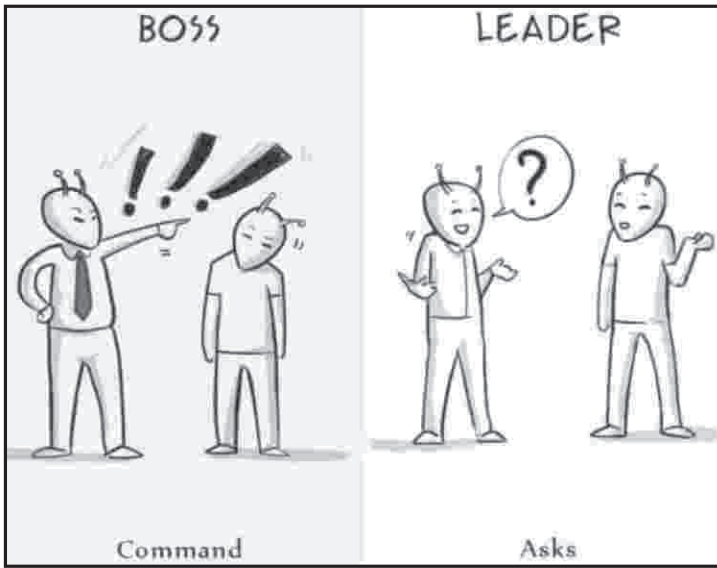
સંગીતનું મૂળ સ્વર છે, આ સ્વરથી સૂર બની રહ્યા છે પણ એ બધા તાલબદ્ધ અને લયબદ્ધ નથી એટલે problem છે. તાલ એટલે timing અને આ timing એટલે આપણા તાલનું બીજાનાં તાલની સાથે synchronise થવું. મનુષ્ય પાસે જે 20% સ્વતંત્રતા છે એની અંદર સ્વરને modulate કરી શકે છે. બીજાના તાલને સમજી 20% change કરે તો ઘણું કામ સહેલું થાય. સંગીતનો સંપૂર્ણ આધાર તાલ ઉપર છે, એજ રીતે આપણા જીવનનું centre point પણ તાલ છે. સ્વર બદલી નહિ શકાય એટલે સૂર સાથે synchronise કરવાનું છે. સ્વીકારભાવ કરવાનો છે. આ સંગત કરવાની technique છે.

મૂળભૂત રીતે આપણી આજુબાજુ જોઈએ તો દેખાશે સ્ત્રી અને પુરુષ. સ્ત્રીનો સ્વર એટલે (૧) કાળજી ભાવના (૨) Shock Absorb કરવું (૩) જનની (૪) સ્વીકારભાવ (૫) વિશેષ આંતરિક બળ (૬) કોમળતા અને રૂપ સૌંદર્ય (૭) લજ્જા (૮) ચંચળતા (૯) માયા કપટ (૧૦) સંગ્રહવૃત્તિ (૧૧) Illogical (૧૨) ટુંકી દ્રષ્ટિ.

પુરુષનો સ્વર એટલે (૧) શૌર્ય (૨) ગાંભીર્ય (૩) Logical by nature (૪) દીર્ઘ દ્રષ્ટિ (૫) વિશાળતા (૬) અવ્યક્ત (૭) કઠોરતા.

સ્ત્રી અને પુરુષમાં difference હોવા છતાં difference ન હોય, ન રહે એ સંભવ છે. ફક્ત આ ગુણોને સમજી એના ઉપર focus મૂકવો. વસ્તુનો સ્વભાવ જાણીએ તો તરત આપણો રોષ, તકલીફ શાંત થાય. આપણાં જીવનમાં problem નું મૂળ કારણ છે ભ્રમ, માયા. જેમ છે એમ ન દેખાવું. અભિપ્રાયોથી મુક્ત થઈએ તો જ વાસ્તવિકતામાં પરિણમીએ. વાસ્તવિકતાનો સંગ કરીએ એટલે બધો ભ્રમ ખતમ થાય. જે સ્ત્રી પાસે છે એ પુરુષનું બળ છે અને જે પુરુષ પાસે છે એ સ્ત્રીનું બળ છે. એમ સ્ત્રી અને પુરુષ એકબીજાથી તદન જુદા હોવા છતાં એકબીજાને પૂર્ણ કરે છે. જો આ રીતે આપણે દર્શન (vision) કરતાં day to day life જીવશું તો જીવન આનંદથી ભરાઈ જશે.

નમો જિણાણાં.



શુભેચ્છક :

બરફ અને આયુષ્ય પ્રત્યેક ક્ષણે ઘટતા જાય છે.



नमो जिणाणं परम सुख जीवन विकास केन्द्र, मुंबई

Annual Activities / साल के दौरान की प्रवृत्तियाँ

SCIENCE OF DIVINE LIVING WORKSHOPS

- 1) Public Awareness Divine Living Foundation Workshops. (जाहेर शिबिरें)
- 2) नमस्कार महामंत्र योग – Practical Workshops :
Part I – Experiential Navkar महामंत्र योग – 9 Sessions
Part II – 9 Step Life Management with Navkar मंत्रयोग – 12 Sessions
- 3) Youth Forum With Parents Practical Workshop.
(Youth Age – 19 to 32 Years)
- 4) Second Inning Golden Period Practical Workshop.
(Age nearing to 50 years and above).
- 5) Child-Parent Practical Workshop. (Age Gr. 6–13 / 14–19 Yrs.)
Solving issues of Child-Parents relationship.
- 6) Workshops for Married Couples. (Any Age group)
- 7) सिद्धाचल तीर्थ पर साधु-साध्वीजी भगवंतो के लिए नवकार साधना शिबीर , वैयावच्च तथा MEDICAL CAMP
- 8) WORKSHOP FOR PARMSUKH समर्पित सेवक

- 9) महावीर जन्म कल्याणक निमित्त से नीचे बताई गई ६ प्रकार की सेवा प्रवृत्तियाँ की जाती है ।
(१) होस्पिटल सेक्टर - GOVERNMENT HOSPITAL को उपयुक्त साधन सामग्री उपलब्ध करवाई जाती है ।
गरीब मरीजों और CRITICAL PATIENTS को HIGH VALUE MEDICAL सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है ।
(२) EDUCATION SECTOR - PRIMARY, SECONDARY और उच्च शिक्षण के लिए जरूरतमंद विद्यार्थीओं को
SCHOOL, COLLEGE , TUTION FEES उपलब्ध करवाई जाती है ।
(३) आश्रम सेक्टर - GOVERNMENT आश्रमो तथा अन्य आश्रमो मे जरुरी साधन सामग्री तथा खाद्यान ,GROCERY
ITEMS उपलब्ध करवाई जाती है ।
(४) पू. साधु-साध्वी भगवंत वैयावच्च - जिस प्रकार जरूरत है, उस प्रकार सेवा की जाती है ।
(५) SCIENCE OF DIVINE LIVING - समाज उपयुक्त सामाजिक , धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यक्रमो का आयोजन
तथा प्रचार प्रसारण की सेवा की जाती है । (६) पशु पक्षी जीवदया

- 10) साल में २ बार निर्दोष आनंद उत्सव की PARTY
- 11) निसर्ग आनंद पिकनीक का आयोजन
- 12) आध्यात्मिक भूमिओं के आध्यात्मिक प्रवास तथा जिन मार्ग TREKKING .
- 13) नमो जिणाणं THE SCIENCE OF DIVINE LIVING MAGAZINE (त्रि मासिक)

14) उत्सव सत्संग (TIME : 6.30pm TO 8.30pm)

हर महिने Celebration Satsang (उत्सव सत्संग) का आयोजन । सत्संगीओ के Birthday और Anniversary मनायी जाती है । जाप के बाद Personal सत्संग होता है । यह उत्सव सत्संग पार्लो/गोरेगांव और मुलुंड/घाटकोपर सेन्टर मे महिने के दूसरे और तीसरे शनिवार को होता है ।

15) Open House Satsang (Time : 8.30pm to 10.30pm)

मुलुंड/घाटकोपर/सायन सेन्टर - श्री भगवद्गीता और मेरा जीवन (EVERY 2nd Saturday)
पार्लो/सांताक्रुझ/ गोरेगांव सेन्टर - श्री उत्तराध्ययन सूत्र - भ.महावीर की अंतिम वाणी (EVERY 3rd Saturday)

(P.T.O.)



नमो जिणाणं

परम सुख जीवन विकास केन्द्र, मुंबई

Annual Activites / साल के दौरान की प्रवृत्तियाँ

PAGE - 2

- (१६) साल के दौरान आनेवाले पर्वों (त्योहारों) का SCIENTIFIC CELEBRATION (महोत्सव)
- (१) नये साल का स्वागत (NEW YEAR PARTY) ।
 - (२) उत्तरायण (मकर संक्रांति) - अशुभ से शुभ की संक्रांति ।
 - (३) २६ जनवरी - गणतंत्र दिन - सृष्टि के तंत्र को समझने का दिन ।
 - (४) VALENTINE DAY - शाश्वत प्रेमयोग का उत्सव ।
 - (५) महाशिवरात्री -(जीव से शिव (सिद्ध) पद की यात्रा) ।
 - (६) होली - सम्यक् ज्ञान अग्नि महोत्सव - आंतरिक दोषों को दहन करने का पर्व ।
 - (७) गुडी पाडवा - जैनो के नये साल की शुरुवात
 - (८) श्री सिद्धचक्र महायंत्र पूजन अनुष्ठान के साथ श्री चैत्री नवरात्री आराधना श्री नवपद ज्ञान साधना (१५ दिन) ।
 - (९) महावीर जन्म कल्याणक - अस्पताल और आश्रमों में जाकर वात्सल्य भक्ति ।
 - (१०) सीमंधर स्वामी जन्म कल्याणक - सीमंधर स्वामी के पास पहुंचने के लिए AGREEMENT करने का दिन ।
 - (११) अक्षय तृतीया - महासत्संग
 - (अ) DETERMINATION - शिवम अस्तु सर्व जगतः यह भाव को अखंड और अक्षय बनाने का निर्णय ।
 - (ब) DEDICATION - जात पर शंका करके जो भय उत्पन्न होता है, वह शंका के दुष्ण मेरे अंदर घुसे नहीं,ऐसा अक्षय GOAL बनाना और प्रभु की हाजरी हर निर्णय के अंदर रहे ।
 - (क) DEVOTION - प्रभु के साथ अक्षय संबंध बांधकर ,उस अक्षय का विस्तार करके मैंने निश्चित उसीके लिए जनम लिया है ऐसा निर्णय और मैं परम पद को पाकर ही रहूंगा ।
 - (१२) एक दिन का श्री सिद्धचक्र महायंत्र पूजन अनुष्ठान ।
 - (१३) गुरुपूर्णिमा - सद्गुरु के प्रति अहोभाव की अभिव्यक्ति ।
 - (१४) जन्माष्टमी - NEGATIVE का अंत और POSITIVE का जन्म ।
 - (१५) स्वतंत्रता दिन - १५ अगस्त - स्व को स्वतंत्र बनाने का प्रारंभ दिन ।
 - (१६) DIVINE SCIENTIFIC PRACTICAL सम्यक् पर्युषण अनुभवधारा (८/९ दिन)
 - (१७) श्री सिद्धचक्र महायंत्र पूजन के साथ श्री अश्विन मास नवरात्री आराधना श्री नवपद ज्ञान साधना ।
 - (१८) दिवाली के दौरान - NON - STOP ४८ घंटे (१६ प्रहर) भ. महावीर की अंतिम वाणी की देशना तथा जिन मार्ग TREKKING - जिन मार्ग के उपर पदयात्रा करके चित्त को भगवान के मार्ग के मुताबिक तैयार करने का अभ्यास ।
 - (१९) उपद्यान तप की साधना तथा दिव्य जीवन माला महोत्सव (९/१८ दिन) उपासक और साधक दशा में स्थिर होने का योग - उपद्यान तप ।
 - (२०) परम आनंद परिवार NATIONAL / INTERNATIONAL CONVENTION जगत को अरिहंत के मार्ग पर ATTRACT करने का अरिहंत मेला ।
 - (२१) हरेक बड़े शहर के बाहर परम आनंद रूप परम आनंद / परम सुख DIVINE COMMUNITY CENTRE की स्थापना करने की योजना ।

FOR ANY INQUIRY CT : 919322235233/919833133266

Watch Arihant TV Channel Daily 8.30am & 11.30pm

आपके जीवन की किसी भी समस्या के उपाय के लिए हमें इस नंबर पर MISS CALL करें : 09920202756 यह सेवा २४ घंटे और सातों दिन उपलब्ध है ।